SMARNIKA

1979 — C. K. U.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112735

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112735

स्मारिका

प्रथम दीक्षान्त समारोह—१९७९

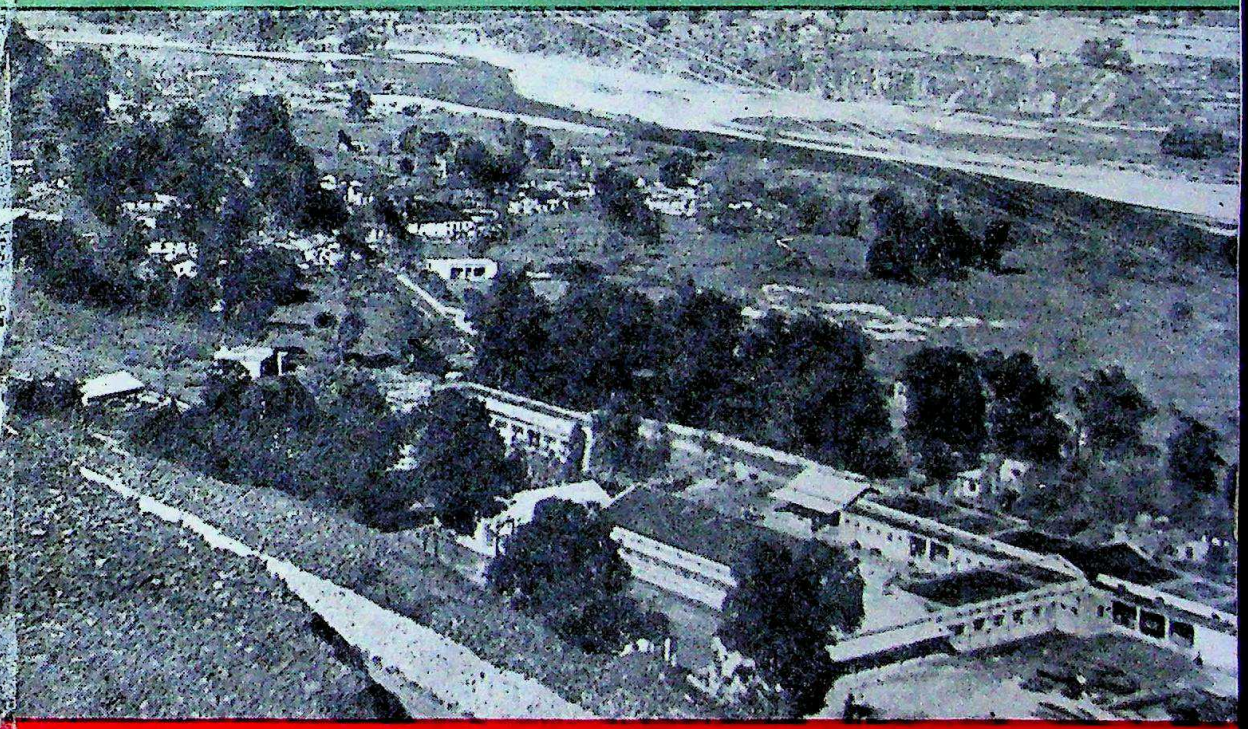

गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)

सम्पादक

डा० रमेश चन्द्र नैथानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112735

जीवा ज्योतिरसीमहि

गढ़वाल विश्वविद्यालय

स्मारिका

प्रथम दीक्षान्त समारोह

१९७९

सम्पादक

डा० रमेश चन्द्र नैथानी

प्रकाशक

गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर

(गढ़वाल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

1. राज्यपाल का संदेश (i)
2. श्री हेमबतीनन्दन बहुगुणा का संदेश (ii)
3. मुख्य मंत्री उत्तर प्रदेश का संदेश (iv)
4. उच्चशिक्षा मंत्री उ० प्र० का संदेश (v)
5. पर्वतीय विकास मंत्री उ० प्र० का संदेश (vi)
6. कुलपति गढ़वाल विश्वविद्यालय के विचार (vii)
7. सम्पादकीय 1-3
8. गढ़वाल का भौगोलिक सर्वेक्षण 4-9
9. गढ़वाल का इतिहास 10-14
10. अंग्रेजी शासन काल और गढ़वाल मे स्वतंत्रता आन्दोलन 15-19
11. गढ़वाली वीरों की महान शौर्य परम्परा के तीन भिन्न रूप 20-22
12. गढ़वाली चित्रकला शैली 23-25
13. हिन्दी काव्य साहित्य को गढवाल की देन-अमर कवि एवं गीतकार चन्द्र कुंवर बर्त्वाल 27-37
14. श्रीनगर की ऐतिहासिक पृष्ट भूमि 39-41
15. गढ़वाल में शिक्षा का विकास 45-47
16. गढ़वाल विश्वविद्यालय 49-56
17. संघटक महाविद्यालय 57-64
18. संबद्ध महाविद्यालय 65-74
19. परिशिष्ट (1-14 तालिकाएँ) 76-94

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य पाल

उत्तर प्रदेश

राज भवन

लखनऊ

मई 1, 1979

सन्देश

हर्ष का विषय है कि गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, आगामी 11 मई को अपना प्रथम दीक्षान्त समारोह सम्पन्न करने जा रहा है तथा इस सुअवसर पर अपने संघटक एवं संबद्ध महाविद्यालयों से सन्दर्भित एक स्मारिका भी प्रकाशित करने का निश्चय किया है।

वास्तव में ज्ञान की दिशायें सापेक्षिता के नियम से प्रभावित हैं और फलस्वरूप, शिक्षा की यात्रा अनन्त रही है और भविष्य में भी रहेगी। मेरी कामना है कि गढ़वाल विश्वविद्यालय के समस्त संघटक एवं संबद्ध महाविद्यालयों के शिक्षक तथा विद्यार्थी-वृन्द ज्ञान की नवीन मंजिलों का अन्वेषण करते हुये, मातृभूमि का गौरव बढ़ाने में समर्थ हों। मैं उन सबके उज्ज्वल भविष्य के लिये अपनी हार्दिक शुभकामनायें भेजता हूं।

—ग० दे० तपासे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेट्रोलियम, रसायन और उर्वरक मंत्री
भारत

नई दिल्ली-110001 मई 1, 1979

संदेश

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर का पहला दीक्षान्त समारोह 11 मई 1979 को होना निश्चित हुआ है।

दीक्षान्त-समारोह की परम्परा के अनुरूप हमारे दीक्षान्त-समारोह न होते रहे है और न हो सकते हैं। दीक्षान्त-समारोह का मुख्य ध्येय होता था—विद्या अध्ययन समाप्ति के बाद जीवन में प्रवेश करने वालों के लिए ऐसा सन्देश, जो शेष जीवन के लिए उनका सहारा बन सके। आज वह परम्परा नाम मात्र के लिये जीवित है। मुझे नहीं लगता कि दीक्षान्त-समारोह के अवसर पर हम विभिन्न डिग्रियों से विभूषित होने वाले विद्यार्थियों को उनके भविष्य के लिये किसी सर्वसम्मत या निश्चित दिशा का बोध करा सकेंगे।

हमारे समाज में आर्थिक असमानता है; अवसर की असमानता है; अनिश्चितता का वातावरण है; बेकारी है और है उससे पैदा होने वाली भविष्य के प्रति आशंका। यद्यपि वर्तमान शिक्षा हमारे सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रश्नों का सम्पूर्ण उत्तर देने में सफल नहीं हो पायी है, फिर भी उच्च-शिक्षा का जीवन में विशिष्ट स्थान है।

गढ़वाल जनपद की जनता के लिए यह विश्वविद्यालय उच्च-शिक्षा का सम्पर्क मार्ग है। इस विश्वविद्यालय की शिक्षा–दीक्षा सारे हिमालय की गोद में बसे हुए इलाके के लोगों के लिए जीवनदायिनी प्रवृत्ति देने की ओर सचेष्ट रहे, मेरी यही कामना है।

दीक्षान्त समारोह के सफल आयोजन के लिये मेरी शुभकामनायें स्वीकार करें।

—हेमवती नन्दन बहुगुणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

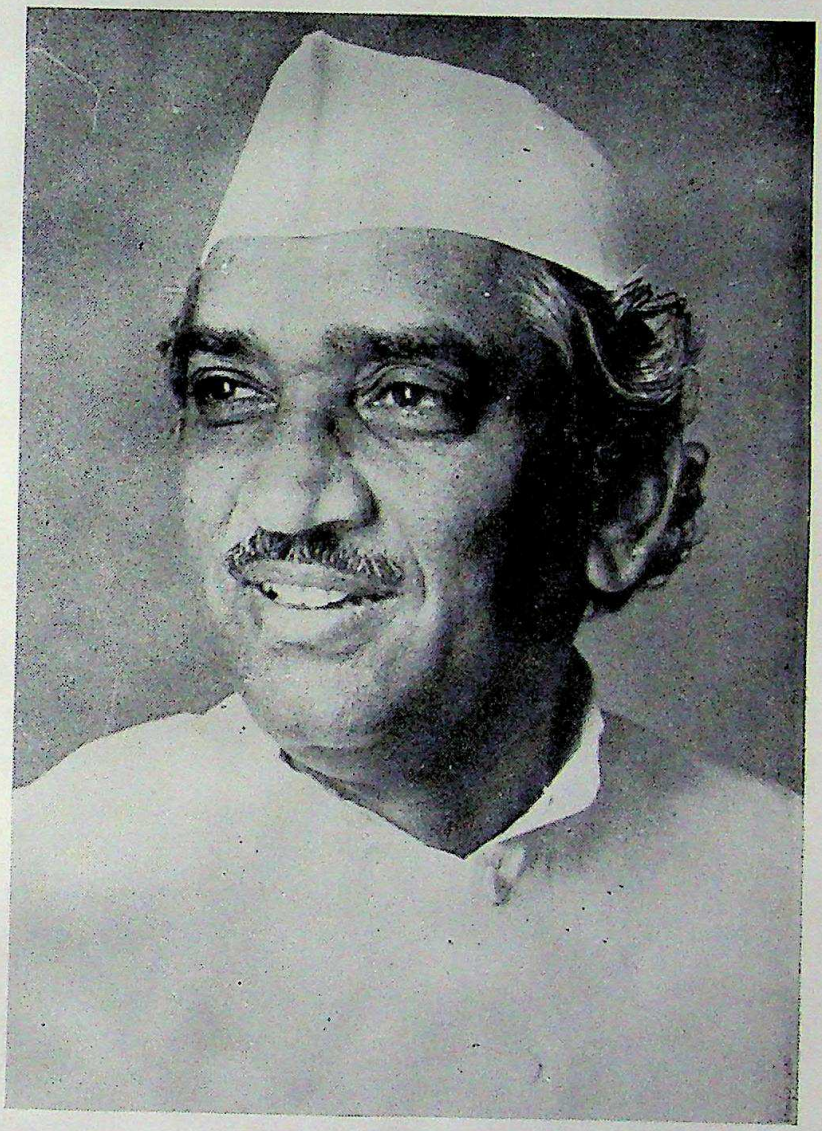

हिमालय के यशस्वी पुत्र श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा जो गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

लखनऊ
मई 2, 1979

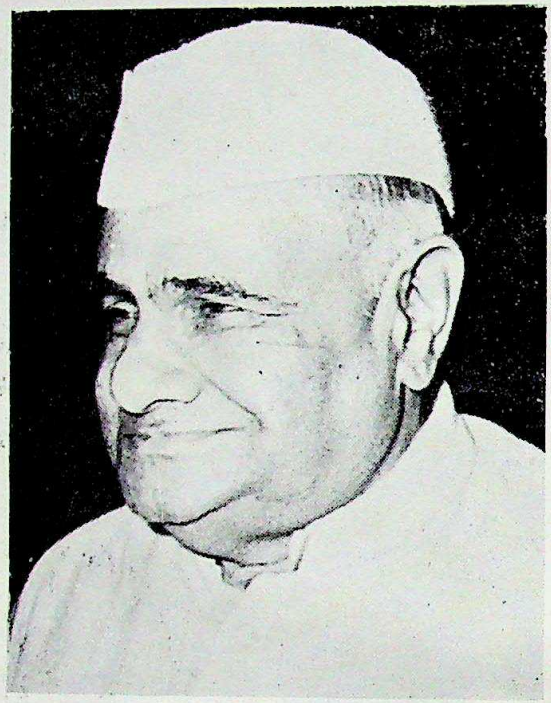

सन्देश

यह हर्ष का विषय है कि गढ़वाल विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह का आयोजन 11 मई, 1979 को किया गया है। वस्तुत: विश्वविद्यालय के जीवन में दीक्षान्त समारोह सर्वाधिक महत्वपूर्ण आयोजन होता है, क्योंकि इसमें सफल स्नातकों को कर्मठ जीवन में प्रवेश के पूर्व जीवन के मूल मंत्र का पाठ पढ़ाया जाता है जिससे वे विश्वविद्यालय में प्राप्त शिक्षा-दीक्षा के अनुरूप अपने जीवन का संचालन कर सकें और अपने ध्येय को साकार कर सकें।

गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 1973 में हुई थी। इस अल्पावधि में इसने अनेक कठिनाइयों के बावजूद आर्थिक दृष्टि से पिछड़े पर्वतीय अंचल में शिक्षा के प्रसार और प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान किया है जिसके लिए मैं विश्वविद्यालय को धन्यवाद देता हूं।

इस दीक्षान्त समारोह के अवसर पर स्मारिका के प्रकाशन के आयोजन की भी मैं सराहना करता हूं क्योंकि इससे विश्वविद्यालय के बारे में सभी प्रकार की जानकारी मिल सकेगी। मैं स्मारिका के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूं और सभी सफल स्नातकों को बधाई देता हूं तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

—बनारसी दास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० शिवानन्द नौटियाल,
उच्च शिक्षा मंत्री,
उत्तर प्रदेश ।

विधान भवन,
लखनऊ ।
दिनांक 19 अप्रैल, 1979

सन्देश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि दीक्षान्त समारोह के अवसर पर गढ़वाल विश्वविद्यालय एक स्मारिका के प्रकाशन का आयोजन कर रहा है जिसमें विश्वविद्यालय से सम्बन्धित 15 संघटक एवं सह सम्बद्ध महाविद्यालयों के परिचय का समावेश किया जायेगा । यह प्रयास सराहनीय है क्योंकि इससे गढ़वाल विश्वविद्यालय एवं उसके संघटक महाविद्यालयों द्वारा किये जा रहे कार्यकलापों की जानकारी लोगों को आसानी से स्मारिका में उपलब्ध हो जायेगी । मैं इस आयोजन की सफलता की कामना करता हूँ ।

—शिवानन्द नौटियाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आबिद अली,
मंत्री,
पर्वतीय विकास एवं पर्यटन

विधान भवन,
लखनऊ

दिनांक : 30, अप्रैल, 1979

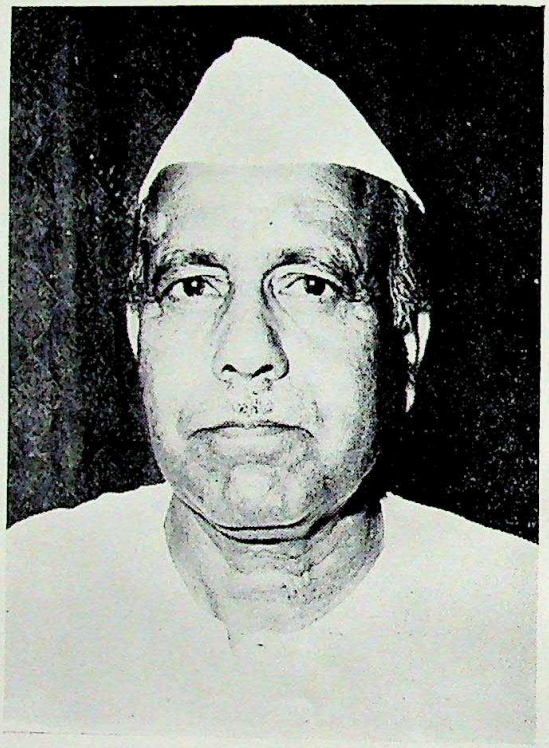

सन्देश

मुझे प्रसन्नता है कि गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर का प्रथम दीक्षान्त समारोह आगामी 11 मई को होने जा रहा है और इस अवसर पर विश्वविद्यालय की ओर से एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है।

यद्यपि इस विश्वविद्यालय की स्थापना हुए अभी बहुत थोड़े ही दिन हुए हैं फिर भी इसका भविष्य उज्ज्वल है। मुझे आशा है कि स्मारिका में विश्वविद्यालय के विकास के लिए ठोस सुझाव दिये जायेंगे जो यहां के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिए लाभदायक होगा।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

—आबिद अली अंसारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

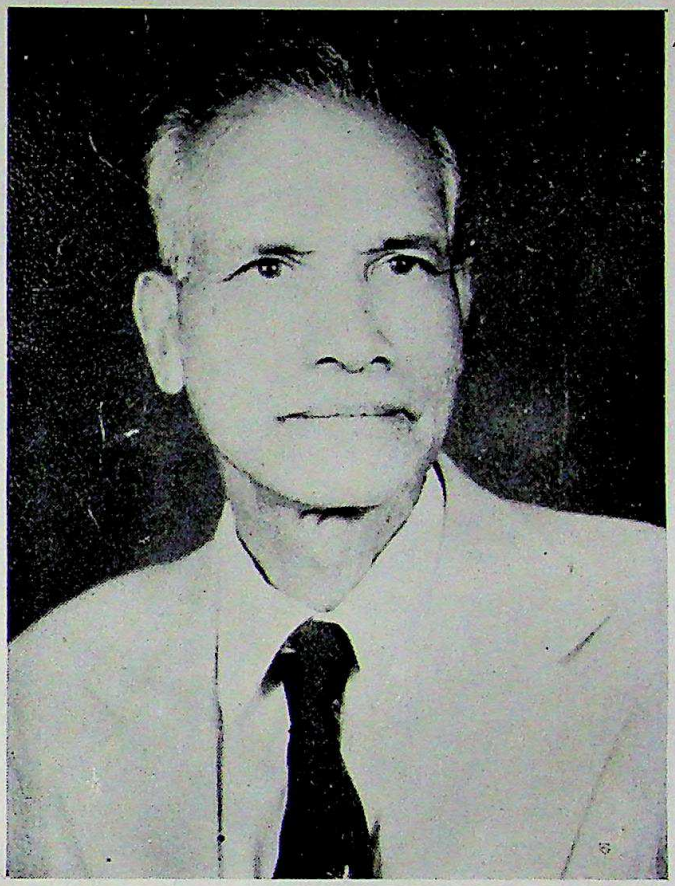

गढ़वाल विश्वविद्यालय के लोकप्रिय
कुलपति बहुमुखी प्रतिभा के धनी
श्री उमाचरण घिल्डियाल

गढ़वाल विश्वविद्यालय : प्रतिमायें, अपेक्षायें और सम्भावनायें ।

गढ़वाल विश्वविद्यालय लोक मानस की उद्बुद्ध चेतना का प्रतीक है, उसकी अशरीरी आकांक्षाओं और कल्पनाओं का साकार प्रतिबिम्ब है, जन जीवन की सामूहिक अभिलाषाओं का कलेवर है। असंख्य नर नारियों के शिव संकल्प की आत्मा को विश्वविद्यालय के जनक, पोषक और रक्षक, श्री हेमवतीनन्दन जी बहुगुणा ने प्रतिष्ठा दी। जन जीवन के योग क्षेम का प्रत्यक्ष रूप कुछ युवा नेताओं के सत्याग्रह ने भी लिया।

ऐसी पृष्टभूमि में समुद्भूत इस संस्था की प्रतिमायें स्वभावत : लोक मानस में असंख्य होंगी और उससे अपेक्षायें भी उक्त प्रतिमाओं के अनुरूप असंख्य होने में कोई सन्देह नहीं। किसी की कल्पना में विश्वविद्यालय क्षेत्र की सभी समस्याओं के निराकरण का स्पर्शमणि है, उसकी कामधेनु है, वे इसे 'आ ज्योतिरेति' का उद्गम समझते हैं। कोई इसे सरस्वती के वरदान की भूमिका मानते हैं, तो कोई लक्ष्मी के विलास का क्रीड़ास्थल। भिन्न भिन्न प्रतिमाओं और अपेक्षाओं की यह समष्टि यदि जन मानस की आशाओं-आकांक्षाओं की तृप्ति पूर्ति न कर सके तो जन जन में कुन्ठा व्याप्त होना स्वाभाविक ही है।

इस विश्वविद्यालय की मेरी प्रतिमा ऐसी है जिससे ज्ञान का आलोक व्याप्त रूप से जन जन में फैले और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें चेतना अनुप्राणित हो कि वे इसे अपनी आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का ज्योति स्थल मान सकें। विश्वविद्यालय का वातावरण प्रधानत: छात्र, छात्राओं तथा प्रवक्ताओं के माध्यम से बनता है। इसलिये उनके प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष विचार, आचार और व्यवहार ही उस वातावरण को बनाते हैं।

मेरी कल्पना में इस विश्वविद्यालय से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति हमारी सभ्यता, सच्चरित्रता और नैतिकता का प्रतिमान है। प्रधानत: विश्वविद्यालय के छात्र, छात्रायें और अध्यापक वर्ग (प्रवक्ता) के आचार, विचार और व्यवहार में भारतीयता और राष्ट्रीयता झलके। विश्वविद्यालय का ऐसा वातावरण हो जिसकी प्रेरणा से यहाँ के छात्र, छात्रायें और अध्यापक सभी 'सत्यंवद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमद :' के आर्ष मूल्यों को जीवन में प्रतिष्ठा दे सकें। मेरी कल्पना में इस विश्वविद्यालय के छात्र और अध्यापक अपने अपने कार्य में ऐसे युक्तचेष्ठ हों कि उनके आचरण और दिनचर्या में 'चरेवैति चरेवैति' चरितार्थ हो और ऐसा दिखे कि वातावरण में कुछ कर लेने की भूख है। बलात् स्मरण आवे—

'पश्म सूर्य न श्रेमाणं न तन्द्रयते कदाचित्'।

ऐसा वातावरण बनाने की सम्भावनायें प्रचुर परिमाण में इस क्षेत्र में यत्र-तत्र-सर्वत्र विद्यमान हैं। किसी विश्वविद्यालय का प्राण उसका छात्रवर्ग है और हृदय उसका अध्यापक वर्ग। इस विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं में नि: सर्गजात सरलता, सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता और परिश्रमशीलता स्वभाव बहुला है। उनको सम्यक दिशादर्शन और संवेदनशील सहानुभूति मिल जाय तो वे अपने विश्वविद्यालय की मान मर्यादा की रक्षा और प्रगति में तन, मन, धन और जीवन से अपना सहयोग देने के लिये उत्सुक हैं, इच्छुक हैं। उनको अपने अध्यापक वर्ग से दिशाबोध की आवश्यकता रहती है ताकि वे अपने समय की सम्भावनाओं को देख सकें, पहिचान सकें। इसका मुझे पूरा विश्वास है और यही मेरी कामना है।

—उमा चरण घिल्ड्याल
कुलपति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

गढ़वाल विश्व विद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह के अवसर पर प्रकाशित इस स्मारिका के माध्यम से हम उन सभी व्यक्तियों और संस्थाओं का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं जिन्होंने गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर आज तक उसके निर्माण में अपना अमूल्य योगदान किया तथा जिनके प्रयासों एवं परिश्रम के फल स्वरूप गढ़वाल की एक चिर इच्छित आकांक्षा को मूर्त रूप पाने में सफलता मिली। इसी अवसर पर हम अपने समस्त उत्तरांखडीय गढ़वाली तथा कुमाँउनी समाज की मूल भूत भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं साँस्कृतिक एकता में पूर्ण विश्वास व्यक्त करते हुए भविष्य में कुमाऊँ विश्वविद्यालय से पूर्ण सहयोग की कामना करते हैं।

किसी भी विश्वविद्यालय की उपलब्धियों के मूल्यांकन के लिए पाँच वर्ष का समय पर्याप्त अवधि नहीं हो सकती। मगर अनेक बाधाओं एवं दुर्भावनाओं का शिकार होते हुए भी तथा निर्माण की शक्ति को आलोचनाओं का उत्तर देने में अपव्यय करने के लिए वाध्य किए जाने पर भी आज गढ़वाल विश्वविद्यालय ने अपना एक निश्चित स्वरूप निर्माण करने में, बहुत कम ही सही, मगर कुछ न कुछ सफलता अवश्य ही प्राप्त करली है। इसके लिए गढ़वाल विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारी, कर्मचारी, अध्यापक एवं छात्र ही नहीं हमारे वे सभी शुभ चिन्तक भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने अनेक कमियों, कठिनाइयों एवं कष्टों के बीच रहते हुए भी पूर्ण कर्तव्य निष्ठा एवं ईमानदारी से विश्वविद्यालय के लिए जो भी बन पड़ा, किया।

इस पुस्तिका में जहाँ एक ओर गढ़वाल की सामाजिक एवं ऐतिहासिक परंपराओं की पृष्ट भूमि में गढ़वाल विश्वविद्यालय के अस्तित्व एवं प्रगति के पाँच वर्षों का सम्यक विवरण प्रस्तुत किया गया है वहीं दूसरी ओर सभी संघठक एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों की शैक्षिक तथा शिक्षणेतर उपलब्धियों की आवश्यक जानकारी देने का प्रयत्न भी किया गया है ताकि विश्वविद्यालय का समग्र शैक्षिक परिवेश स्पष्ट हो सके।

यह विश्वविद्यालय अपने उद्भव की परिधि में एक क्षेत्रीय विश्वविद्यालय माना गया था और गढ़वाल मंडल में उच्च शिक्षा एवं अनुसंधानात्मक सुविधायें प्रदान करने के साथ-साथ इसे क्षेत्रीय विकास में एक विशेष भूमिका निभाने तथा इस दिशा में सभी आवश्यक संसाधन जुटाने का केन्द्र बनाने की कल्पना भी इसके निर्माताओं ने की थी। भारत की उत्तरी सीमा पर प्रकृति की अभेद्य दीवार सी खड़ी पर्वतराज हिमालय की गगन चुम्बी हिमाच्छादित चोटियाँ, उनके केन्द्र में पुण्य सलिला गंगा, यमुना और काली का उद्गम, नर-नारायण की तपस्थली गन्ध मादन केदार और बदरी के धाम,—इन सबको अन्तस में समेटे हुए गढ़वाल तथा कुमाऊँ का प्राकृतिक सम्पदा से भर पूर तथा नैसर्गिक सुषमा से परिपूर्ण अंचल यातायात के पर्याप्त साधनों के अभाव में आज भी नई खोज, नये सर्वेक्षण तथा नये शोध कार्यक्रमों की बेचैनी से प्रतीक्षा कर रहा है। गढ़वाल तथा कुमाऊँ विश्वविद्यालयों के ऊपर ये नैतिक उत्तरदायित्व है कि वे एक दूसरे के सहयोग एवं पारस्परिक आदान प्रदान के वातावरण में इस सम्पूर्ण क्षेत्र का आर्थिक, साँस्कृतिक एवं सामाजिक उत्थान करने के लिए एक नये अध्याय का श्री गणेश करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाल विश्वविद्यालय का केन्द्र श्रीनगर युग-युगों से पर्वतीय अंचल का सांस्कृतिक केन्द्र रहा है। विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद इस नगर के इतिहास में एक नया विकासोन्मुख अध्याय जुड़ गया है जिससे इस नगर के नैतिक उत्तरदायित्व में भी वृद्धि हो गई है। गढ़वाल के समस्त बुद्धिजीवियों एवं नवयुवकों की आशा एवं आकांक्षा का केन्द्र यह विश्वविद्यालय और उसकी स्थापना से पुनर्जीवित प्राचीन नगर श्रीनगर में यदि ठीक तालमेल नही बैठता और विश्वविद्यालय की प्रगति में अवरोध ही उत्पन्न होते चले जाते हैं तो हम सबके लिए तथा समग्र गढ़वाल एवं उत्तराखंड के लिए इससे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण और कोई बात नहीं हो सकती।

गढ़वाल की अपनी महान परम्परायें रही हैं। यह क्षेत्र युग-युग से ही भारतीय इतिहास में प्रत्येक युग की जो भी प्रधान राष्ट्रीय चेतना-धारा रही है उससे अविरल रूप से जुड़ा रहा है। समग्र राष्ट्र के साथ कदम बढ़ाने के लिए आज नव निर्माण के इस युग में हमें भी क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय विकास के पुण्य कार्य में एक विशेष भूमिका निभानी है। हमारी चेतनाओं का उद्गम अथवा प्रेरणा स्रोत केवल गढ़वाल विश्वविद्यालय को ही बनना है। अपने इस नैतिक दायित्व से हटने का कोई भी प्रयत्न विश्वविद्यालय के लिए आत्मघाती होगा। अतः आज हम सबका सामूहिक प्रयत्न गढ़वाल विश्वविद्यालय का ऐसा स्वरूप निर्माण करने के लिए निर्दिष्ट हों जो इस क्षेत्र में पिछड़ेपन का अन्धकार दूर करने के लिए उसे एक अनन्त प्रकाश का पुंज जैसा स्वरूप प्रदान कर सके। भले ही इसके लिए कोई भी त्याग क्यों न करना पड़े अथवा कोई भी कठिनाई क्यों न उठानी पड़े। यह निश्चित है कि यदि हमने अपने विश्वविद्यालय को ऐसा लोक कल्याणकारी स्वरूप नहीं दिया तो हमारी समस्त महान परम्परायें अथवा कठिनाई से अर्जित उपलब्धियाँ अर्थहीन हो जायेंगी और हम अन्धकार के गर्त से कभी भी उबर नहीं सकेंगे।

हम बहुमुखी प्रतिभा के धनी अपने कर्मठ एवं उत्साही कुलपति श्री उमाचरण घिल्डियाल के बहुत आभारी हैं जिन्होंने हम सबको एक नये दृष्टिकोण से विचार करने तथा कार्य करने का सफल दिशा निर्देशन किया है। गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह की आयोजना के समय इस स्मारिका के प्रकाशन का विचार उनके ही मस्तिष्क की उपज है। इसकी सारी रूप रेखा भी उनकी देन है। पता नहीं हम कहां तक कुलपति जी की आशाओं के अनुसार कार्य करने में सफल हुये है? हो सकता है कि हमारी अनुभवहीनता केवल एक कोरा शब्द-जाल मात्र ही रचने में समर्थ हो सकी हो! कुलपति जी ने व्यक्तिगत रूप से, उनके तथा कुल संचिव के कार्यालय ने, तथा वित्त अधिकारी जी ने हमें जितना सहयोग एवं सुविधायें प्रदान की उन सबके लिए हम उनके हृदय से आभारी हैं। सामग्री एकत्र करने में हमें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा अतः इस पुस्तिका के अन्दर कई कमियां अवश्य आ गई हैं। फिर भी इसमें जो भी त्रुटियाँ हैं अथवा जो भी खटकने वाली सामग्री है उनके लिए सम्पादक ही व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी है, विश्वविद्यालय नहीं।

स्मारिका के सम्पादन कार्य में सम्पादक को अपने विद्वान सहयोगी डा० मदन चन्द भट्ट से जो भी अमूल्य सहायता प्राप्त हुई उसका आभार शब्दों द्वारा प्रकट करना सम्भव नहीं है। कई पुस्तकों, पत्रिकाओं एवं लेखकों के भी हम आभारी हैं जिनकी खोजों का यहां प्रयोग किया गया है। आर्थिक सहयोग के लिए ऋषिकेश तथा कोटद्वार के कुछ मित्रों का उल्लेख करना भी आवश्यक है। ऋषिकेश के श्री खुशहाल सिंह राँगड़, श्री माल चन्द राँगड़, श्री बलदेव सिंह राँगड़, श्री शिवप्रसाद पैन्यूली, श्री जमादार गोबिंद सिंह, श्री दयाल सिंह राणा, एवं श्री भोला सिंह खरोला ने जिस उदारता का परिचय दिया उसके लिए हम सब उनके आभारी हैं। कोटद्वार के श्री टीकाराम कुकरेती, श्री दलीप सिंह बिस्ट, श्री चंडी प्रसाद कुकरेती, श्री ओमप्रकाश माहेश्वरी, श्री अनुसूया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंह तड़ियाल, श्री कीर्ति सिंह, श्री शिव सिंह रावत तथा श्री सुधीर सिंह नेगी ने जिस सहृदयता से इस स्मारिका को प्रकाशित कराने हेतु सहायता दी उससे हमारा बहुत उत्साह वर्द्धन हुआ। गढ़वाल मंडल विकास निगम के प्रबन्ध-निदेशक श्री बी०बी० झिल्डियाल तथा श्री बद्री नाथ केदार नाथ मन्दिर समिति के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गणेश प्रसाद झिल्डियाल की सहायता भी हमारे लिए महत्वपूर्ण है। सरस्वती पुस्तक भंडार श्रीनगर, चन्द्रा ट्रेडर्स ऋषिकेश तथा सुन्द्रियाल बन्धु श्रीनगर का भी उनकी सहायता के लिए हम अनुग्रह प्रकट करते हैं।

हम गढ़वाल विश्वविद्यालय के अन्तर्गत सभी संघटक एव सम्बद्ध महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों तथा संस्थाध्यक्षों का आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने इस स्मारिका के प्रकाशन के लिए अपने विद्यालय सम्बन्धी सामग्री तथा तथ्य भेज कर हमारी सहायता की।

हम केन्द्रीय पेट्रोलियम' रसायन एवं उर्वरक मन्त्री श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने इस स्मारिका की विषय-वस्तु के लिए अपने अमूल्य सुझाव देकर हमारा दिशा निर्देशन किया। बहुगुणा जी ने गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना और उसके निर्माण में जितना योगदान किया है उतना किसी अन्य व्यक्ति ने नहीं। उन्होंने गढ़वाल में जन्म लेकर गढ़वाल ही नहीं अपितु सम्पूर्ण हिमालय के गौरव को बढ़ाया है। गढ़वाल विश्वविद्यालय अपने इस प्रथम दीक्षान्त समारोह के अवसर पर उनका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए इनके दीर्घ जीवन एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

गढ़वाली लोक संस्कृति के अब तक अज्ञात एवं अप्रकाशित कुछ महत्वपूर्ण पक्षों को अपने दीर्घकालीन अनुसंधान से उजागर करने वाले हमारे विद्वान उच्च शिक्षा मंत्री डा० शिवानन्द नौटियाल के सहयोग एवं प्रोत्साहन के बिना इस स्मारिका का प्रकाशन संभव नहीं था। इस अवसर पर हम उनके प्रति भी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

यह स्मारिका कोई महान रचना बनाने की दृष्टि से लिखा गया संकलन नहीं है। इसमें गढ़वाली जीवन के सभी महत्वपूर्ण पक्षों एवं परम्पराओं का समावेश भी नहीं किया जा सका। वास्तव में इसकी विषय वस्तु के चुनाव में उन्हीं पहलुओं को प्रमुखता दी गई जिनके विषय में या तो हमें स्वयं कुछ जानकारी थी अथवा हम अन्यत्र उपलब्ध सामग्री का आसानी से प्रयोग कर सकते थे। ये सभी ज्ञात एवं अज्ञात पक्ष अभी तक अपूर्ण हैं और नई खोज तथा नये अनुसंधानों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ये स्मारिका तो सही माने में गढ़वाल विश्वविद्यालय में आज विद्यमान एक नई चिन्तनधारा का प्रतिनिधित्व करने वाली प्रतीकात्मक संकेतिका मात्र है, जिसको इस क्षेत्र, प्रदेश तथा सम्पूर्ण राष्ट्र के परिपेक्ष्य में लगातार परिपुष्ट करते रहने की आवश्यकता है।

वैसे ये आपकी अपनी वस्तु है। अतः अनेक कमियों के होते हुए भी ये अवश्य आपको अच्छी लगेगी क्योंकि हिमवन्त के अमर गीतकार चन्द्रकुँवर के शब्दों में :—

यह स्मारिका आपकी अपनीं वस्तु है। हिमवन्त अमर गीतकार चन्द्र कुँवर की निम्न पंक्तियों के अनुसार यह आप को अवश्य अच्छी लगेगी क्योंकि :—

प्रिय लगते हैं काँटे भी अपनी मधुरितु के !
प्रिय लगते हैं दीन वचन अपने वैभव के !
प्रिय लगते अपनी वर्षा के तर्जन गर्जन,
प्रिय अपने फूलों के आतप से पीड़ित तन,
प्रिय लगते आँसू अपनी शशि के पलकों के !

गोपेश्वर, विषुवत संक्रान्ति—रमेश चन्द्र नैथानी
14 अप्रैल, 1979

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाल मण्डल

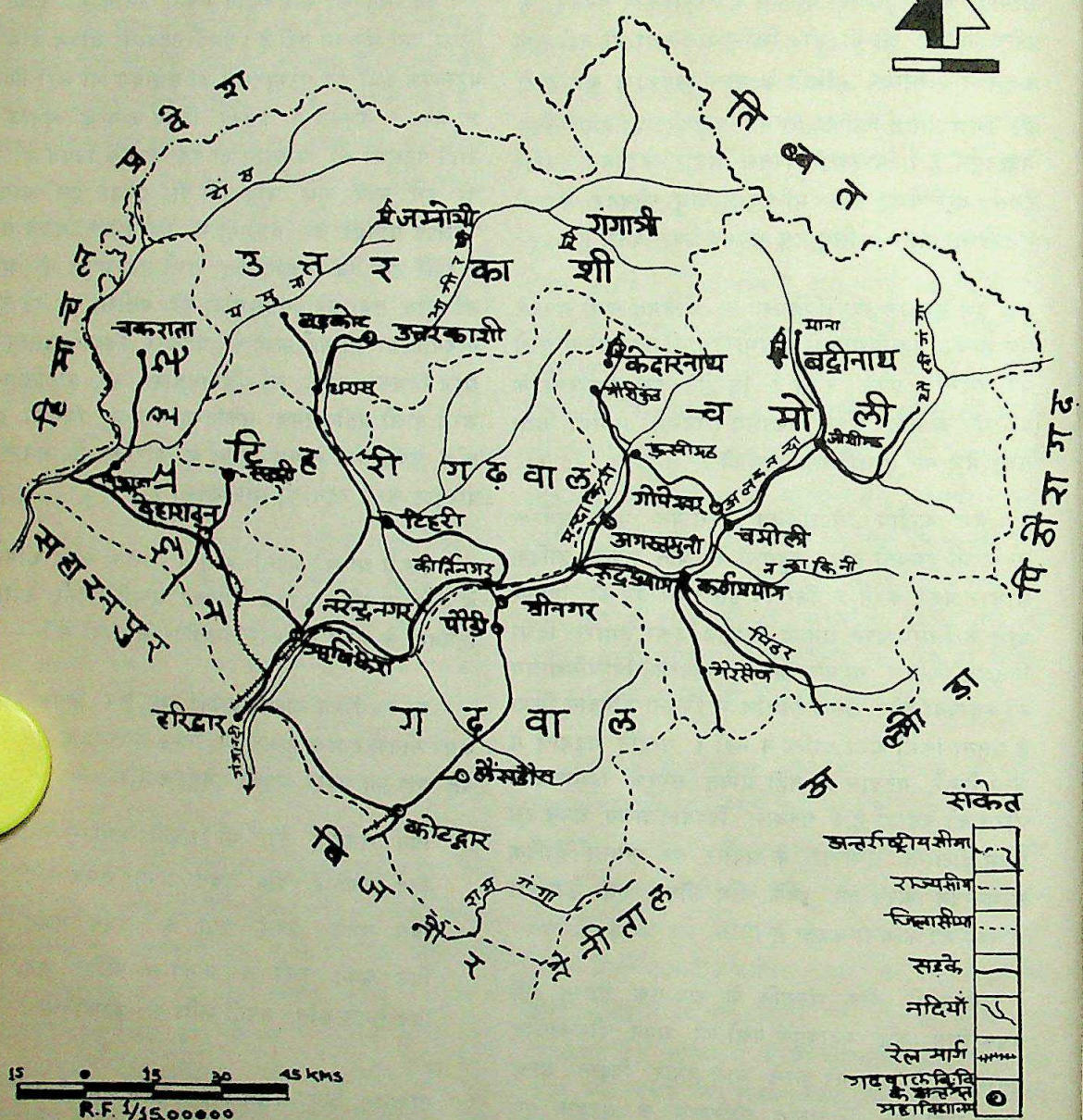

भारतीय सर्वेक्षण विभागीय मानचित्र पर आधारित

गढ़वाल विश्वविद्यालय के अन्तर्गत महाविद्यालयों की स्थिति एवं मोटर मार्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाल का

गढ़वाल पांच जनपदों (पौड़ी गढ़वाल, टिह गढ़वाल, चमोली, उत्तरकाशी तथा देहरादून, की सम्मिलित भौगोलिक एवं सांस्कृतिक इकाई का नाम है जिसका क्षेत्रफल 30090 वर्ग किलोमीटर है । गढ़वाल शब्द का सर्व प्रथम प्रयोग हाट (चमोली) से प्राप्त रानी कर्णवती के एक ताम्रपत्र में हुआ जिसे सन 1680 का लिखा हुआ बताया जाता है। वैसे बावन-गढ़ों की भूमि होने के कारण ये क्षेत्र गढ़वार अथवा गढ़वाल कहलाया जाता है । संस्कृत साहित्य में इसे गढ़देश अथवा केदार खंड नाम से पुकारा जाता रहा है । गढ़वाल मँडल 29° 26′ उत्तरी अक्षांश से 31°28′ उत्तरी अक्षांश तक तथा 77°49′ पूर्वी देशान्तर से लेकर 80° 6′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है । इसके उत्तर में तिब्बत, पूर्व में पिथौरागढ़ अल्मोड़ा और नैनीताल, दक्षिण में बिजनोर और सहारनपुर तथा पश्चिम में हिमाचल प्रदेश स्थित हैं । इसप्रकार गड़वाल की उत्तरी सीमा भारत की तिब्बत से लगने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा है । उत्तर से दक्षिण की ओर सीधी रेखा में गढ़वाल की सम्पूर्ण लम्बाई लगभग उतनी ही है जितनी कि पूर्व से पश्चिम की ओर उसकी चौड़ाई है । उत्तर से दक्षिण की ओर लगभग 50 किलो-मीटर चौड़ाई वाला हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाओं एवं घाटी तथा स्कन्दीय हिमनदों का वनस्पति एवं प्राणी रहित वीरान क्षेत्र है जिसमें यदाकदा ही जीवन के दर्शन होते हैं । इससे लगभग 75 कि०मी० दक्षिण की ओर तक विभिन्न दिशाओं में फैले अनेक प्रकार की वनस्पति युक्त मध्यम ऊँचाई की पर्वत श्रृंखलाओं, हलके ढालवाले स्कन्दनुमा पठारों, गहरी घाटियों और सीढ़ीनुमा समतल नदी तटीय सेरों से युक्त लघु हिमालय का विस्तृत जीवन के अनेक

क्षे
तथ
यहां
होता
परिसि
शिवालि
क्षेत्र की
है । अन्य
जहां शिवा
को अलग क
समतल घाटी
तक हिमालय
गढ़वाल के घुर
ही धरातलीय ज
मगर वृक्षाच्छादित
जल की अधिकता
भाग स्थित है ।

भूगर्भिक दृष्टि से
कटिबन्धों में बांटा जात
से कोई संबंध नहीं है । स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा सीमावर्ती क्षेत्र है जो हिमाच्छादित सर्वोच्च शिखरों से प्रारंभ होकर उत्तर में तिब्बत की भूमि में प्रवेश करता है। इस भाग में पैलेजोइक से लेकर इओसीन युग तक की जीवाश्म युक्त अवसादी शैलें पाई जाती है। इससे दक्षिण की ओर दूसरा कटिबंध मध्यवर्ती हिमालय का वह क्षेत्र है जिसके अन्तर्गत वृहत हिमालय का शेष भाग तथा लघु हिमालय का सम्पूर्ण क्षेत्र सम्मिलित किया जाता है। यहाँ अधिकतर रूपान्तरित तथा कठोर रवेदार शैले जिनमें नाइस, शिस्ट तथा जीवाश्म रहित अनेक पौराणिक अवसादी तथा अन्य शैले हैं, पाई जाती हैं। मैसेज़ोइक युग की निक्षेपयुक्त अनेक शैलें भी इस क्षेत्र में पाई जाती हैं। तीसरा कटिबन्ध धुर दक्षिण की ओर स्थित शिवालिक शैलों का वह भूभाग है जो कहीं तो हिमालय से जुड़ गया है और कहीं उसे एक घाटी जिसे 'दून' कहा जाता है, ने हिमालय से अलग कर दिया है। इस क्षेत्र में टरशियरी युग की शैलें विशेषतया टरशियरी के उत्तरार्द्ध की नदियों द्वारा निक्षेपित अवसादी शैलें पाई जाती हैं। जो हिमालय के सबसे अंतिम चरण की पर्वत निर्माणकारी क्रियाओं के साथ मुड़कर पर्वतों का रूप लेने में सफल हो गई थीं।

गढ़वाल की 6000 मीटर से अधिक ऊँचाई वाली प्रमुख चोटियों की सूची इस पुस्तिका के परिशिष्ट में संकलित है। इस क्षेत्र में 51 नामांकित तथा 65 अनामांकित ऐसी श्रृंखलायें हैं जो मानव को युग युगों से ललकार रही हैं। आम तौर पर ये सारी चोटियाँ उत्तरकाशी तथा चमोली जिलों में ही पाई जाती हैं जहां भूमि अधिकांशतया हिमाच्छादित है। गढ़वाल की धरातलीय आकृतियों की संरचना बड़ी जटिल एवं विभिन्नतापूर्ण है। हिम, वायु एवं बहते हुए जल ने हिमालय के जन्म से लेकर आजतक धरातल को काट-काट कर संवारा है तो पृथ्वी की आन्तरिक शक्तियों ने उसे उठा उठाकर मोड़ और तोड़ कर ऊबड़-खाबड़ तथा ऊँचा-नीचा बनाने की क्रिया लाखों बरसों तक जारी रखी। यहां धुर दक्षिण में कालागढ़ समुद्र तल से 268 मीटर ऊँचा है; दून की समतल घाटी 500 से 600 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है; शिवालिक श्रेणियों की सामान्य ऊँचाई 750 से 1200 मीटर के बीच है; लघु हिमालय के अधिकांश भाग 1500 से 3000 मीटर की ऊँचाई के बीच स्थित हैं; तथा वृहत हिमालय की अधिकतम ऊँचाई 7817 मीटर तक पहुँच गई है। उत्तर की ओर अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्र में भी जहाँ पर्वत श्रृंखला की सामान्य ऊँचाई 5000 मीटर और 6000 मीटर के बीच होगी नदी घाटी में 1000 मीटर से 2000 मीटर की ऊँचाई के स्थान भी बहुत निकट ही पाये जा सकते हैं। लघु हिमालय के बीच भी श्रीनगर 550 मीटर, टिहरी 778 मीटर, कर्ण प्रयाग 884 मीटर तथा नन्द प्रयाग 960 मी० की ऊँचाई पर स्थित होकर बहुत ऊँचाई वाले क्षेत्रों में भी मैदानी जलवायु की सृष्टि करते हैं।

गढ़वाल मंडल तीन जल प्रवाह क्षेत्रों में बँटा है यथा, यमुना प्रवाह क्षेत्र, गंगा प्रवाह क्षेत्र तथा रामगंगा प्रवाह क्षेत्र। यमुना प्रवाह क्षेत्र में प्रमुख यमुना और टोंस हैं। अन्य नदियाँ हैं रूपी, सूपी, पावर, खूनीगाड़, असान, अगलाड़ तथा गिरि। गंगा प्रवाह क्षेत्र में प्रमुख भागीरथी और अलकनन्दा नदियाँ हैं। अन्य सहायक नदियाँ हैं—भिलंगना, पूर्वी और पश्चिमी नयार, हेवल, जाड़ गंगा, पिंडर, मन्दाकिनी, नन्दाकिनी, धौली, गिरथी, सरस्वती, विष्णु गंगा, बिरही, भ्यूंडार, नील गंगा कल्प गंगा, मदमहेश्वरी, प्राण गंगा, कैलगंगा, आटागाड़, चन्द्रभागा, रूप गंगा, घृत गंगा, बालासुती, पाताल गंगा, रुद्र गंगा, गरूड़ गंगा आदि। रामगंगा दूदातोली से ग्वालदम तक तथा दक्षिण में लोहारचौड़ से कालागढ़ तक ही गढ़वाल में बहती है। कुछ अन्य नदियाँ दक्षिणी शिवालिक अथवा लघु हिमालय के दक्षिणी ढ़ालों से निकल कर भाबर क्षेत्र से दक्षिण की ओर मैदान में चली जाती हैं जैसे खोह, मालन आदि। वास्तव में जिन नदियों का स्रोत हिमाच्छादित ढालों पर स्थित है उनमें साल भर पर्याप्त जल उपलब्ध रहता है। जिन नदियों के स्रोत लघु हिमालय के बिना बर्फ वाले ढालों पर विद्यमान हैं उनमें वर्षा ऋतु में बहुत अधिक जल और ग्रीष्म ऋतु में बहुत कम जल शेष रह पाता है। गर्मी की ऋतु में हिम पिघलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से हिमाच्छादित क्षेत्रों से निकलने वाली नदियों में पानी का प्रवाह बढ़ जाता है। वर्षा ऋतु में प्रायः सभी नदियाँ बहुत वेग के साथ बड़ी बड़ी शिलायें बहाती हुई कई गुना बढ़े हुए जल की मात्रा के साथ अपने कूलों को तोड़ती फोड़ती आगे बढ़ती हैं। प्रायः सभी जल क्षेत्रों में जंगलों के नष्ट हो जाने के कारण हिमालय की नदियों में बाढ़ आने की आशंका प्रति वर्ष बढ़ती ही चली जा रही है। नदियों का रूप सबसे भयंकर तब हो जाता है जब वे विशाल जलराशि एवं कंकड़ पत्थरों को लेकर मैदान में प्रवेश करती है। नदी की प्रवाहशक्ति कम हो जाने के कारण कई गुना बढ़ा हुआ जल दोनों तटों को पार कर दूर दूर तक फैलता हुआ मैदानी भाग पर बाढ़ का प्रकोप फैलाता हुआ अनेक विपत्तियों को जन्म देता है और अनेक प्रकार से विनाश की लीला प्रारंभ हो जाती है।

गढ़वाल में जलवायु की मोटी मोटी बातें यद्यपि सर्वत्र एक जैसे पाई जाती हैं मगर छोटी छोटी बातों में एक स्थान दूसरे से बहुत भिन्न है। बृहत हिमालय जो सबसे ऊँची चोटियों वाला भाग है साल भर बर्फ से ढ़का रहता है। गढ़वाल में हिम रेखा दक्षिणी ढालों पर 5639 मीटर की ऊँचाई पर पाई जाती है। उत्तरी ढालों पर ये हिम 914 मीटर अधिक ऊँचाई पर पाया जाता है क्योंकि दक्षिणी ढालों पर उत्तर की अपेक्षा अधिक हिमपात होता है। अतः हिमरेखा 5182 मीटर की औसत ऊँचाई पर बताई जाती है। हिमाच्छादित प्रदेशों से दक्षिण की ओर धीरे धीरे बर्फ गिरने के समय में कमी होने लगती है। मोटे तौर पर 3000 मीटर से 4000 मीटर ऊँचे स्थानों पर दिसम्बर, जनवरी तथा फरवरी में ही हिमपात होता है। 2000 मीटर से 3000 मीटर की ऊँचाई तक इन्हीं तीन महीनों में केवल कुछ ही दिन बर्फ गिरती है। 2000 मीटर से नीचे वाले स्थानों में बर्फ तो गिरती है मगर ये अधिक दिन तक धरातल पर नहीं टिकी रह सकती। हिमपात की मात्रा 3500 मीटर से ऊपर कुछ ऊँचाई तक कम होती है 4000 मीटर से 5000 तक ऊँचाई में ही अधिकतम हिमपात होता है। इससे ऊपर फिर हिमपात की मात्रा कम होती जाती है। गढ़वाल के हिमाच्छादित क्षेत्रों में जाड़ों में गिरी ये बर्फ एक अमूल्य जल भंडार है जो मार्च के महीने से पिघलना शुरू हो जाता है और जून के माह तक शुष्क ऋतु में उत्तरी भारत की सभी बड़ी नदियों में पर्याप्त जल प्रवाह प्रदान करता है।

गढ़वाल की अधिकांश वार्षिक वर्षा 15 जून से 15 सितम्बर के बीच पड़ती है। किसी वर्ष इन महीनों वार्षिक वर्षा का 90% और कुछ वर्ष 80% प्राप्त होता है। अधिकतम वर्षा कभी जुलाई में, कभी अगस्त में और कभी कभी सितम्बर में गिरती हुई देखी गई है। इसी तरह कुछ स्थानों पर किसी वर्ष यदि अधिकतम वर्षा जुलाई में हुई हो तो दूसरे स्थानों पर उसी वर्ष अगस्त में अधिकतम वर्षा प्राप्त की जा सकती है। गढ़वाल के उस क्षेत्र में जो मैदान से लगा है सबसे अधिक वर्षा होती है। कोटद्वार से ऋषिकेश की ओर वर्षा की मात्रा पूर्व से पश्चिम की ओर कम होती जाती है। गढ़वाल के दक्षिणी भाग में मैदान की ओर फैले ढालों पर वर्षा ऊँचाई के अनुसार बढ़ती जाती है। इन ढालों पर 900 मीटर से 1200मी० की ऊँचाई वाले भाग में सर्वाधिक वर्षा होती है, जैसे नरेन्द्रनगर। इससे ऊपर वर्षा की मात्रा धीरे धीरे कम होती जाती है। देहरादून में कोटद्वार से अधिक वर्षा देहरादून की ऊँचाई तथा घाटी में स्थिति होने के कारण ही होती है। जो क्षेत्र लघु हिमालय में वृष्टि छाया में पाये जाते हैं वहाँ बाहरी ढालों की अपेक्षा बहुत कम वर्षा होती है। दक्षिणी भाग में चोटियों पर स्थित नगरों जैसे मसूरी तथा लैंसडाउन में जितनी वर्षा होती है उतनी फिर मध्यवर्ती किसी भी नगर में कहीं नहीं होती। मध्यवर्ती घाटियों में बसे नगरों जैसे देवप्रयाग, टिहरी तथा श्रीनगर में 70 से 93 सेंटी मीटर ही वर्षा हो पाती है। लघु हिमालय के दक्षिणी भागों से नदी घाटियों में भाप भरी हवायें जब अन्दर के क्षेत्रों में प्रवेश करती हैं तो पहाड़ों के सहारे ऊपर उठते हुए उनसे एक बार फिर मध्यम श्रेणी की वर्षा होने लगती है। उदाहरणार्थ कर्णप्रयाग तथा नन्द प्रयाग में श्रीनगर से अधिक वर्षा होती है। यहाँ से आगे ऊँचाई के अनुसार वर्षा की मात्रा फिर कम होने लगती है। अतः घाट पर वर्षा नन्द प्रयाग से कम होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र प्रश्न है जिसकी ओर सभी
ा ध्यान आकृष्ट करने की
में एक अमेरिकी उपग्रह ने
ह पता लगाया कि बंगाल
र्माण हो रहा है जिसका
लोमीटर है। हिमालय से
ने साथ प्रति वर्ष हजारों
र उसे बंगाल की खाड़ी
ती हैं। नेपाल के उन
थे आज वहाँ केवल
ये हैं। पहिले जब
त्तियों के सड़ने के
तथा अपने नीचे
हुत बड़ी क्षमता
पास कीं नदियों
त बनाने में
रातलीय वर्षा
ो कम होता
है। बाढ़ों
पास की
गावों के
ऋतु में
बहुत
रों में
मान
य-
की
र

... 1971 की जन
...095 थी। यदि इस क्षेत्र में इसी
.. जनसख्या बढ़ती रहे तो 1981 में ये जनसंस्था 25
लाख तक पहुंच जायेगी। गढ़वाल के 83% लोग गावों
में बसते हैं मगर देहरादून को छोड़कर शेष पर्वतीय भागों
में ग्रामीण जनसंस्था कुल जनसंस्था का 95% हैं। यहाँ

...तमान
.. एक सौ वर्ष पुरानी
...त से आज सर्वथा भिन्न हो गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जनसंख्या का केवल 54% ही कृषि तथा कृषि संबंधी कार्यों से जीविका कमाता है। गढ़वाल में आज भी खेती के साधन बहुत पुराने हैं। यहाँ की कृषि में आज भी अच्छे बीजों, उर्वरकों, सिंचाई एवं क्रय-विक्रय की सुविधाओं की कमी तथा आर्थिक एवं सामाजिक जागरूकता का अभाव दृष्टिगोचर होता हैं। पहाड़ों की मिट्टी प्रतिवर्ष वनस्पति रहित ढलुवाँ धरातल पर तीव्र वर्षा के प्रवाह के कारण क्षरित होती रहती है। अतः यहाँ पारंपरिक कृषि के अतिरिक्त वनों पर अधारित घरेलू उद्योग धन्धे, बागवानी तथा पशुपालन पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इस प्रकार के आर्थिक विकास के लिए पूँजी, प्रशिक्षण की सुविधायें, शक्ति एवं यातायात का विकास तथा बाजार की सहूलियत सभी कमियाँ पूरी करनी जरूरी होगी। प्रशिक्षण में सभी प्रकार का तकनीकी ज्ञान और मिट्टी तथा जल का संरक्षण करने की विधियाँ भी सम्मिलित होनी चाहिए।

गढ़वाल में खनिजों का सर्वेक्षण नये सिरे से किये जाने की आवश्यकता है। कम से कम चूने का पत्थर, डोलोमाइट, जिप्सम और फासफोराइट के बहुत बड़े भंडार यहाँ छिपे हैं। गढ़वाल में जिन क्षेत्रों में खनिजों का पता लग चुका है उनकी एक तालिका पारिशिष्ट में दी गई है। वास्तव में बड़े बड़े उद्योग केवल खनिज तथा वनों पर ही आधारित किये जा सकते हैं।

गढ़वाल में जल शक्ति के अनन्त भंडार विद्यमान हैं। परिशिष्ट की एक तालिका में गढ़वाल के जल क्षेत्रों की अनुमानित जल शक्ति का ब्यौरा दिया गया है। छोटे और बड़े सभी प्रकार के उद्योग बिना सस्ती शक्ति के साधनों के नहीं चलाये जा सकते। अतः यह बहुत आवश्यक है कि यहाँ की समस्त जल शक्ति का उपभोग करने के लिए नई नई योजनायें शुरू की जाँय ताकि औद्योगीकरण की नींव सुदृढ़ बन सके।

गढ़वाल के समस्त संसाधनों का सही और वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करना बहुत जरूरी है ताकि उनके उपयोग की संभावनाओं तथा आवश्यक संरक्षण के उपायों पर भी नये दृष्टिकोण से विचार किया जा सके। इसके लिए एक सुनियोजित कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता है।

गढ़वाल में मिट्टी तथा जलवायु फूलों के उत्पादन के लिए सर्वथा उपयुक्त है। यहाँ मन्दिरों की संख्या तो अधिक है ही, भारत भर के लोग विभिन्न धार्मिक स्थानों पर प्रति वर्ष यात्रा के लिए आते हैं। ऋषिकेश तथा हरिद्वार में भी फूलों की देनिक खपत बहुत अधिक है। अतः गढ़वाल के विभिन्न ऊँचाई वाले ढालों पर साल भर गैन्दा तथा गुलाब जैसे फूल पैदाकर उन्हें बेचकर भी ग्रामीण जनता अपनी आय में वृद्धि कर सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाल का इतिहास

पुरुषसूक्त के निर्माता ऋषि नारायण द्वारा चमोली जिले के 'आदि बदरी' में अपने आश्रम की स्थापना और इसी जिले में रूपकुण्ड के समीप 'पिपीलक' नामक सुवर्ण की खोज—भारतीय सभ्यता के शैशव-काल में इन दो घटनाओं ने गढ़वाल की भूमि को ऐसी विशिष्टता प्रदान की है जिसके कारण प्राचीन भारत के बुद्धिजीवी, व्यापारी और राजनीतिज्ञ हिमालय को स्वर्गतुल्य मानने लगे। 57 ई० पू० में कालीदास द्वारा हिमालय को 'पृथ्वी का मानदण्ड' घोषित किए जाने के पीछे एक ओर नारायण, रुद्र, वशिष्ठ, कण्व, जमदग्नि, अगस्त्य, अत्रि, कपिल आदि ऋषियों के आश्रमों की सांस्कृतिक उपलब्धियों का हाथ था जिनके अवशेष आज भी उत्तरकाशी के थानगाँव से लेकर कोटद्वार के सिद्धबली मन्दिर तक पर्यटकों को मोहित करने में सक्षम हैं और दूसरी ओर कुलिन्द, खष, तंगण और भोट्ट नामक पर्वतीय गणराज्यों को इसका श्रेय मिलना चाहिए जिन्होंने गगनचुम्बी गिरिशिखरों पर "हैमवत् पथ" का निर्माण किया, शैल-सरिताओं को पार करने की व्यवस्था की तथा सुवर्ण, औषधि, घोड़े, शहद, कपड़ा, कम्बल आदि के व्यापार की ख्याति को यूनान और चीन तक पहुंचाया।

संस्कृत साहित्य में महानदी यमुना का उद्गमस्थल "कलिन्द" तथा गंगा के उद्गमस्थल एवं बदरिकाश्रम को "हिमवत्" कहा गया है। कलिन्द से निकलने के कारण यमुना को 'कालिन्दी कहा जाता था। इस प्रकार आधुनिक उत्तरकाशी और देहरादून जिलों की भूमि के लिए सबसे प्राचीन ज्ञात नाम है—कलिन्द और इस क्षेत्र के निवासियों का ज्ञात नाम है—कुलिन्द। पाली में कुलिन्द के 'कुणिन्द' या ग्रीक भाषा में 'कुलिन्द्रिन्' प्रयोग मिलते हैं। कुलिन्दों ने उत्तरवैदिक काल में एक आयुधजीवी गणराज्य की स्थापना की थी जिसकी राजधानी देहरादून जनपद में आधुनिक कालसी के पास स्थित 'स्रुघ्न' नामक नगर में थी। काशिका के अनुसार तक्षशिला और पाटलिपुत्र की तरह स्रुघ्न नगर के चारों ओर एक सुदृढ़ दीवार बनी हुई थी। पातञ्जलि के महाभाष्य में स्रुघ्न की समृद्धि और मार्गों का उल्लेख मिलता है। स्रुघ्न से मथुरा, कन्नौज, थानेश्वर और गंगोत्री की ओर जाने वाली सड़कों का भी उल्लेख मिलता है। "भाषावृत्ति" से ज्ञात होता है कि बारहवीं सदी में स्रुघ्न नगर में एक दरवाजे का नाम "कान्यकुब्जद्वार" था। बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक गौतम बुद्ध ने स्रुघ्न में जाकर धर्मोपदेश किया था। तब से स्रुघ्न बौद्ध-धर्म का एक पवित्रस्थल माना जाने लगा। कालसी में अशोक के चौदह अभिलेख गौतम बुद्ध के धर्मोपदेश की स्मृति में अंकित हैं। बुद्ध की उपस्थिति हीनयान परम्परा के अनुरूप एक हाथी के द्वारा प्रदर्शित की गई है। कालसी को पवित्र स्थल मानते हुए अशोक मौर्य ने आदेश दिया है कि वहाँ पर किसी भी जीव का वध नहीं करना चाहिए। चीनी पर्यटक ह्वेनसांग के अनुसार अशोक ने स्रुघ्न में एक स्तूप भी बनवाया था। पुराणों में भी यमुना और टौंस का संगमस्थल कालसी एक पवित्र स्थान स्वीकार किया गया है।

स्रुघ्न नगर का भारतीय इतिहास में सांस्कृतिक से अधिक राजनैतिक महत्त्व है। पंजाब की ओर से अतीत में होने वाले बाह्य आक्रमणों के समय यमुना तट पर अपनी दुर्गम भौगोलिक स्थिति के कारण यह भारतीय राजनीति का एक महत्त्वपूर्ण सुरक्षा केन्द्र बन गया। इण्डोग्रीक साम्राज्य के पतन के समय कुलिन्दराज अमोघभूति ने और बाल्हीक (कुषाण) साम्राज्य के पतन के समय वृषगण के राजा शीलवर्मा ने जो महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी, उसके प्रमाण गढ़वाल, सहारनपुर और अम्बाला से प्राप्त अमोघभूति के असंख्यक सिक्के तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालसी के पास जगतग्राम से प्राप्त शीलवर्मा के चतुर्थ अश्वमेध यज्ञ से सम्बन्धित इष्टिका लेख हैं। तुर्क-आक्रमण के समय स्रुग्घ्न 'सपादलक्ष' नामक साम्राज्य की राजधानी थी जिसे पृथ्वीराज रासो में 'सवालष्ष' तथा मध्यकालीन मुसलिम इतिवृत्तों में 'सिवालिक' कहा गया है। सपादलक्ष का राजा अशोकमल्ल मध्यकालीन भारत का अन्तिम हिन्दू राजा था जिसने 'दिग्विजय' की थी। बोधगया से उसके शासन काल के तीन अभिलेख मिले हैं और एक अभिलेख गोपेश्वर से मिला है। बोधगया लेखों से ज्ञात होता है कि कमादेश (आधुनिक कुमाऊँ) का राजा पुरूषोत्तमसिंह और पीलीभीत का राजा छिंद अशोकमल्ल की अधीनता स्वीकार करते थे। उसने दिल्ली के सुलतान नासिरूद्दीन महमूद और गयासुद्दीन बलबन की सेनाओं को कई बार परास्त कर 1253 से 1280 ई० के लगभग बिहार में बोधगया पर अपना शासन कायम रखा। 1246 ई० की उसकी दिग्विजय भारतीय इतिहास की अन्तिम दिग्विजय है। तबकात-ए-नासिरी से ज्ञात होता है कि अपनी दिग्विजय के समय उसने 1246 ई० में बंगाल में लखनौती को घेरा था। मध्यकाल में उत्तरी भारत के लगभग अधिकांश विद्रोही अमीरों ने सिवालिक में शरण ली थी। विलियम फिंच नामक पर्यटक के अनुसार 1608 ई० तक 'कालसी' एक राजधानी थी।

हरिद्वार से बदरीनाथ तक की पर्वतीय भूमि 'हिमवत' ने उपनिषदों में वर्णित 'हैमवती विद्या' और बौद्धों के 'हैमवत सम्प्रदाय' को जन्म दिया। जातकों ने हिमवत को बोधिसत्त्वों की कर्मभूमि बतलाया है और महाभारत इसे देव, यक्ष, गन्धर्व और ऋषियों की तपस्थली मानता है। हिमवत में पंचबदरी, पंचकेदार और पंचप्रयाग-इन पन्द्रह प्राचीन तीर्थों के अतिरिक्त असंख्य प्राचीन मन्दिर, जलकुण्ड, नौले, धारे आदि के अवशेष यह संकेत करते हैं कि पुराकाल में इसे स्थापत्य और कला के माध्यम से एक देवभूमि के रूप में विकसित करने का प्रयास किया गया था। पौड़ी जिले के कोट विकास क्षेत्र के अन्तर्गत 'देवल' नामक ग्राम में अवशिष्ट प्राचीन "देवलाश्रम" के स्मारकों में कुछ पत्थरों पर मौर्यकालीन चमक (पालिस) और बिहार करते मोरों के अंकन यह संकेत करते हैं कि भारत के अन्य क्षेत्रों की तरह हिमवत में भी मौर्यकाल में निर्माण कार्य हुआ था। गणपतिनाग के गोपेश्वर त्रिशूल लेख से ज्ञात होता है कि गोपेश्वर का वर्तमान मन्दिर तीसरी सदी ई० में नाग राजाओं ने बनवाया था। तालेश्वर ताम्रपत्रों से विदित होता है कि पौड़ी जिले का विनसर (प्राचीन वीरणेश्वर) मन्दिर पाँचवीं सदी में पर्वतीय क्षेत्र का सबसे महत्त्वपूर्ण मन्दिर समझा जाता था और ब्रह्मपुर के सोमवंशी नरेश उसे अपना कुलदेवता मानते थे। लाखामण्डल (देहरादून) का गढ़केश्वर मन्दिर भी इसी अवधि का है। गढ़वाल के प्राचीन मन्दिरों में क्यार्क का नन्दा देवी मन्दिर, पाण्डुकेश्वर का योगबदरी मन्दिर, जोशीमठ का वासुदेव मन्दिर, पैठाणी का राहु मन्दिर और बड़कोट का सहस्रार्जुन मन्दिर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आदि बदरी की कामदेव मूर्त्ति, गोपेश्वर की अष्टधातु की वासुदेव कृष्ण की मूर्ति, जोशीमठ में धातु की गरुड़मूर्ति, क्यार्क की हरगौरी मूर्ति, लाखामण्डल की जय-विजय मूर्ति, पुजेली की बुद्ध मूर्ति और ऊखीमठ की सूर्यमूर्ति-इस क्षेत्र की विविध कला शैलियों की ओर संकेत करती हैं।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार 'हिमवत' से समुद्र तक की भूमि को चक्रवर्ती क्षेत्र माना जाता था। इसी कारण प्राचीन भारत में चक्रवर्ती सम्राट बनने की लालसा से की जाने वाली दिग्विजय की अन्तिम सीमा बदरीनाथ मानी जाती थी। कोटषाड़ा, चन्द्रवदनी, हाट आदि स्थानों पर सुरक्षित श्रीनगरपुर के रजवारों की राजमुद्रा में "बदरीनाथो विजयते दिग्विजयी सर्व्वदा" का अंकन भी यह स्पष्ट करता है कि प्राचीन भारत में दिग्विजयी सम्राट अपनी सेनाओं सहित हिमवत् में गंगोत्री केदारनाथ और बदरीनाथ तक आये होंगे। कालीदास ने अपने रघुवंश महाकाव्य में दिग्विजय के समय रघु के हिमालय में आने तथा पर्वतीय गणों के साथ उसके युद्ध का उल्लेख किया है। प्रतिष्ठान के सातवाहन राजा गौतमीपुत्र शातकर्णी को हिमवत, मन्दसौर के औलिकर राजा यशोधर्मन को गंगोत्री तथा गौड़ के राजा धर्मपाल को केदारनाथ तक दिग्विजयी सेना को ले जाने का श्रेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया है। राजावली के अनुसार 57 ई० पू० में विक्रम संवत को चलाने वाला मालवराज विक्रमादित्य भी अपनी दिग्विजय के समय बदरीनाथ आया था। कार्त्तिकेयपुर के खष राजा ललितशूर पद्मटदेव के बदरीनाथ ताम्रपत्रों में भी दिग्विजय का दावा किया गया है। सुभिक्षपुर के राजा सुभिक्षराज के बदरीनाथ ताम्रपत्र में गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय का एक महान दानी शासक के रूप में उल्लेख है। हिमवत के पार हूणन्देश में हूणियों की सत्ता के विकास से गंगाघाटी का सामरिक महत्त्व बढ़ गया। हूणों को परास्त करने के उद्देश्य से भी भारत के विभिन्न भागों से सेनायें गंगाघाटी में आती रही हैं।

विगत दस वर्षों में गढ़वाल क्षेत्र के प्राचीन अभिलेखों और पुरातत्व की जानकारी ने भारतीय इतिहास के अध्ययन को एक नये धरातल पर प्रस्तुत किया है। हूणराजा श्रीगुह के उत्तरकाशी शक्तिलेख, मौखरी सर्ववर्मा के सिरोली लेख, कल्याणवर्मन के पलेठी (देवप्रयाग) लेख तथा गणपतिनाग के गोपेश्वर त्रिशूल लेख ने प्राचीन भारत के इतिहास की अनेक उलझी गुत्थियों को ही नहीं सुलझाया अपितु ऐतिहासिक प्रवाह को भी सैद्धान्तिक स्वरूप प्रदान किया है। राणीहाट के पास प्राचीन 'मानपुर' और मोरध्वज के समीप प्राचीन 'मयूरनगर' के उत्खनन से सभ्यता के नये सोपान सामने आ रहे हैं।

बदरीनाथ का यात्रापथ भारत का सबसे प्राचीन पर्यटन मार्ग है और भारत की सॉस्कृतिक एकता का ज्वलन्त प्रमाण है। केरल के शंकराचार्य, पंजाब के गुरू गोविन्द सिंह, महाराष्ट्र के समर्थ गुरू रामदास, असम के कवि शंकर, दक्षिण के रामानुज और वल्लभाचार्य आदि के बदरीनाथ यात्रा के विवरण यह स्पष्ट करते हैं कि भारत के हर इलाके से लोग यहाँ आते थे। रामकथा संम्बंधी ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि सेतुबन्ध रामेश्वर की स्थापना से पूर्व दूर दक्षिण से एक तपस्विनी महिला बदरिकाश्रम की यात्रा को गई थी। महाभारत और विष्णुपुराण में मुचुकुन्द, पान्डव और उद्धव की बदरिकाश्रम यात्रा के वृतान्त यह स्पस्ट करते हैं कि कलि संवत की स्थापना (3102 ई०पू०) से पहले ही बदरिकाश्रम की यात्रा लोकप्रिय हो चुकी थी। प्राचीन भारत के विचारक अपनी मान्यताओं को फैलाने के लिए बदरिकाश्रम के मार्ग पर किसी नैसर्गिक सुषमा से युक्त स्थान में अपना केन्द्र बना लेते थे और तीर्थयात्रियों के माध्यम से अपने विचारों को देशभर में फैलाने में सफल हो जाते थे। कालसी में गौतमबुद्ध ने और जोशीमठ में जगद्गुरु शंकराचार्य ने इसी तरह के केन्द्र स्थापित किए थे जो दीर्घकाल तक बौद्ध और अद्वैत शिक्षा के केन्द्र रहे।

बदरी-केदार यात्रापथ पर गोपेश्वर के पास 'नागपुर' और टंकणी के पास 'टंकणपुर' नामक नगर व्यापार और पर्यटन की दृष्टि से विशेष प्रसिद्ध रहे हैं। टंकण सोने के व्यापारी थे और टंकणपुर अपनी समृद्धि के लिए प्रसिद्ध था। चीनी पर्यटक ह्वेनसांग के अनुसार आधुनिक नन्दादेवी शिखर और रूपकुन्ड का क्षेत्र पुराकाल में सुवर्ण के लिए ख्याति प्राप्त कर चुका था। जिस तरह रूपकुन्ड के असंख्य नरकंकाल आज नृशास्त्रवेताओं के लिए रहस्य बने हुए हैं, उसी तरह प्राचीनकाल में 'स्त्रीराज्य' के रूप में रूपकुण्ड रहस्य बना हुआ था। रुद्रप्रयाग से रुद्रनाथ तक फैला नागपुर क्षेत्र शैव सभ्यता के आदि केन्द्रों में से एक है। नन्दी-वंश अथवा भारशिव वंश के नाग राजाओं की वंशावली गोपेश्वर के त्रिशूल लेख में मिल जाने से भारतीय इतिहास में 'अंध-युग' नामक प्रकरण सदा के लिए अब समाप्त हो गया है। गढ़वाल में लाखामन्डल, कोट बाड़ा, जगतग्राम और राणीहाट की तरह गोपेश्वर में भीं बहुत मात्रा में प्राचीन ईटें मिलती हैं।

मध्यकाल में नागपुर और टंकणपुर के पतन के बाद जोशीमठ इस क्षेत्र का राजनैतिक केन्द्र बन गया। कत्यूरी राजा आसन्तिदेव ने राजधानी जोशीमठ से हटाकर 'बैराट' में स्थापित की और बदरी-केदार क्षेत्र की रक्षा के लिए चाँदपुर में धारा के एक पँवार राजकुमार को नियुक्त किया। उस समय इस क्षेक्ष में बावन छोटे-छोटे 'गढ़' थे जिस कारण इसे 'गढ़-देश' कहा जाता था। प्रत्येक गढ़ का प्रधान 'राजा' कहलाता था। कनकपाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बारह गढ़ का शासन दिया गया था अतः उसका राज्य 'गढ़वार' कहलाया। उसके अधीन पहिले बारह गढ़ों के राजा थे बाद में सभी ने श्रीनगर की अधीनता स्वीकार करली। उसे 'रजवार' की उपाधि भी मिली थी। देव प्रयाग और चन्द्रवदनी के लेखों में पँवारवंश के राजा मानशाह, सहीपतिशाह, पृथ्वीपतिशाह, फतेपतिशाह और प्रद्युम्नशाह को 'रजवार' कहा गया है। 'गढ़वार' शब्द ही लोक में गढ़वाल नाम से प्रचलित है। संस्कृत में गढ़देश और केहारखण्ड नाम अधिक प्रचलित हैं। मौलाराम और रतन नामक श्रीनगर के कवियों ने अपने काव्य में 'गढ़वार' और गढ़वाल-दोनों शब्दों का प्रयोग किया है।

सन 1791 में गोरखों ने गढ़वाल की लंगूर गढ़ी पर आक्रमण कर दिया था। यहां पर किला बहुत मजबूत था जिसके अन्दर घुसने में आक्रमणकारी सफल हो गए। लेकिन महाराजा जयकृत शाह की सेना ने ऐसा घेरा डाला कि गोरखे बारह महीने तक बाहर न निकल सके। इसी बीच चीन ने नेपाल पर आक्रमण कर दिया। अतः सन 1792 ई० में गोरखों ने गढ़वाल नरेश से सन्धि कर ली। इस सन्धि के अन्तर्गत गढ़वाल का राजा नेपाल को 3000 रुपये वार्षिक इस शर्त पर देने को तैयार हो गया कि वे फिर कभी गढ़वाल पर आक्रमण नहीं करेंगे। इस बार नेपाल की सेना वापिस लौट गई।

सन 1795 ई० में नेपाल के कुँवर रण बहादुर ने अपने चाचा बहादुर शाह को कैद कर नेपाल की गद्दी पर अधिकार जमा दिया। उसके मंत्री, सरदार और स्वयं उसकी पत्नी भी इस कार्य से रण बहादुर से बहुत रुष्ट हो गये। रण बहादुर भाग कर बनारस चला गया जहां सन 1800 ई० में उसने अंग्रेजी शासन के पास शरण ले ली। नेपाल में रानी का शासन स्थापित कर दिया गया।

सन 1803 में गढ़वाल में भयानक भूकंप आया। स्थान स्थान पर गांव तथा खेत नष्ट हो गए और सारे राज्य में अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई। मंत्रियों एवं राजदरबारियों की स्वार्थपरता तथा आपसी वैमनस्य के कारण श्रीनगर षडयंत्रों का केन्द्र बन गया। डोभाल तथा खण्डूड़ी आपस में लड़ने लगे। प्रजा पर अनेक प्रकार से अत्याचार होने लगे और नये नये कर लगा दिये गये राजा स्वयं न तो दूरदर्शी था और न ही बुद्धिमान। वह अपने दरबारियों की कठपुतली मात्र बन गया था।

कृपाराम डोभाल, जो तत्कालीन दीवान था, उसने राजा के कार्यालय प्रभारी नित्यानन्द खंडूड़ी की आंखें निकलवा दी थीं। रामा और धरणी खडूड़ियों ने कृपाराम को मरवा दिया। कृपाराम के रिश्तेदारों ने अन्त में रामा और धरणी की भी हत्या करवा दी। इसी खंडूड़ी परिवार में बैजू खंड्ड़ी की नेपाली पत्नी, जो नेपाल के राज गुरु की पुत्री थी, ने बहुत दुखी होकर नेपाल राजा के सम्मुख दुहाई दी और बदला लेने की प्रार्थना की। उधर गढ़वाल नरेश ने नेपाल नरेश को वार्षिक कर भी नहीं भेजा था। अतः इन दोनों कारणों से प्रभावित होकर नेपाल की सेना ने सन 1803 में गढ़वाल पर पुनः आक्रमण कर दिया।

यह आक्रमण अमरसिंह थापा और नेपाल नरेश के चाचा हस्तीदल चोतरिया के नेतृत्व में हुआ। श्रीनगर आपसी वैमनस्य से पहले ही से कमजोर हो गया था अतः गोरखों को श्रीनगर पर विजय प्राप्त करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई। राजा भागकर देहरादून की ओर चला गया। 14 मई 1804 को देहरादून में लड़ाई में लड़ते समय माथे पर गोली लगने से राजा की मृत्यु हो गई और सम्पूर्ण देहरादून तथा श्रीनगर पर गोरखों का आधिपत्य हो गया।

गोरखों ने अपने शासनकाल में गढ़वाल की जनता पर बहुत अत्याचार किए। उन्होंने अपने अत्याचारों में महिलाओं तथा बच्चों को भी नहीं बख्शा। जनता पर नये नये कर लगाये गए। अब नये राजा सुदर्शन शाह ने टिहरी को अपनी राजधानी बना लिया था। उन्होंने अंग्रेजों से सहायता मांगी। पहली नवम्बर 1814 को अंग्रेजों तथा गोरखों में युद्ध हुआ। जनरल जिलेस्पी के नेतृत्व में लड़ रही अंग्रेजी फौज ने 30 नवम्बर 1814

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को गोरखों को गढ़वाल से खदेड़ दिया। सिगौली की सन्धि के अन्तर्गत रुद्र प्रयाग से लेकर मन्दाकिनी के पूर्व का समस्त हिस्सा तथा दक्षिण में गंगा—अलकनन्दा से पूर्व का समस्त गढ़वाल तथा देहरादून का सारा मैदानी तथा पर्वतीय भाग को अंग्रेजी राज्य में मिला दिया गया और बचे हुए राज्य पर महाराजा सुदर्शन शाह का अधिकार हो गया। गढ़वाल को कुमाऊँ कमिश्नरी के अन्तर्गत रख कर अंग्रेजों ने यहां की शासन व्यवस्था धीरे धीरे अपने अनुकूल बनाने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी। सन 1840 में ब्रिटिश गढ़वाल का मुख्यालय श्रीनगर से पौड़ी स्थानान्तरित कर दिया गया। गढ़वाल में अंग्रेजी शासनकाल का इतिहास मूलतः स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास है जिसकी अलग से रूप रेखा दी गई है।

गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त

समारोह के अवसर पर

हार्दिक अभिनन्दन

सरस्वती पुस्तक भंडार

श्रीनगर गढ़वाल

हर प्रकार की पाठ्य पुस्तकों एवं सन्दर्भ ग्रंथों के अधिकृत विक्रेता

दूरभाष—89

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजी शासन काल और गढ़वाल में स्वतंत्रता आन्दोलन

गढ़वाल के इतिहास में सन 1804 से 1815 तक का समय 'गौरख्याणी' के नाम से प्रसिद्ध है। गोरखों ने अपने शासन काल में इस क्षेत्र पर अमानवीय अत्याचारों एवं यातनाओं की झड़ी लगा दी थी। गोरखों की पराजय के बाद गढ़वाल के दो हिस्से कर दिये गए—देहरादून, वर्तमान पौड़ी गढ़वाल तथा चमोली जिलों पर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थापित हो गया तथा वर्तमान टिहरी गढ़वाल और उत्तरकाशी जिलों का सम्मिलित स्वरूप टिहरी गढ़वाल की एक देशी रियासत कहलाई जाने लगी। गढ़वाल में अंग्रेजी राज्य की स्थापना से गोरखा शासन के आतंक की समाप्ति हो गई थी अतः उस समय गढ़वालियों की अंग्रेजों के प्रति किसी प्रकार की दुर्भावना न होकर सम्मान की भावना ही अधिक रही। अंग्रेजों ने भी गढ़वालियों की वीरता एवं कर्त्तव्य निष्ठा से प्रभावित होकर उन्हें सेना में भरती करने की एक विशेष योजना बनाई।

बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में अंग्रेज शासकों ने पर्वतीय क्षेत्र के जंगलों की नई प्रशासन व्यवस्था प्रारम्भ करके स्थानीय जनता के परंपरागत चले आ रहे अधिकारों पर कुठाराघात कर दिया। गाँवों के निवासियों को जंगलों से मिलने वाली निशुल्क सुविधाएँ जिनमें जानवरों के लिए चारा, जलाने के लिये, खेतों में काम तथा मकान बनाने के लिए आवश्यक लकड़ियों की उपलब्धि थीं—सब अचानक बन्द कर दिये गये। कृषि और पशु-पालन पर जीविका चलाने वाले गढ़वाली ग्रामीणों ने एक जन-आन्दोलन में भरपूर सहयोग दिया जिसे जंगलात आन्दोलन की संज्ञा दी जाती है।

अंग्रेजों और उनके बड़े-बड़े अधिकारियों की पालकी ढोने, उनका सामान उठाने और यहां तक कि उनके जूते व 'कमोट' भी सिर पर उठा कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना निशुल्क कुली-बेगार प्रथा कहलाती थी। ये सारा कार्य जिस क्षेत्र में अंग्रेज अधिकारी अथवा उनके मातहत भारतीय अधिकारी का दौरा होता था वहां की ग्रामीण जनता को जबरदस्ती करना पड़ता था। जब लार्ड कर्जन इस सदी के प्रारम्भ में भारत पधारे थे तो उन्हें गढ़वाल की बधाण पट्टी के जेठा ग्राम तक ले जाया गया। एक महीने से भी अधिक समय तक लगभग 80 से 100 किलोमीटर की दूरी तक बसे सभी गांवों के लोग इस कुली–बेगार पर बिना किसी प्रतिरोध के कार्य करते रहे। जंगलात व्यवस्था के नवीनीकरण से उत्पन्न जन-क्षोभ ने कुली–बेगार प्रथा के विरुद्ध भी जन मानस के बीच एक नई राजनैतिक चेतना उत्पन्न कर दी। गढ़वाल में स्वतंत्रता संग्राम का श्रीगणेश इस प्रकार बीसवीं सदी के दूसरे दशक में ही माना जाना चाहिए। नरम दलीय विचारधारा रखने वाले मगर समय पड़ने पर सरकार की कटु आलोचना में प्रखर श्री तारादत्त गैरोला ने प्रान्तीय कौंसिल में कुली-बेगार प्रथा का पूरा-पूरा विरोध किया।

सन 1930 की 22 अप्रैल को पेशावर में अंग्रेजों की सेना में नियुक्त कुछ गढ़वाली सैनिकों ने जिनके नेता हवलदार चन्द्रसिंह 'गढ़वाली' थे निहत्थे कांग्रेस स्वयं सेवक पठानों पर गोली चलाने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में इतनी प्रभावशाली घटना सन 1857 के बाद पहली बार घटी थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैनिक न्यायालय ने इन एक बटालियन के सभी सैनिकों को जो सारे के सारे गढ़वाली थे 3 से लेकर 20 वर्षों तक की कठोर कारावास की सजायें दी। हवलदार चन्द्रसिंह गढ़वाली को आजन्म काला पानी की सजा दी गई।

दूसरे महायुद्ध में भी भारतीय सेना के लगभग 23266 सैनिकों ने भारत की सीमाओं से बाहर आई० एन० ए० की स्थापना की थी जिसमें 2500 के लगभग गढ़वाली सैनिक भी सम्मिलित हुए। मेजर देवसिंह दानू नेताजी के अंगरक्षक थे और श्री चन्द्रसिंह नेगी, श्री पितृ शरण रतडी तथा श्री बुद्धिसिंह रावत सभी इस सेना में लेफ्टीनेन्ट कर्नल के पद पर कार्य करते रहे।

गढ़वाल के कुछ नवयुवक क्रांतिकारियों के साथ भी मिले हुए थे। नाथूपुर दुगड्डे के श्री भवानीसिंह रावत अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद को कुछ दिनों अपने गांव पर लाये थे जहां भाबर के एकान्त जंगल में पिस्तौल चलाने का अभ्यास किया गया था।

गढ़वाल में गढ़ केशरी श्री अनुसूया प्रसाद बहुगुणा ही सर्वप्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने अपने को अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का सदस्य घोषित किया। सन 1919 में श्री मुकन्दी लाल जब बैरिस्टर बन कर इंगलैंड से लौटे तो उन्होंने बहुगुणा जी के साथ गढ़वाल में राष्ट्रीय कांग्रेस संगठन को मजबूत बनाने का प्रयत्न किया। उन्हीं दिनों गढ़वाल तथा कुमायूं में कुली–बेगार प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन तेज कर दिया गया। गान्धी जी द्वारा चलाये गए सत्याग्रह आन्दोलन के सन्दर्भ में सर्व श्री भोलादत्त चन्दोला, भोलादत्त डबराल, भैरवदत्त धूलिया, जीवानन्द बडोला, तथा गोवर्द्धन बडोला जो बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे, अपनी पढ़ाई छोड़ कर गढ़वाल चले आये। लखनऊ से श्री मथुराप्रसाद नैथानी भी गढ़वाल आ गये और इन सबने मिलकर सत्याग्रह आन्दोलन का संचालन किया। चौदकोट में श्री केशरसिंह रावत ने; मल्लासलाण में श्री ईश्वरीदत्त ध्यानी, हरिदत्त बौडाई, मंगतराम खंतवाल और योगेश्वर बहुखंडी ने; गंगासलाण में श्री उत्तमसिंह नेगी, गंगासिंह थोकदार और डाक्टर मुकन्द सिंह ने; तथा चमोली में श्री अनुसूया प्रसाद बहुगुणा और शिवसिंह ने कुली–बेगार प्रथा के विरुद्ध अपना अभियान उग्रतर बना दिया। इसका परिणाम ये हुआ कि जनता ने बेगार देना बन्द कर दिया। अंग्रेज कलक्टर का सामान नौगाँव खाल में पड़ा रहा और विद्रोह उकसाने के लिए श्री केशरसिंह रावत को दो वर्ष का कारावास भुगतना पड़ा। कई अन्य साथियों को भी भिन्न-भिन्न सजायें दे कर जेलों में डाल दिया गया। मगर गढ़वाल और कुमायूं से कुली–बेगार प्रथा का कलंक सदा-सदा के लिए मिट गया।

सन् 1929 में गढ़वाल में भी असहयोग आन्दोलन ने ज़ोर पकड़ा। सर्व श्री प्रतापसिंह नेगी, जगमोहनसिंह नेगी, कृपाराम मिश्र मनहर, रामप्रसाद नौटियाल, देवकी-नन्दन ध्यानी आदि ने सत्याग्रह की रूपरेखा बनाई। 9 जून सन् 1930 को पौड़ी में कुमायूं-केशरी श्री हरगोविन्द पन्त की अध्यक्षता मे कुमायूं परिषद का सम्मेलन हुआ जिसमें गढ़वाल के लिए सत्याग्रह समिति के जीवानन्द डोभाल अध्यक्ष, भोलादत्त चन्दोला मंत्री तथा प्रतापसिंह नेगी संचालक नियुक्त किए गए। कुछ दिनों बाद सितोनस्यूँ कोट में एक राजनैतिक सम्मेलन हुआ जिसमें नरदेव शास्त्री, महावीर त्यागी तथा हरगोविन्द पन्त भी सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन के बाद गढ़वाल में सत्याग्रह आन्दोलन बहुत तेज हो गया। जगह-जगह विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जाने लगी, शराब की भट्टियों पर धरना दी गई, तथा भूमि बन्दोबस्त के विरुद्ध प्रचार किया जाने लगा—विशेष कर एक रुपये किश्त पर बढ़ायी गई पाँच आना रकम सत्याग्रहियों के कोप का भाजन बनी। इस आन्दोलन के कारण श्री प्रतापसिंह नेगी, श्री देवकीनन्दन ध्यानी तथा श्री अनुसूया प्रसाद बहुगुणा को जेल की सजा भुगतनी पड़ी। श्री प्रतापसिंह नेगी के गिरफ्तार हो जाने के कारण श्री जगमोहनसिंह नेगी सत्याग्रह के संचालक नियुक्त कर दिये गए।

इसी वर्ष कन्डोलिया में गढ़वाल के तत्कालीन कलक्टर इबटसन पर कंकड़ फेंकने के अपराध में महेशानन्द थपलियाल, लोकानन्द नौटियाल, जीवानन्द डोभाल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोलादत्त चन्दोला, कोतवाल सिंह नेगी, भिल्लेश्वरानन्द डोभाल आदि 18 व्यक्ति गिरफ्तार करके तीन तीन महीने के लिए कारावास में डाल दिए गये।

अक्तूबर 1930 में यमकेश्वर की एक सभा में धारा 144 तोड़ दी गई और श्री जगमोहन सिंह नेगी, श्री छवाणसिंह नेगी तथा रूपचन्द उनियाल सहित 18 व्यक्ति गिरफ़्तार कर दिये गये। इसी सत्याग्रह में श्री कृपाराम मिश्र मनहर, सकलानन्द शास्त्री, राम प्रसाद नौटियाल, मदनमोहन काला, विष्णुसिंह रावत, योगेश्वर बहुखंडी, भक्तदर्शन आदि अनेक कार्यकर्ताओं को भी कारागार में बन्द कर दिया गया। श्री गोकुलसिंह नेगी ने भूमिगत होकर इस आन्दोलन का सफल संचालन कई वर्षों तक किया और 1941 में ही इन्हें गिरफ्तार किया जा सका। गांधी-इरविन समझौते के उपरान्त ही इन सत्याग्रहियों को जेल से मुक्ति मिल सकी। 6 सितम्बर 1932 के दिन पौड़ी में तत्कालीन गवर्नर मैलकम हेली को श्री जयानन्द भारतीय ने काला झंडा दिखलाकर अपने को जेल में डलवाया। उनके साथ कई व्यक्ति भिन्न भिन्न स्थानों पर सत्याग्रह करके जेल में चले गये।

स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाले कई कुशल एवं योग्य गढ़वाली कार्यकर्त्ता स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व ही जेल की अनेक यातनाओं के फलस्वरूप गिरते हुए स्वास्थ्य के कारण असामयिक मृत्यु के शिकार हुए यथा श्री भोलादत्त चन्दोला, सुन्दर लाल शास्त्री, लीलानन्द डबराल, अनुसूया प्रसाद बहुगुणा तथा कोतवालसिंह नेगी।

गढ़वाल से बाहर जिन लोगों ने स्वतन्त्रता संग्राम में अपना अमूल्य योगदान किया उनमें श्री महीधर शर्मा बड़थ्वाल थे। बड़थ्वाल जी ने सन 1936 में दिल्ली में गढ़देश सेवा संघ की स्थापना की। वे स्वयं पक्के कांग्रेसी थे। उन्हीं के सम्पर्क में आने पर श्री देव सुमन विशुद्ध राष्ट्रीय विचार धारा से प्रभावित होकर धार्मिक संकीर्णता के प्रभाव से मुक्त हुए।

कोटद्वार के श्री धनीराम मिश्र एवं उनके परिवार ने स्वतन्त्रता संग्राम में अपना पूरा पूरा सहयोग दिया। श्री कृपाराम मिश्र सन 1928 से ही गढ़वाल कांग्रेस के एक प्रमुख संगठन कर्ता थे। 1930 में डुगड्डा में हुए राजनीतिक सम्मेलन में नेहरू जी सम्मिलित हुए थे और इस सम्मेलन की सफलता का सारा श्रेय श्री कृपाराम मिश्र तथा प्रतापसिंह नेगी को जाता है।

सन 1942 के आन्दोलन में गढ़वाल में अनेक स्थानों पर जलूस निकाले गये। प्रत्येक शहर तथा बड़े गांव में सभायें आयोजित की गई। 'अंग्रेजो भारत छोड़ो', 'भारत माता की जय' तथा 'महात्मा गांधी की जय' के नारों से पर्वत शिखर एवं घाटियां गूंज उठीं। अनेक युवा एवं वृद्ध इस आन्दोलन में कूद पड़े। गढ़वाल से बाहर दो क्रांतिकारियों ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा ने इलाहाबाद में युवक आन्दोलन का नेतृत्व किया और गिरफ़्तारी से बचने के लिए भूमिगत हो गए। उनको गिरफ्तार करने के लिए दस हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया। जब वे दिल्ली की जामा मस्जिद इलाके में गिरफ्तार हुए तो उन्हें सीतापुर जेल भेज दिया गया जहां उन्हें अनेक यातनायें दी गई फलस्वरूप उन्हें प्लूरिसी का शिकार होना पड़ा। सन 1945 में जब उनका स्वास्थ्य बहुत अधिक गिर गया तो उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। गढ़वाल में जन्म लेकर बहुगुणा जी ने अपने व्यक्तित्व को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचा कर इस भूमि को गौरवान्वित किया है। डा० कुशलानन्द गैरोला ने भी सन बयालीस के आंदोलन में बनारस से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे प्रारम्भ में भूमिगत होकर कार्य करते रहे मगर उन्हे भी अन्त में गिरफ्तार कर लिया गया।

टिहरी रियासत में स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास का शुभारम्भ 1939 में देहरादून में प्रजा मंडल की स्थापना से हुआ। कुछ युवकों ने इस आन्दोलन को टिहरी रियासत के अन्दर ले जाने के उद्देश्य से 1950 में लम्बगांव नामक स्थान पर सरस्वती ऐंलो वर्नाक्यूलर स्कूल की स्थापना की। इस विद्यालय को स्थापित करने में सहयोग श्री रतीराम मालदार, काशीसिंह रांगड़, ध्यानसिंह पवार तथा कन्हैया लाल रांगढ़ ने अपना अमूल्य सहयोग दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस विद्यालय के प्रथम अध्यापक श्री रामस्वरूप रतूडी थे। इस विद्यालय के माध्यम से टिहरी में जितने लोग राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े उनके नाम है—श्री नत्थासिंह कश्यप, श्री खुशहालसिंह रांगड तथा लक्ष्मी प्रसाद पैन्यूली। सन 1942 में टिहरी गढ़वाल में सबसे अधिक लोग लम्बगांव के निकटवर्ती क्षेत्र में ही गिरफ्तार हुए थे।

टिहरी गढ़वाल के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों में श्री देव सुमन का नाम बरबस स्मृति पटल पर छाने लगता है। सन 1937 में जब स्व० जवाहर लाल नेहरू गढ़वाल आये तो श्रीनगर में हुए राजनैतिक सम्मेलन में टिहरी रियासत का प्रतिनिधित्व श्रीदेव सुमन ने ही किया था।

श्रीदेव सुमन टिहरी प्रजामंडल के संस्थापक थे। उनके अन्य साथी थे श्याम चन्द नेगी, शंकरदत्त डोभाल, भगवती प्रसाद पाँथरी, आनन्दशरण रतूडी आदि। देव प्रयाग के गढ़वाल स्थित भाग में 'श्री भगवती चरण निर्मोही तथा श्रीलाल थपलियाल ने भी टिहरी प्रजामंडल का आन्दोलन आगे बढ़ाने में सक्रिय सहयोग दिया। लैंसडाउन/कोटद्वार से प्रकाशित होने वाली साप्ताहिक पत्रिका 'कर्म भूमि' ने टिहरी के जन आन्दोलन को आगे बढ़ाने में विशेष भूमिका निभाई।

सन 1940 में रामचन्द्र उनियाल और रामप्रसाद बहुगुणा आदि नव युवकों ने टिहरी के अन्दर हाथ से लिखे हुए कुछ पर्चे वितरित किए जिसके कारण उन्हें जेल में डाल दिया गया।

सन 1942 में श्रीदेव सुमन को गिरफ्तार कर आगरा जेल भेज दिया गया। टिहरी के अन्दर राज बन्दियों के ऊपर अमानवीय अत्याचारों की सूचना जब श्रीदेव सुमन को मिली तो उन्होंने सन 1944 में जेल से छूटने पर टिहरी में सत्याग्रह करने का निश्चय किया। 84 दिन की ऐतिहासिक भूख हड़ताल के बाद टिहरी जेल में जब 5 जुलाई को उनकी मृत्यु हो गई तो उनका शव रात को गंगा में प्रवाहित कर दिया गया और उसे उनके संबंधियों को भी नहीं दिया गया।

टिहरी गढ़वाल के स्वतन्त्रता संग्राम में दादा दौलत राम का भी विशेष योगदान रहा है जिन्होंने डॉगचौरा और कड़ाकोट की जनता को भूमि बन्दोबस्त तथा किश्त वृद्धि के खिलाफ आन्दोलत करने के लिए उकसाया। 11 जनवरी 1948 का दिन टिहरी के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगा जब दो क्रान्तिकारी मोलूसिंह तथा नागेन्द्रदत्त सकलानी जनता का नेतृत्व करते हुए राजा के सैनिकों की गोली से अमरत्व को प्राप्त हो गये। इसी दिन टिहरी की जनता ने राजसत्ता को समाप्त कर लोकतन्त्र की स्थापना करके इस पिछड़े तथा अविकसित क्षेत्र को एक नये पथ पर रखकर उसके लिए विकास के सारे द्वार खोल दिये।

गढ़वाल के समस्त जन आन्दोलनों को सफलता के सोपान पर उठाने का कुछ श्रेय यहाँ के निर्भीक एवं योग्य पत्रकारों को भी जाता है। गढ़वाली पत्रकारों में सबसे प्रथम स्थान स्वर्गीय गिरिजादत्त नैथानी को दिया जाता है जिन्होंने 1902 में 'गढ़वाल समाचार' पत्र का सम्पादन किया जिसका कार्यालय लैंसडाउन, कोटद्वार तथा दुगड्डा में स्थानान्तरित होता रहा। सन 1905 में उन्होंने एक अन्य साप्ताहिक पत्र 'पुरुषार्थ' निकाला जो कई वर्षों तक अपनी प्रौढ़ सामग्री एवं विवेकपूर्ण टिप्पणियों के लिए प्रसिद्ध रहा। हिन्दी के सर्व प्रथम डी० लिट० एवं मूर्धन्य आलोचक तथा लेखक डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल का भी इस पत्र के संपादन से सम्बन्ध रहा। सन 1905 में देहरादून से 'गढ़वाली' साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ जिसके सम्पादक भी श्री गिरिजादत्त नैथानी ही थे। बाद में पं० तारादत्त गैरोला तथा श्री विश्वम्भरदत्त चन्दोला ने गढ़वाली का सम्पादन कार्य किया। ये पत्र सन 1933 तक चन्दोला जी के सम्पादकत्व में लगातार निकलता रहा।

श्री गिरिजादत्त नैथानी के प्रायः सभी पत्रों को श्री तारादत्त गैरोला का संरक्षण प्राप्त था। मगर गैरोला जी की सरोला-समर्थक नीति का नैथानी जी बड़ी रोचक एवं व्यंगात्मक भाषा में विरोध करते थे। एक बार गैरोला जी के एक सरोला-समर्थक वक्तव्य को उन्होंने "सरोला-सर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मंडूक की टर-टर' शीर्षक से छापा जिसकी व्यंगपूर्ण शैली एवं स्पष्टवादिता की स्वयं गैरोला जी ने हँसते हुए प्रशंसा की। श्री गिरिजादत्त नैथानी अपने समय के एक महान विचारक, प्रतिभा सम्पन्न पत्रकार तथा प्रखर राष्ट्रवादी विभूति थे।

श्री विश्वम्भरदत्त चन्दोला ने सन 1930 में टिहरी राज्य के रवाँई क्षेत्र में हुए लोमहर्षक गोली कांड के विरुद्ध "गढ़वाली" में जो कुछ सत्यता पूर्ण वृतान्त छापा उसके लिए उन्हें कारावास का दंड भी भुगतना पड़ा था। गढ़वाली पत्रकारिता के इतिहास में चन्दोला जी का योग दान अविस्मरणीय एवं अभूतपूर्व है।

पौड़ी से श्री ब्रह्मानन्द थपलियाल तथा श्री सदानन्द कुकरेती ने 'विशाल कीर्ति' नामक पत्र निकाला था। श्री महेशानन्द थपलियाल ने 'हृदय' नामक पत्र भी पौड़ी से प्रकाशित किया। कुछ दिनों श्री कमलसिंह नेगी के सम्पादकत्व में 'क्षत्रिय वीर' नामक पत्र चलता रहा। श्री मुकन्दीलाल ने 'तरुण-कुमाऊं' पत्र भी निकाला था जो केवल कुछ दिन ही चल सका। सन् 1929 में ऋषिकेश में श्री हरदेवसिंह एवं श्री धर्म स्वरूप रतूडी ने 'सत्यवीर' नाम से एक पाक्षिक पत्र निकाला। सन 1926 में कोटद्वार से श्री कृपाराम मिश्र ने 'गढ़देश' पत्रिका का प्रकाशन किया था। ये पत्रिका सन 1933 तक राष्ट्रीय कविताओं, लेखों और कहानियों के माध्यम से गढ़वाल की सुदूरवर्ती घाटियों में राष्ट्रीयता की भावना को फैलाती रही। सन 1933 में "गढ़वाली" तथा "गढ़देश" का एक साथ बन्द हो जाना गढ़वाली पत्रकारिता के लिए एक भयंकर आघात सिद्ध हुआ।

सन 1937 में श्री हरिराम मिश्र चंचल ने कोटद्वार से 'सन्देश' पत्र निकाला। चंचल जी ने बाद में "ललकार" "श्रमयुग", 'पहाड़ी पंच' तथा 'हिमालय की ललकार' जैसे अल्पजीवी पत्र भी निकाले। 'चंचल' जी की कविताएं कभी गढ़वाल के नवयुवकों के अन्दर एक नया उत्साह तथा नई-प्रेरणा भरने में पूर्ण सक्षम हुआ करती थीं।

सन 1939 में लैसडाउन से 'कर्म भूमि' का प्रकाशन गढ़वाली पत्रकारिता के इतिहास में एक नया आयाम लेकर प्रकट हुआ। इस पत्र के साथ पहिले श्री भक्त दर्शन, श्री भैरवदत्त धूलिया तथा श्री जगमोहन सिंह नेगी संबंधित रहे। बाद में श्री ललिता प्रसाद नैथानी तथा मधुर शास्त्री का भी इससे कुछ समय के लिए सम्बन्ध हो गया। मगर अन्ततः इसका सारा भार श्री भैरवदत्त धूलिया के कंधों पर ही पड़ गया। सन 1962 से इसका प्रकाशन कोटद्वार से हो रहा है। टिहरी तथा गढ़वाल के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में इस पत्र की अपनी अद्वितीय भूमिका रही है।

15 अगस्त 1947 से देहरादून से पाक्षिक 'युगवाणी' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ जिसे टिहरी प्रजामंडल को नई दिशा देने तथा उसके समाचारों को छापने के उद्देश्य से ही आचार्य गोपेश्वर कोठियाल, श्री भगवती प्रसाद पाँथरी तथा श्री तेजराम भट्ट के सम्पादकत्व में प्रारम्भ किया गया था। बाद में इसका सारा भार आचार्य कोठियाल के कंधों पर ही पड़ गया और पाक्षिक के स्थान पर ये अब साप्ताहिक रूप में लगातार निकल रहा है।

गढ़वाल में अगस्त 1947 से पूर्व तथा टिहरी में जनवरी 1948 से पूर्व जिन निर्भीक सम्पादकों एवं पत्रों ने स्वतन्त्रता संग्राम की खबरों को जन-जन तक पहुंचाने का महान कार्य किया उनकी अमूल्य सेवाओं का एक बार पुनर्मूल्यांकन करने की आवश्यकता हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाली वीरों की महान शौर्य परंपरा के तीन भिन्न रूप

प्राचीन काल से ही गढ़वाल अपने 'गढ़ों' और 'भड़ों' के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहाँ बावन गढ़ों के सरदार आपस में बहुत लड़ते रहते थे। अतः केवल शक्तिशाली व्यक्ति ही जिसे 'भड़' कहा जाता था किसी गढ़ का अधिपति बना रह सकता था। गढ़वाली लोक गीतों में आज भी इन भड़ों की अनेक वीर गाथायें सुरक्षित पाई जाती हैं। कुछ प्रसिद्ध गढ़वाली भड़ों के नाम हैं—कफ्फू चौहान, जगदेव पँवार, माधोसिंह भंडारी गठू सुमरियाल, भानुथ बाबा, रिखोला, रणू रौत, तीलू रोतेली, राजुला, लछमू कठैत, सिधुवा-विधुवा आदि।

गढ़वाल के इतिहास के ज्ञात अध्यायों में अनेक वीरों की शौर्य गाथायें सम्मिलित हैं मगर इन सबमें जो ऊँचाई वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली के अभूतपूर्व देश प्रेम, बलिदान एवं दृढ़ निश्चय ने प्राप्त की है उस पर कोई अन्य सूरमा चढ़ने में आजतक सफलता प्राप्त नहीं कर सका है। गढ़वाली शौर्य में केवल वीरता के लिए वीरता-प्रदर्शन की भावना नहीं होती। इस वीरता के पीछे कुछ न कुछ महान उद्देश्य होता है जिसके कारण वीरता की ये गाथायें एक महान आदर्श की स्थापना करने में सफल हो जाती है। पर्वतों की ऊँचाई–नीचाई और आवागमन के अवरोधों ने गढ़वाली चरित्र को कभी भी संकुचित दृष्टिकोण में नहीं बाँधा। उसमें हिमालय की ऊँचाई और हिमाच्छडित शिखरों की शुभ्रता का समावेश पूर्ण रूप से होता रहा है।

सन् 1857 की महान सैनिक क्रान्ति के बाद भारत की दूसरी बड़ी सैनिक क्रान्ति को जन्म देने का श्रेय पेशावर में अप्रैल 1930 की बाईसवीं तारीख के दिन 60 गढ़वाली सैनिकों और उनके नेता हवलदार चन्द्रसिंह गढ़वाली को जाता है। गढ़वाली सैनिकों ने उस दिन एक देशद्रोह पूर्ण अमानवीय कार्य करने से स्पष्ट रूप से इन्कार कर दिया था। वास्तव में जिस विचार धारा को दूसरे महायुद्ध के समय नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने आगे बढ़ा कर आइ० एन० ए० की स्थापना की थी उसके जन्मदाता वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली ही थे जिन्होंने कई वर्ष पूर्व सैनिक विद्रोह की आग सुलगा कर भारतीय सिपाहियों को वस्तविक देशप्रेम का पाठ पढ़ा दिया था।

अप्रैल 1930 में पेशावर काँग्रेस कमेटी ने गाँधी जी की आज्ञा से नमक कानून तोड़ने और विदेशी माल की होली जलाने का निश्चय किया। शाही बाग में एक विशाल जनसभा आयोजित की गई। 22 अप्रैल को सारे शहर में विशेष धरना देने तथा सत्याग्रह करने की योजना थी। गढ़वाली सैनिक निकट की छावनी में अपने नेता हवलदार चन्द्रसिंह गढ़वाली के नेतृत्व में गुप्त रूप से विचार विमर्श करते हुए देश में घट रही प्रत्येक गतिविधि से पूर्णतया विज्ञ थे। उन सबके हृदय में देश के लिए कुछ कर डालने की आग सुलग रही थी। उधर उस जन आन्दोलन को कुचलने के लिए गढ़वाली सैनिकों को आदेश दे दिए गये। बेकसूर अहिंसक जन–समुदाय पर गोली चलाने के आदेश को सैनिक टुकड़ी के नेता वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली ने मानने से इन्कार कर दिया। एक गुलाम देश के 60 गरीब सैनिकों ने जिन्होंने केवल पेट की खानिर विदेशी सत्ता की नौकरी स्वीकार की थी उस दिन अचानक सारे भयों से मुक्ति पा कर विश्व की सबसे बड़ी शक्ति से बगावत करने का जोखिम सहर्ष उठा लिया। वे सब यह अच्छी तरह जानते थे कि वे जो कुछ कर रहे थे उसके लिए उन्हें भयंकर से भयंकर परिणाम भुगतने पड़ सकते थे। और वही हुआ जिसकी उन्हें आशा थी। उन पर बगावत (म्यूटिनी) का आरोप लगाकर सारी सेकन्ड बटालियन को काकुल, अबटा बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की छावनी में गिरफ्तार कर दिया गया। फौजी अदालत ने सब पर अभियोग लगा कर मुकदमें दायर किये तथा उन्हें भिन्न-भिन्न प्रकार की सजायें सुनाई गई। सैनिक टुकड़ी के नेता वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली को आजन्म कालापानी की सजा दी गई और साथ में उनकी सम्पूर्ण सम्पत्ति जब्त करदी गई। उन्हें हवलदार से पदच्युत कर सिपाही बनाया गया और सिपाही के पद से सेना से बर्खास्त कर दिया गया। उनके बीबी बच्चे घर से बेघर हो गये और दाने-दाने के लिए तरसने लगे। वीर चन्द्रसिंह कालापानी की सजा भोगने अंडमान द्वीप समूह भेज दिए गए जहाँ के नारकीय जीवन से उन्हें भारत की स्वतन्त्रता से कुछ वर्ष पूर्व ही मुक्ति मिलसकी। आज वे कोटद्वार के पास एक गाँव में साधारण किसान का जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली का अभूत पूर्व देश प्रेम एवं बलिदान इस देश के नवयुवकों को युग युगों तक प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

गढ़वाली सूरमाओं के शौर्य के कई अन्य उदाहरण गढ़वाल के प्राचीन इतिहास में भी देखे जा सकते हैं। एक इसी प्रकार का व्यक्ति था माधौसिंह भंडारी जो राजा महीपति शाह का सेनापति था और जिसने गढ़वाल की सीमाओं से शत्रुओं को खदेड़ कर उन्हें अपनी विजय-पताकाओं से निश्चित कर दिया था। माधोसिंह की वीरता और साहस की कहानियां इतनी प्रचलित हो गई थीं कि लगभग अन्य दरबारी उससे बहुत ईर्ष्या करने लगे थे। अतः माधौसिंह को नीचा दिखलाने के प्रयास में उन्होंने चारों ओर यह प्रचार कर दिया कि किसी युद्ध में माधौ सिंह लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हो गया है। यह सुन कर माधोसिंह की मँगेतर उदीना के पिता ने अपनी पुत्री का ब्याह कहीं अन्यत्र करने का निश्चय कर दिया। उधर माधोसिंह निश्चिन्त होकर गढ़वाल की सीमा सुरक्षा के प्रबन्धों की देखरेख कर रहा था। माधोसिंह की कुल देवी चन्द्रवदनी से ये न देखा गया और उसने स्वप्न में माधो सिंह को दर्शन देते हुए सूचित किया—"तू इधर चैन की नींद सो रहा है जब कि तेरी मंगेतर को तो कोई और ही पालकी में बिठाकर अपनी दुलहन बना कर ले जाने के लिए तैयार है।" माधोसिंह तुरन्त जाग गया और उसने अपना घोड़ा सजाकर उच्छन्दन गढ़ पहुंचने की व्यवस्था ठीक कर ली। उच्छदनगढ़ पहुंच पर वहां बारात के सम्मुख उसने बहुत ही प्रभावशाली ढंग से गढ़वाल के प्रसिद्ध लोक नृत्यों का प्रदर्शन किया। सारे बाराती माधो सिंह के व्यक्तित्व एवं कलापूर्ण नृत्व भंगिभाओं से बहुत अधिक प्रभावित हो गये। दुलहन उदीना ने भी नृत्य देखा तो वह अपने प्रेमी को तुरन्त पहिचान गई। माधोसिंह भी जैसे प्रतीक्षा कर ही रहा था। उसने सभी को परास्त कर अपनी प्रेमिका की पालकी का रूख अपने गाँव मलेथा की ओर कर दिया। मलेथा आज भी देवप्रयाग से आगे श्रीनगर की ओर जाने वाली सड़क पर स्थित एक प्रसिद्ध गाँव है। तब मलेथा में समतल उपजाऊ भूमि और अच्छी गर्म जल वायु आदि सभी कुछ उपलब्ध था मगर सिंचाई के लिए पानी न मिल सकने के कारण न तो साग सब्जी ही पैदा की जा सकती थी और न बढ़िया बासमती का चावल ही उत्पन्न किया जा सकता था। बेचारी उदीना स्वंय तो दुखी थी ही उसे सारे गाँव की दशा पर भी दुख हो रहा था। अतः उसने माधोसिंह के सामने अपनी तथा सारे गाँव की कठिनाई रख दी। माधोसिंह वीर होने के साथ-साथ उदार एवं लोक कल्याण की भावना से ओत प्रोत विचारों वाला महापुरुष भी था। उसने पहाड़ की कटाई शुरू कर दी। पहाड़ पर सुरंग खोदकर डाँगचौरा नदी से पानी लाने के लिए एक लम्बी ढलुवां नहर बना दी गई। अनेक प्रयत्न करने के बाद भी नदी का पानी नहर से नहीं बह पा रहा था। अतः यह समझा गया कि शायद भगवती चन्द्रवदनी का भैरव सदानन्द इस पानी को नहर से होकर बहने में रोक रहा है। अतः सदानंद को परास्त करने के लिए माधोसिंह ने अपना सबसे बड़ा लड़का गजेसिंह भेजा। गजेसिंह भी अपने पिता कें सदृश वीर था। उसने भैरव सदानन्द को परास्त कर दिया मगर फिर भी नहर पर पानी नहीं चढ़ पाया। अतः अब में पता लगा कि उस क्षेत्र की भैरवी किसी की नर बलि

112735

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहती है और बिना नर बलि के नहर पर पानी नहीं चढ़ सकता। माधोसिंह के पास और कोई चारा न था। उसने अपने बड़े बेटे गजेसिंह को भैरवी की प्रसन्नता हेतु बलिदान कर दिया। आगे-आगे गजेसिंह के रक्त की धार बह चली जिसका अनुसरण करता हुआ डाँगचौरा गाड का पानी नहर के ऊपर निर्बाधगति से बहने लगा। माधोसिंह ने लोक कल्याण के लिए अपनी सबसे प्रियवस्तु का अन्त अपने हाथों किया। माधोसिंह आज जीवित नहीं है मगर आज उसकी यह कथा उसे अमर बना गई है और अमर है मलेथा की वह 'गूल' (नहर) जो सैंकड़ों वर्ष बाद आज भी मलेथा की भूमि से सोना उगला रही है तथा जिसने मलेथा की भूमि को कृषि उत्पादन में गढ़वाल में अग्रणी बनाया। लोक हित के लिए अपने पुत्र को बलिदान करने में तत्पर गढ़वाली वीर माधोसिंह का यह त्याग गढ़वाल ही नहीं समस्त पृथ्वी के जन जीवन को सदा प्रेरित करता रहेगा।

गढ़वाल में अंग्रेजी शासन के समय अपनी जीविका चलाने के लिए कई नवयुवक सेना में भरती होते थे। एक गुलाम देश के वेतन भोगी सैनिकों ने भी अवसर आने पर अपनी महानता का परिचय देने में कसर नहीं उठाई। ऐसे दो सूरमा थे नायक दरबान सिंह तथा राइफल मैन गौबरसिंह।

प्रथम विश्व महायुद्ध में अपनी असाधारण वीरता तथा अद्वितीय शौर्य का परिचय देने वाले दो गढ़वाली वीरों को युद्ध में वीरता दिखाने का सर्वोच्च पुरस्कार 'विक्टोरिया-चक्र' प्रदान किया गया था। इन्हें प्रत्येक अवसर पर सचेत, अपने कार्य में सदा अग्रगामी, भयानक से भयानक कठिनाई झेलने को तत्पर, पूर्ण निष्ठा से आज्ञा पालन करने वाले एवं अनुशासन के सभी गुणों से भरपूर आदर्श व्यक्तित्व वाले सैनिक कहा गया है। प्रथम विश्व युद्ध में ये पुरस्कार केवल पाँच भारतीयों को दिया गया था जिनमें से दो गढ़वाली सैनिक थे। नायक दरबान सिंह का जन्म सन 1887 में चमोली जनपद (बधाण) के कफाड़ तीर गाँव में हुआ था। इन्होंने फ्रांस में अंग्रेजों की ओर से जर्मनों से लड़ते हुए आमने-सामने होने वाले युद्ध में दुश्मनों से एक बहुत बड़ी खाई को तो छीना ही, 150 दुश्मनों को कैदी बनाया और इससे भी अधिक शत्रु उनके द्वारा वीरगति को प्राप्त हुए। सिपाही गोबर सिंह ने 20 वर्ष की आयु में फ्रांस के मैदान में ही जर्मनों से लड़ते हुए अपूर्व शौर्य का प्रदर्शन करते हुए वीरगति प्राप्त की। चार खाइयों से जर्मनों को मारते हुए अथवा कैदी बनाते हुए अपने नायक की मृत्यु हो जाने पर सारा नेतृत्व खुद संभालते हुए तरूण राइफल मैन गोबरसिंह तब तक लड़ता और विजय प्राप्त करता रहा जब तक कि उसका क्षत-विक्षत शरीर प्राण शून्य होकर धरती पर स्थिर नहीं हो गया। सिपाही गोबरसिंह का जन्म टिहरी गढ़वाल के मन्ज्यूड़ गांव में सन 1895 में हुआ था। ये अपने माता-पिता की तीसरी संतान थे। विश्व के युद्धों के इतिहास में इतनी कम उम्र में शौर्य एवं वीरता का सर्वोच्च पदक प्राप्त करके राइफल मैन गोबर सिंह ने अपने लिए इतिहास में एक विशिस्ट स्थान बनाया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाली चित्रकला शैली

पहाड़ी चित्रकला शैली की दो प्रमुख धारायें हैं—काँगड़ा शैली तथा गढ़वाल शैली। "काँगड़ा शैली की आकृतियों में नाक और माथे के बीच भीतर की ओर की गहराई प्रायः नहीं रहती। एक-चक्षु चित्रों में माथे की रेखा नाक तक प्रायः सीधी चली जाती है। भृकुटी के पास बहुत थोड़ी ही भीतर की ओर धँसी हुई रहती है उसी प्रकार ठोढ़ी के नीचे गले तक जाने वाली रेखा भी सीधी दिखाई जाती है। आँखे भी सीधी रहती हैं। सारा सिर करीब-करीब वर्गाकार रहता है।

"इसके विपरीत गढ़वाली शैली में भृकुटी के पास नाक की रेखा भीतर की ओर झुकी हुई और चिबुक से गले तक जाने वाली रेखा भी कुछ अधिक गोलाई लिए हुए होती है। भौंहें धनुषाकार होती हैं। इनके मुखाकृतियों का यदि उसी प्रकार ग्राफ बनाया जाये तो वे आयताकार होंगे। ये मुखाकृतियाँ काँगड़ा शैली की अपेक्षा लम्बी होती हैं। इन दोनों शैलियों में पगड़ी का चित्रण एक दूसरे से पृथक रूप में मिलता है। काँगड़ा शैली के चित्रों में पगड़ी अधिक नोकदार होती है। रंग योजना में भी भिन्नता है। गढ़वाली शैली का रंग विधान आगे बढ़ा हुआ है। इसमें भिन्न-भिन्न रंगों का समन्वय अच्छे ढंग में मिलता है। उदाहरणार्थ यदि नीले आकाश में लाल बादलों को दिखाना होता है तो नीले आकाश के रंग से धीरे-धीरे नीले और लाल रंग के समन्वित रूप से बादलों की लालिमा बढ़ती हुई दिखाई जाती है। काँगड़ा शैली में रंगों का सम्मिश्रण इतना स्पष्ट नहीं होता।

"भारत की इन दो प्रसिद्ध चित्र-पद्धतियों में ये अन्तर मोटे रूप से माने जा सकते हैं। इनमें बहुत से अपवाद भी हैं। वस्तुतः इन दोनों में स्पष्ट अन्तर दिखाना सरल नहीं।....."

गढ़वाली शैली के प्रमुख चित्रकार मौलाराम थे, जिनकी चित्रकला शैली सर्वत्र एक जैसी नहीं है। वे काँगड़ा के राजा संसार चन्द्र के दरबार में भी आश्रय पाते थे और गढ़वाल के राजा के दरबार में तो वे रहते ही थे। मौलाराम के चित्रों में अठारहवीं शताब्दी की चित्रकला के अनेक प्रभाव स्पष्ट दिखाई देते है। उदाहरणार्थ हुक्के का वर्तन घंटी के आकार का होना तथा चित्रों के साथ हिन्दी, फारसी तथा संस्कृत में प्रशस्ति पद्य भी लिखे होते हैं। मौलाराम के कई चित्रों में राजस्थानी, मुगल तथा पहाड़ी तीनों समकालीन चित्र शैलियों का प्रभाव भी दिखाई देता है। उनके डेढ़-चक्षु चित्र पाश्चात्य शैली से प्रभावित पटना शैली के चित्रों से भी साम्यता रखते हैं। पहाड़ी चित्रकारों के प्रिय विषय कृष्ण और रुक्मिणी, गजेन्द्रमोक्ष, राधा-कृष्ण, कृष्ण और गोपियाँ, सन्यासी, राजसी-पुरुष, देवी-देवता इत्यादि रहे हैं। मौलाराम के समकालीन मणकू और जीतू तथा उनके नाती आत्माराम के भी कुछ चित्र उपलब्ध हैं। गढ़वाल के कला पारखी राजाओं को भी कुछ चित्रों का माध्यम बनाया गया है। एक प्रसिद्ध चित्र से तो ये भी प्रकट होता है कि राजा के समय में चारों ओर सम्पन्नता तथा ऐश्वर्य का बोल बाला था। इन्हीं राजा के समय शेर-बकरी का एक घाट पर पानी पीने का चित्रण इस समय की राजनैतिक स्थिरता, निर्द्वन्दता एवं शान्ति का भी द्योतक है। इन चित्रों पर मुगल शैली का विशेष प्रभाव पाया जाता है।

गढ़वाली शैली के समस्त चित्रों के साथ जितनी कवितायें प्राप्त हैं उन पर हिन्दी के रीतिकाल की काव्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम्परा की स्पष्ट छाप पाई जाती है। यद्यपि ये अधिक उच्चकोटि की कवितायें नहीं है मगर उन चित्रकारों में काव्यानुशीलन की तीव्र प्रवृत्ति थी।

गढ़वाल के राजा पृथ्वीपति शाह के समय में सन् 1658 में मुगल दरबार दिल्ली से दो चित्रकार, पिता और पुत्र, दारा के लड़के सुलेमान शिकोह के साथ श्रीनगर पहुँचे, इनके नाम थे शामदास तथा हरदास। इन्हीं की पांचवीं पीढ़ी में सन् 1745 के लगभग मौलाराम का जन्म हुआ था, जिनकी लगभग 88 वर्ष की आयु में मृत्यु हुई। मौलाराम गढ़वाली चित्रकला शैली के जनक होने के साथ-साथ एक कवि और दार्शनिक भी थे।

"मौलाराम और गढ़वाल चित्रकला का स्थान ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ऊँचा ही नहीं वरन् अद्वितीय है क्यों कि गढ़वाल कला का विकास और ह्रास दोनों राजपूत (पहाड़ी) चित्रकला के अविष्कार और पतन, अथवा जन्म-मरण का दीप्तिमान उदाहरण है। मौलाराम की कृपा से हमको हिमालयन आर्ट (पहाड़ी चित्रकला) की उत्पत्ति और उसकी मृत्यु की कथा की सामग्री मिली।" आश्रयहीन होने के कारण मौलाराम के वंशज गढ़वाली चित्रकला शैली का पर्याप्त विकास न कर सके और इस प्रकार इस शैली का एक दुखद अन्त हो गया।

पहाड़ी चित्रकला लगभग दो सौ वर्ष तक (1650-1850) अच्छी उन्नत दशा में रही। उन्नीसवी सदी के मध्यकाल से ही पहाड़ी कला का पतन आरम्भ हुआ। इस कला का स्वर्ण युग अठारहवीं सदी का समय माना जाता है। कश्मीर, जम्मू, काँगड़ा, बसोहली, सुकेत, मंडी, गढ़वाल इन कई पर्वतीय रियासतों अथवा जागीरों ने अनेक चित्रकारों को प्रश्रय दिया तथा सोलहवीं सदी से लेकर उन्नीसवीं सदी तक इन राज्यों के पारस्परिक सम्बन्ध बहुत अच्छे एवँ घनिष्ठ रहे।

जे० सी० फ्रैंच ने अपनी पुस्तक 'हिमालयन आर्ट' में मौलाराम की कला की विशद विवेचना की है। उनके अनुसार मौलाराम की कला में भारतीय संस्कृति और उस समय की चित्रकला की पद्धति और प्रगति पूर्ण रूप से पाई जाती है। पहाड़ी कला में जो क्रांति अठारहवीं शताब्दी में हुई है और जो उसके जीवन के साथ संबंधित है वह पूर्ण रूप में मौलाराम की कला में पाई जाती है। मौलाराम की कला में सामान्य लालित्य, सरसता व सौन्दर्य है। उसकी कला में अतीत की गम्भीरता और धीरे-धीरे आगे बढ़ती हुई अठारहवीं सदी की प्रचुर कमनीयता पूर्ण रूप से पाई जाती है। क्या अच्छे सुघड़ सौन्दर्य के साथ उसकी कला समय की प्रगति के साथ आगे बढ़ती गई। प्रत्येक कलाकार अपने युग से घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है। उसमें अपने युग की विशेषता, दृष्टि-कोण, विचार, संस्कृति और प्रतिभा होती है। कोई कलाकार उसमें परिवर्तन नहीं कर सकता है।"

श्री अजित घोष के अनुसार कई दृष्टियों से गढ़वाली चित्रकला अपनी समकालीन काँगड़ा चित्रकला से बहुत आगे बढ़ी हुई प्रतीत होती है। "चित्रों को शोभायमान और अलंकृत करने के उपादानों में, बारीकी और प्राकृतिक सौन्दर्य प्रदर्शन में, गढ़वाली कलाकार आगे बढ़े हुए हैं। जितने चित्रों में प्राकृतिक दृश्य बड़ी खूबी और लावण्य के साथ चित्रण किए गए हैं; खासकर वे तसवीरें जिनमें छोटे-छोटे गुलाबी और सफेद फूलों के फव्वारों की झड़ी खिली हुई दर्शायी गई हैं उनमें से अधिकांश चित्र गढ़वाली कला की देन हैं।"

मौलाराम अपने चित्रों को गढ़वाल के बाहर चित्र-कला पारखियों एवं कला मर्मज्ञों के पास भी भेजा करते थे, यथा:—

"कहत मौलाराम खलक सारी में आय हम,
चित्र औ कवित्त भगवान ही पै भेजत हैं।"

यहाँ पर भगवान से अर्थ भाग्यवान पुरुषों से ही है। मौलाराम की ख्याति चित्रकार के रूप में उत्तरी भारत के सभी बड़े शहरों, राज्यों एवं दरबारों में फैल चुकी थी। तभी तो दिल्ली से एक मुसलमान चित्रकार वाक़िर अली उनके पास चित्रकला सीखने आया, यथा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रकार मौलाराम (स्वनिर्मित चित्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्दिर जाती हुई रुक्मिणी
(चित्रकार—मौलाराम)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1977-78 में उत्तर क्षेत्रीय अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लेने वाली गढ़वाल विश्वविद्यालय की महिला बास्केट बॉल टीम

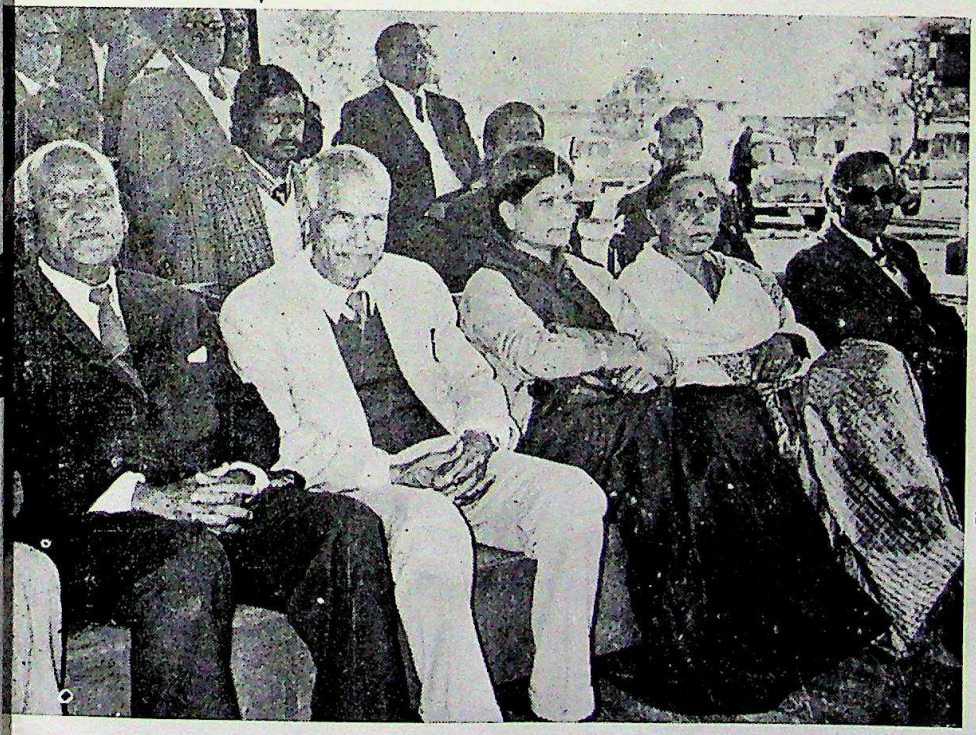

वर्ष 1978 में डी०ए०वी० कालेज देहरादून में हुई अन्तर्महाविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता के अवसर पर डा० एस० सी० भरतरिया कुलपति श्री उमा चरण घिल्डियाल, श्रीमती शकुन्तला घिल्डियाल, श्रीमती सुशीला डोभाल तथा डा० एन०एस० वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

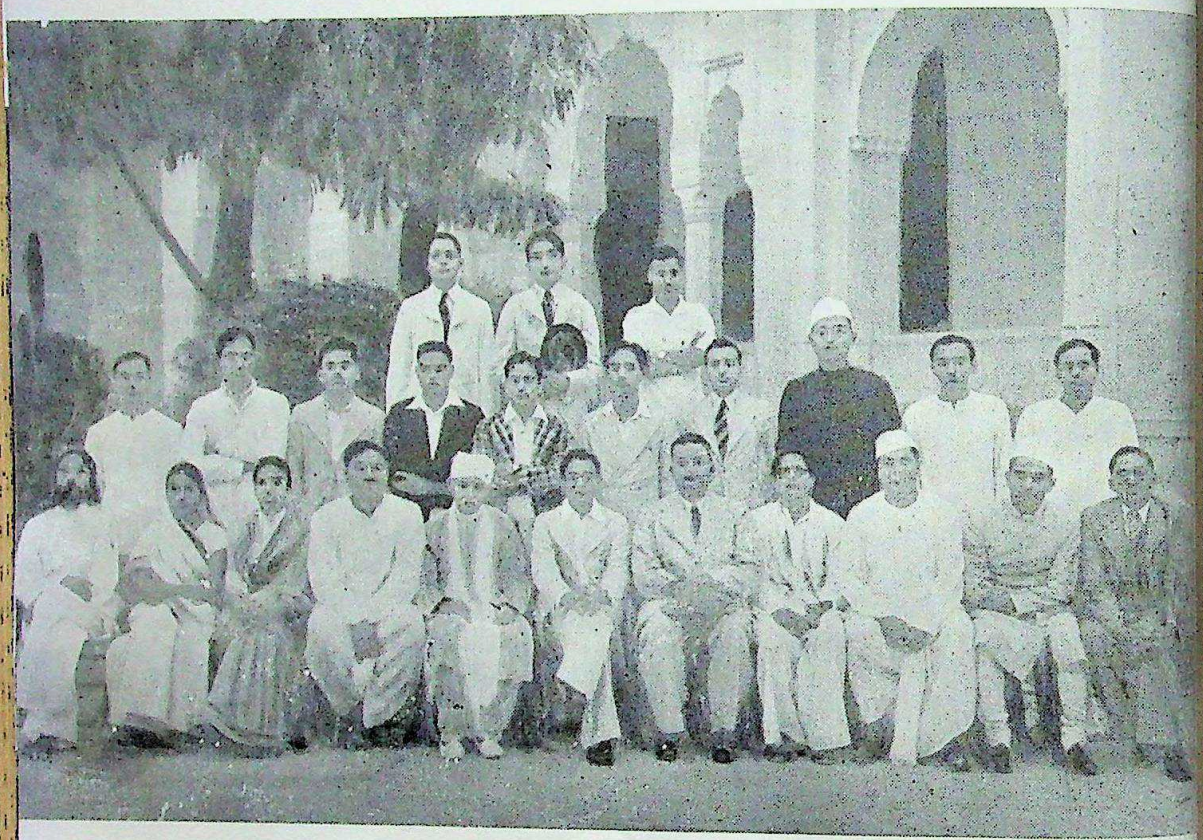

सितम्बर 1941 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्र संघ ने कालापानी की सजा से छूटने के बाद वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली का सार्वजनिक अभिनन्दन किया था। इस अवसर पर महामना पं० मदन मोहन मालवीय को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। चित्र में छात्र संघ में अध्यक्ष श्री सुरेश चन्द्र पुरोहित के दोनों तरफ महामना मालवीय जी तथा डा० अमर नाथ झा कुलपति इलाहाबाद विश्वविद्यालय बैठे हैं। दूसरी पंक्ति में दायें से पाँचवे खड़े हुए कार्यकारणी के सदस्य श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा हैं जो उन दिनों इलाहाबाद विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। श्री चन्द्र सिंह गढ़वाली प्रथम पंक्ति में दायें से तीसरे कुर्सी पर बैठे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरदाक़ वाक़र अलि दर जहाने इस्म ।
मुसब्वर ने तसवीर खैंची रस्म ।।
वज़न सबनी ईं चुनो रंग आव ।
बैठी सौंही नाज़नी माहैंताव ।।
शखी मरद आलम मैं कैंहिते तुमैं ।
शिफ़त सुन के आये हैं दो कुछ हमें ।।
रहें हम हमैशे तुमारे ई संग ।
करें मस्क तसवीर रंगीन रंग ।।

इसी प्रकार का एक वर्णन मनिराम वैरागी द्वारा भी लिखा गया है, जिसमें मौलाराम की दूर-दूर तक फैली ख्याति के साथ गोरखाओं के आक्रमण के बाद श्रीनगर के उजड़ जाने का भी एक करुण वृतान्त है ।

मौलाराम कभी-कभी अपने चित्रों के ऊपर अथवा उनके पीछे चित्र का भाव और उसके लक्षण पद्य में लिख दिया करते थे और उसमें अपने को कवि बतलाने में जैसे उन्हें बड़े गौरव की अनुभूति होती थी । सर यदुनाथ सरकार ने अपनी पुस्तक 'स्टडीज़ इन मुगल इन्डियां' में मौलारास के बारे में लिखा है :—

"इस पहाड़ी चित्रकार की कला पर यूरोप का प्रभाव जो देश में 1765 में शुरू हुआ, नहीं पड़ा और वे उस अराजकता से भी बचे रहे जिसने मुगल साम्राज्य को नष्ट किया । यही कारण है कि पहाड़ी कला (काँगड़ा कलम) शुद्ध दशा में उन्नीसवीं सदी तक पहाड़ी प्रदेश (गढ़वाल इत्यादि) में जीवित रही ।.....मौलाराम के चित्रों के रंग बहुत सुन्दर हैं । उसके जीव-जन्तु, वृक्ष व लताओं में बड़ी सुकुमारता है । मौलाराम के अच्छे चित्र अति उच्चकोटि के चित्र हैं ।"

मौलाराम के दो शिष्य मणकू और चैतू भी अच्छे चित्रकार थे जिनको पर्याप्त ख्याति मिली । ये दोनों उसके समकालीन थे । गढ़वाल की राजधानी जब श्रीनगर से टिहरी स्थानान्तरित हो गई—तो मौलाराम और उनके वंशजों ने श्रीनगर नहीं छोड़ा और इस प्रकार समय के साथ गढ़वाल की एक महान परम्परा भी अतीत की स्मृतियों में जैसे सदा-सदा के लिए खो गई । ●

उत्तराखंड एजुकेशनल मटीरियल सेन्टर

श्रीनगर गढ़वाल

हर प्रकार के रसायन एवं प्रयोगशाला उपकरणों के अधिकृत विक्रेता

गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह के अवसर पर सभी उपाधि-धारकों का हार्दिक अभिनन्दन करते है ।

व्यवस्थापक—सुन्द्रियाल बन्धु **दूरभाष—79**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाल के कोने-कोने तक मनुष्यों, भोजन एवं उपभोक्ता सामग्री

पहुंचाने में हमने एक विशेष भूमिका निभाई है

आज

हम गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह के अवसर

पर विश्वविद्यालय के मंगलमय भविष्य

की कामना करते हैं

गढ़वाल मोटर ओनर्स यूनियन लि०

कोटद्वार गढ़वाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी काव्य-साहित्य को गढ़वाल की देन—
अमर कवि एवं गीतकार चद्रकुँवर बर्त्वाल

".....चन्द्रकुँवर बर्त्वाल यदि जीवित रहते तो वे हिन्दी साहित्य की आधुनिक प्रगति में विशेष योग देते। वैसे उन्होंने जो कुछ लिखा वही उन्हें आधुनिक कवियों में श्रेष्ठ स्थान दिलाने के लिए यथेष्ट है। खेद है ऐसा प्रतिभाशाली कवि इतने शीघ्र ही हम लोगों के बीच से उठ गया। उनकी 'मेघनन्दिनी' शीर्षक रचना वास्तव में एक अमर संदेश लेकर हिन्दी पाठकों के सामने आई है।.....—"

डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय

"श्री चंद्रकुँवर बर्त्वाल कब हिन्दी में आए और कब चले गए, इसका किसी को भी पता न लगा। पर उनके रूप में हिन्दी संसार ने अपना सबसे बड़ा गीतिकाव्य रचियता पाया और खो दिया।.....शुद्ध मुक्तक की यही सबसे बड़ी परख है कि न तो उसमें पार्थिव अंश की अधिक गंध हो और न आकाश की अस्तित्वहीन तरलता। .....श्री चन्द्रकुँवर का मुक्तक इस प्रकार की विलक्षण रस प्रतीति तक हमें ले जाता है। वह ऊपर से वेदनामय जान पड़ता है, पर उसकी यह करुणा कहीं भी जीवन के आनन्दी निर्झर का निराकरण करती हुई नहीं जान पड़ती। करुण काव्य के इस गुण की भरपूर प्रतीति हमें कालीदास के मेघदूत में प्राप्त होती है। चन्द्रकुँवर की मुक्तक कविता आनन्द की झड़ी है, इसी में उसकी सफलता की इतिश्री जाननी चाहिए।.....

.....हिमालय के उत्संग से भरा हुआ जो असाधारण कल्लोल और कलरव है, साथ ही उसका जो धीर मौन है, उन दोनों से चन्द्रकुँवर का हृदय पूर्ण था।.....

.....मानव होने के नाते ही संघर्ष और उद्यम हममें से प्रत्येक की बांट में आ गया है। एक छोटी सी कविता में इस उदात्त भाव को सुन्दर काव्यमय ढंग से व्यक्त किया गया है।.....

श्री चन्द्रकुँवर की कविताओं में मृत्यु के विषाद और जीवन के उल्लास का एक विलक्षण संयोग हुआ है। सन 1940 में भीषण रोगों से पीड़ित होने के बाद मृत्यु तक पहुँचने में उनके अपने शब्दों में 'प्राणों को सुख न मिला, जीवन को चैन नहीं।' अपनी इस स्थिति में वे नित्य प्रति सायं प्रात: मृत्यु के द्वार पर पहुँचते और वापस आते रहे। मृत्यु के द्वार पर बैटकर उन्होंने यम को अपना मित्र बनाना चाहा जिससे उसी बहाने जीवन को कुछ शान्ति मिले। मृत्यु की इस साक्षात तीव्र अनुभूति के मध्य कवि ने अपनी 'यम' शीर्षक कविता लिखी जोकि शब्दों की प्रचंड शक्ति एवं उत्तरहीन उपालंभ के गुणों से संसार की यम विषयक कविताओं में श्रेष्ठतम् स्थान पाने योग्य है।.....

.....'रैमासी' और 'काफलपाक्कू' शीर्षक कविताओं में मानो कवि ने हिमालय के ही दो ठेठ फूल चुनकर अपने इष्ट देव के चरणों में चढ़ा दिये है.....कहा जा सकता है कि चंद्रकुँवर के रूप में हिमालय ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना मानवी काफलपाक्कू' पा लिया था। ग्रीष्म की प्रचंड तपन के बाद जब यह नन्दन वनवासी पक्षी आता है तब दोनों तट प्लावित हो जाते हैं, धरती सुख से फूल उठती है—'क्षण भर में कर देते खग तुम इस पृथ्वी को नन्दन।' .....

.....'जीतू' शीर्षक कविता के आरम्भ में हिमालय का अत्यन्त उदात्त जैसा वर्णन है वैसा कालीदास के हिमालय वर्णन को छोड़ कर अन्यत्र कम मिलेगा।

चन्द्रकुँवर जी के काव्य का एक और उज्जवल पक्ष उनकी प्रकृति और वृष्टि सम्बन्धी कवितायें हैं।..... .....हिमलय के चंचल जल प्रवाह के साथ क्रीड़ा करने वाली कवि की तरुण वाणी, वृष्टि से उमड़ती वरुण की उन्माद भरी प्रणयिनी मन्दाकिनी के चित्रण में अत्यन्त सजीव हो उठी है, निराली शब्द योजना और कल्पना की विचित्रता चन्द्रकुँवर जी के काव्य की विशेषतायें हैं। शुद्ध आनन्द प्रदान करने वाले इस महानुभाव कवि के काव्य को अवश्य एक दिन गहरा स्वागत प्राप्त होगा। उसके गूंजते हुए स्वर, साहित्य में चिरजीवी होंगे।.....।"

—डॉ वासुदेव शरण अग्रवाल

चन्द्रकुँवर बर्त्वाल का जन्म वृहस्पतिवार 20 अगस्त 1919 को चमोली जनपद के मालकोटी ग्राम में हुआ था। कालान्तर में उनका परिवार कालीपार के पँवांलिया गांव में जाकर बस गया। वे अपने पिता श्री भूपालसिंह तथा माता श्रीमती जानकी देवी के प्रथम सन्तान थे। उनकी शिक्षा नागनाथ, मिशन स्कूल पौड़ी, डी० ए० वी० इन्टर कालेज देहरादून तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुई। यद्यपि उन्होंने सन 1941 में कुछ दिन लखनऊ विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास तथा पुरातत्त्व विषय लेकर एम०ए० प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया था, किन्तु निरन्तर बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण उन्हें पढ़ाई छोड़कर अपने गांव लौट जाना पड़ा। एक वर्ष तक उन्होंने अगस्त्यमुनि हाईस्कूल में अध्यापन कार्य किया लेकिन प्रबन्धक से मतभेद हो जाने के कारण वे वहाँ से भी हट गये। उन दिनों गढ़वाल में कोई मोटर सड़कें नहीं थीं और न जंगलों के अनवरत कटान से प्रकृति का निर्मल स्वरूप ही विकृत हो पाया था। अत्यन्त स्वच्छ, सरल तथा सहज प्राकृतिक वातावरण में पले गढ़वाली नवयुवक जब उच्चशिक्षा प्राप्त करने बड़े बड़े मैदानी नगरों में जाते थे, तब वहाँ की असह्य गर्मी, प्रदूषित वायु तथा प्रतिकूल खानपान के कारण अक्सर बीमार पड़ जाते थे। इलाहाबाद की जलवायु भी चन्द्रकुँवर को अनुकूल प्रतीत नहीं हुई और वे वहीं से राज्ययक्ष्मा से पीड़ित हुए। सन 1939 में बी०ए० परीक्षा उत्तीर्ण कर उन्हें दो बर्ष तक अपना इलाज कराना पड़ा। मगर उनका रोग कभी ठीक न हो सका। जीवन के संघर्षों से जूझते हुए तथा रुग्ण शरीर को किसी प्रकार चारपाई के सहारे घसीटते हुए अपने गाँव पँवांलिया में ही रविवार 14 सितम्बर सन 1947 को अठ्ठाईस वर्ष की आयु में उनकी इहलीला समाप्त हो गई।

चंद्रकुँवर ने काव्य को अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य बना दिया था। केवल 23 वर्ष की अवस्था में अपने एक पत्र में उन्होंने अपने इसी समर्पित विश्वास को ठोस आधार के रूप में प्रस्तुत करते हुए लिखा,—"कविता यदि मुझे भुला न दे तो मैं कुछ भी खोया हुआ नहीं मानूँगा और मुझे तनिक भी दुख नहीं होगा। हृदय की उसी एकान्त इच्छा को पूरी तरह पाने के लिए मैं जानबूझ कर कठिन दुख के रास्ते पर चल रहा हूँ। हो सकता है कि अकाल मृत्यु मेरी कामनाओं को कुचल दे। हो सकता है कि जब मुझे सिद्धि मिले तब उसे उपभोग करने की सामर्थ्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे शरीर में न हो। फिर भी मुझे इस बात का संतोष रहेगा कि जीवन के प्रभातकाल में जिस देवी के चरणों पर मैंने अपना सिर रखा था, उसकी मैंने सदा पूजा की, उसको मैंने सदा प्यार किया।....."

मन्दाकिनी घाटी की समस्त प्राकृतिक शोभा और अलौकिक सौन्दर्य ने उन्हें बचपन से ही संवेदनशील बना कर भावानुभूतियों की घनीभूत पीड़ा को सुन्दर एवं सरस शब्दों में व्यक्त करने की विलक्षण शक्ति प्रदान कर दी थी। उनकी कविता सुन्दर, सरस, सजीव और प्रभावोत्पादक होते हुए काल निरपेक्ष तो है ही वरन अपने युग की समस्त विधाओं तथा अभिव्यक्ति के प्रतीकों का उस पर प्रचुर प्रभाव है। चंद्रकुँवर छायावादी कवियों के करुण विलाप के स्थान पर वास्तविकता के अधिक निकट हैं और पलायनवाद के स्थान पर कर्मठता तथा सक्रियता में विश्वास रखते हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में जीवन के प्रत्येक आयाम को छुआ है। असाध्य रोग से पीड़ित और आसन्न मृत्यु की प्रतीक्षा में भी उन्हें प्रकृति के अन्दर जीवन गान हँसता-खेलता दुलराता हुआ दिखाई देता है :—

मेरे गृह से सुन पड़ती गिरिवन से आती,
हँसी स्वच्छ नदियों की सुन पड़ती विपिनों की
मर्मर ध्वनियां सदा दीख पड़ते द्वारों से,
खुली खिड़कियों से हिमगिरि के शिखर मनोहर,
उड़ उड़ आती क्षण क्षण शीत तुसार हवायें,
मेरे आंगन छू बादल हँसते गर्जन कर,
झरती वर्षा, आ बसंत कोमल फूलों से—
मेरे घर को घेर गूँज उठता, विहंगों के दल,
निशिदिन मेरे विपिनों में उठते रहते।
कोलाहल से दूर शान्त नीरव शैलों पर,
मेरा गृह है जहाँ बच्चियां सी हँस हँस कर
नाच नाच बहती हैं, छोटी छोटी नदियां,
जिन्हें देखकर, जिनकी मीठी ध्वनियाँ सुनकर,
मुझे ज्ञात होता जैसे यह प्रिय पृथ्वी तो
अभी अभी ही आई है, इसमें चिन्ता को
और मरण को स्थान अभी कैसे हो सकता है।

चन्द्रकुँवर ने लगभग 700 कवितायें लिखी हैं जिनमें से कुछ प्रकाशित हो चुकी हैं और कुछ अप्राप्य हैं। उनकी रचनाओं में सबसे सशक्त एवं सजीव रचना 'मेघनन्दिनी' है। इसमें उनके जीवन का समस्त प्रेम एवं उत्साह, सारा रुदन और विलाप तथा सम्पूर्ण अमरत्व का जीवन दर्शन अभिव्यक्त हुआ है। इस कविता की प्रत्येक पंक्तियां बड़े यत्न पूर्वक काटी, छाँटी और तराशी गईं हीरक लड़ियां हैं। भाव व्यंजना, गीतात्मकता, शब्द विन्यास तथा तकनीक सभी दृष्टियों से प्रत्येक पद अपने आप में एक सम्पूर्ण कविता है। सरल, ललित एवं सरस शब्दों में हृदय की गहनतम भावानुभूतियों का प्रभावोत्पादक चित्रण मेघनन्दिनी की अपनी विशिष्टता है। उपमायें नितान्त नवीन और कोमल रसानुभूति से ओत प्रोत हैं। प्रत्येक पद अपना अलग-अलग अस्तित्व रखते हुए भी 124 पदों की शृंखला में मणिप्रवाल की तरह एक दूसरे से गुंथी हुई हैं। प्रत्येक पंक्ति में कवि के मनोवेगों के साथ पाठक पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तादात्म्य एवं तन्मयता स्थापित कर लेता है। इस कविता को तीन चरणों में लिखा गया है और प्रत्येक चरण में कवि के मानसिक परिवेश में स्पष्ट अन्तर दिखाई देता है। 19-20 वर्ष की आयु के चन्द्रकुँवर का हृदय शृंगार तथा करुण रस की कोमल भावनाओं से भरपूर था अतः प्रारम्भिक चरण में लिखे गये पदों में युवावस्था की तन्मयता तथा प्रेम की अगाध गहराई पाई जाती है और कवि अपने चारों ओर फैली हुई उन्मुक्त प्रकृति से सम्पूर्ण एकरसता स्थापित कर लेता है—

अलकें बिखराये आंसू में नयन डुबाये,
पृथ्वी की अपने तन मन की याद भुलाये,
मैं जाऊंगा विपुल पथों पर शून्य वनों में,
नदियों की लहरों में कुंजों की पवनो में,
दुखी देवता सा ऊपर को दृष्टि उठाये,
अलकें बिखराये आंसू में नयन डुबाये।

जन्म-जन्म से खोज रहा है उसको जीवन,
जिसे देखकर कांप उठे नयनों में रोदन,
जिसे देखकर खिले वसन्त हृदय में मेरे,
जिसके दीप रहें जीवन के पथ को घेरे,
जिसे लुभाने को आया है मुझमें यौवन,
जन्म-जन्म से खोज रहा है उसको जीवन।

मेरे उर से उमड़ रही गीतों की धारा,
बनकर गान बिखरता है यह जीवन सारा,
किन्तु कहाँ वह प्रिय मुख जिसके आगे जाकर,
मैं रोऊं अपना दुख चातक सा मंडराकर,
किसके प्राण भरूं में इन गीतों के द्वारा,
मेरे उर से उमड़ रही गीतों की धारा।

मेरे पास आज इतना धन है देने को,
नये फूल हैं पावों के नीचे बिछने को,
नये मेघ हैं नई चांदनी है नव यौवन,
निर्मल मन है और स्नेह से छलछल लोचन,
कौन जानता है कल ही क्या है होने को,
मेरे पास आज इतना धन है देने को।

कहां मिलेगी मरकर इतनी सुन्दर काया,
जिस पर विधि ने है जग का सौन्दर्य लुटाया,
हरे खेत ये विजन वनों की बहती नदियां,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्पों में फिरती भिखारिणी ये मधुकरियां,
कहां मिलेगी मरकर इतनी शीतल छाया,
कहां मिलेगी मरकर इतनी सुन्दर काया,

मरकर भी ऐसे दिन फिर न कभी आयेंगे,
पके शस्य यों ही कितने दिन रह पायेंगे,
ठहरे खेत विजन वन के जिनकी छायायें,
अवसर ताक रही हैं पशुओं की आशायें,
थक कर कभी शिथिल लोचन ये मुंद जायेंगे,
यों ही प्राण प्रतीक्षा कब तक कर पायेंगे ।

घुल जाऊंगा मैं ज्योत्स्ना में लघु जुगनू सा,
टपक पड़ूंगा ओस बिन्दु सा किसी गगन का,
उषा हास में मिल जाऊंगा मैं दीपक सा,'
पिघल पड़ूंगा शुचि चरणों में सावन घन सा,
छिप जाऊंगा में सपना बन किसी नयन का,
टपक पड़ूंगा ओस बिन्दु सा किसी गगन का ।

आशा की डोरी में जीवन झूल रहा है,
कांटों में यह पीड़ित यौवन फूल रहा है,
आती भांति-भांति की किरणे और हवायें,
पड़ती प्राणों पर सौ-सौ सुन्दर छायायें,
हाय, हृदय प्रिय का क्यों इसको भूल रहा है,
कांटों में यह पीड़ित यौवन फूल रहा है ।

इस जीवन में कभी न सुख की छाया आई,
इस यौवन ने चाह न वह पूरी कर पाई,
मुझे न कुछ संदेश कहीं से नीरद लाये,
मुझे न हंसों ने सुख के संवाद सुनाये,
मेरी बीती यों ही सुर दुर्लभ तरुणाई,
इस यौवन ने चाह न वह पूरी कर पाई ।

मेघ नन्दिनी के दूसरे चरण के पद वे हैं जो चन्द्रकुँवर ने 21 से 24 वर्ष की आयु में लिखे जब वे जीवन से काफी व्यथित हो गये थे । वास्तव में निराशाओं के बीच संघर्षों से जूझते हुए, यद्यपि शरीर से रोगी मगर उत्साह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से भरपूर, कवि का हृदय बहुत विशाल था। उन्होंने अपने दुखी एवं नीरस शारीरिक परिवेश के अन्दर एक चिर कोमल तथा चिर यौवन से पूर्ण महामानव बिठा रखा था, जो सर्वत्र आनन्द ही आनन्द को बांटता रहा है। यथा—

बजती जीवन के द्वारों पर मृदु शहनाई,
केश उड़ाती बहती सजल पवन पुरवाई,
गाते खग पुलकित हो यौवन की डालों पर,
बरस रहे अम्बर से गरज-गरज कोमल स्वर,
मेरी वधू आज उमड़ी वर्षा सी आई,
बजती जीवन के द्वारों पर मृदु शहनाई।

पतझड़ में भी लगता था मधु ही हंसता सा,
कांटों का वन भी उर को पुलकित करता सा,
सुधा पान सी लगती थी वह प्यास हृदय की,
स्वप्नों से थी भरी-भरी-सी गोदी भय की,
झरता पल्लव भी लगता था हंस उगता सा,
पनझड़ में भी लगता था मधु ही हंसता सा।

दूर-दूर तक फैली मधु रितु की हरियाली,
खेल रही जिसमें निश्चिन्त हवा मतवाली,
धीरे-धीरे झूम रहे तरु मरित स्वरों में,
गीत विचरते पत्रों के कंपित अधरो में,
शोभा पी अतृप्त डूबती रवि की लाली,
दूर-दूर तक फैली मधु रितु की हरियाली।

मैंने देखा फिर मेरे सूने जीवन में,
आई एक किरण मधु ले अपनी चितवन में,
मैंने देखा प्राण भरे मेरे सौरभ से,
मैंने देखा हृदय भरा मेरा कलरव से,
मैंने देखा प्रात हुआ मेरे आंगन में,
मैंने देखी एक किरण अपने जीवन में।

मेघनन्दिनी के तीसरे चरण के वे पद हैं जो मृत्यु से कुछ ही वर्ष पूर्व 25-26 वर्ष की आयु में लिखे गये। चन्द्रकुंवर को यह विश्वास हो चला था कि वे अब अधिक दिन जीवित नहीं रह पायेंगे। अतः उनके वीतराग मन ने अपनी अनुभूतियों को एक नई एवं प्रेरणादायक अभिव्यक्ति दी जो समस्त प्रतिबद्धताओं से रहित, स्वच्छ एवं स्वस्थ अलौकिक आनन्द की सृष्टि करती है, यथा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख ने मुझको लहरों के ही बीच भुलाया,
सुख ने मुझको हलका सा ही राग सुनाया,
दुख ले गया मुझे गहरे सागर के जल में,
हंसते उज्ज्वल मोती जहाँ तिमिर के तल में,
दुख ने ही मुझको प्रकाश का देश दिखाया,
सुख ने मुझको हलका सा ही राग सुनाया।

हंसी बुलाई जिसने श्वेत पंख फैलाये,
उसके पास हंसी आई उसने सुख पाये,
और किया जिसने निशि दिन शोकों का चिन्तन,
उसके पास शोक आये आया कटु रोदन,
पाये सुख-दुख जिसने जो तन्मय हो चाहे,
हंसी बुलाई जिसने श्वेत पंख फैलाये।

निरुत्साह होना इस जग में पाप महा है,
सदा कर्म करना, लड़ना ही श्रेय यहां है,
यहां अमृत है आशा, विष है विषम निराशा,
देती महा सफलता है साहस की भाषा,
लड़ो, वीर का सदा सहायक भाग्य रहा है,
निरुत्साह होना इस जग में पाप महा है।

कभी सोचता हूं मैं व्यर्थ हुआ जीवन है,
और कभी सुख से भर जाता मेरा मन है,
जटिल पहेली यह न समझने में कुछ आई,
किसने मृत्यु बनाई किसने व्यथा बनाई,
और बनाई किसने स्मिति की शीत किरण है,
कभी सोचना हूं मैं व्यर्थ हुआ जीवन है।

करता हूं स्वीकार प्रभो में न्याय तुम्हारा,
करता हूं स्वीकार बेड़ियाँ ये, यह कारा,
आज हो गया शनैः शनैः वह दुख भी धीमा,
एक दिवस जिसकी पीड़ा थी तीक्ष्ण असीमा,
हुआ भला ही मेरा इन कष्टों के द्वारा,
करता हूं स्वीकार प्रभो मैं न्याय तुम्हारा।

चाह नहीं है, अब मेरा जीवन शीतल है,
द्वेष नहीं है, अब यह उर हो गया सरल है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई वासना, गया वासनामय यौवन भी,
मिटे मेघ मिट गया आज उनका गर्जन भी,
मैं निर्बल हूं पर मुझको ईश्वर का बल है,
चाह नहीं है, अब मेरा जीवन शीतल है ।

मेरे मित्र दया कुछ मुझ पर कर जाते हैं,
और शत्रु मुझको सकष्ट लख मुसकाते हैं,
पहले मैं मित्रों से स्नेह किया करता था,
और शत्रुओं को नित शाप दिया करता था,
किन्तु मुझे अब सभी एक से दिखलाते हैं,
सब का हो कल्याण मुझे अब सब भाते हैं ।

बीत गई वर्षा अब स्वच्छ विमुक्त गगन है,
सिर के ऊपर अब न बज्र करता गर्जन है,
छोड़ दिया अब घिरी दिशाओं ने नित रोना,
उज्ज्वल खिलता धुली हुई पृथ्वी का कोना,
बीत गया अब उमड़ी सरिता का यौवन है,
सिर के ऊपर अब न वज्र करता गर्जन है ।

चले गये बादल अब फिर से चमके तारे,
नील गगन में उठे शिखर हिमगिरि के प्यारे,
स्वच्छ हो गई पवन, निर्मल हुई सरितायें,
धानों से पीत हो गईं सब ओर दिशायें,
शरद देख लौटे प्रमोद पृथ्वी के सारे,
चले गये बादल अब फिर से चमके तारे ।

चन्द्रकुंवर का सम्पूर्ण जीवन दर्शन मेघनन्दिनी के अन्तिम पदों से स्पष्ट हो जाता है। वैसे भी उन्होंने अन्यत्र लिखा है—" न जाने कितने प्रिय जीवन, किये मैंने तुमको अर्पण ! माधुरी मेरे हिमगिरि की ! "जीवन की शाश्वत निरन्तरता में उनका अटूट विश्वास था, इसलिए मृत्यु उन्हें किसी भी प्रकार विचलित नहीं कर सकी। उन्होंने अपने एक ऐसे ही चिर निरन्तर अमर रूप की कल्पना की है, यथा—

युग-युग तक सुख पूर्वक तुम संसृति में रहना,
तुम सबसे मेरे सुख दुख की वार्ता कहना,
ऊंच नीच सबके द्वारों पर जा के गाना,
सबको एक समझना तुम सबको अपनाना,
निन्दा स्तुति सबकी तुम वीतराग हो सहना,
मेरे अमर रूप युग-युग तक जग में रहना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभ हो पंथ दूर हो जायें सब बाधायें,
अशुभ शब्द कानों में नहीं कही से आयें,
स्वागत करें अर्घ्य लेकर जग में सब तेरा,
तू आये बनकर जगती में स्वर्ण सवेरा,
तू सबको भाये, जग में सब तुझको भाये,
शुभ हो पंथ दूर हो जायें सब बाधायें ।

शान्ति शान्ति सबके जीवन में शान्ति व्याप्त हो,
शान्ति शान्ति सबको जीवन में शान्ति प्राप्त हो,
दुखी न कोई रहे कहीं पृथ्वी के ऊपर,
विपुल शान्ति से हों प्रपूर्ण सबके उर अंतर,
विपुल शान्ति में गीत कथा मेरी समाप्त हो,
शान्ति शान्ति सबको जीवन में शान्ति प्राप्त हो ।

चंद्रकुंवर ने सृष्टि एवं वृष्टि के साथ जिस प्रकार अपनी भावनाओं का गीतात्मक समन्वय स्थापित किया है वह उनके उस सौन्दर्य से भरे प्राकृतिक परिवेश का ही प्रभाव हैं जिसका केन्द्र बिन्दु मन्दाकिनी तथा इसकी सुन्दर घाटी मानी जानी चाहिए । मन्दाकिनी के तट पर शिलाओं में अथवा वृक्षों की छाया में उन्होंने अपनी कई कविताओं की रचना की है अतः उसे वे अपनी कविता में भी हिमालय जैसा विराट स्थान देते हैं—

गौरी पिता-पद निसृते हे प्रेमवारि तरंगिते ।
हे गीत मुखरे शुचि स्मिते कल्याणि भीम मनोहरे ।
हे गुहा वासिनि योगिनी, हे कलुष-तट-तरु नाशिनी ।
मुझको डुबा निज काव्य में हे स्वर्ग सरि मन्दाकिनी ।
मैं बैठकर नवनीत कोमल फेन पर शशि बिम्ब सा,
अंकित करूँगा जननि तेरे अंक पर सुर धनु सदा,
लहरें जहाँ ले जायेंगी मैं जाऊँगा जल बिन्दु सा,
पीछे न देखूँगा कभी आगे बढ़ूँगा मैं सदा,
हे तट मृदंगोताल ध्वनिते, लहर वीणा वादिनी ।
मुझको डुबा निज काव्य में हे स्वर्ग सरि मन्दाकिनी ।

चंद्रकुंवर का मन्दाकिनी से जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त बहुत निकटता का सम्बन्ध रहा हैं । रविवार 14 सिनम्बर सन 1947 को मध्याह्न के समय जब मन्दाकिनी तट पर चंद्रकुंवर के पार्थिव शरीर को अग्नि समर्पित किया गया तो चिता बुझते हो मेघ गरजने लगे और वर्षा की ऐसी झड़ी लगी मानो वह सरिता कई जन्मों के लिए उस दिन ही लबालव भर जाना चाहती हो और उसमें स्वयं भी डूब जाना चाहती हो । ऐसा लगता था जैसे इस रात चंद्रकुंवर की यह कविता प्रतिध्वनित होकर घाटी के आहत हृदय को एक बार फिर चीर डालेगी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नव वसन्त में ही मेरे तरु को झरना था ।
मुझको इस उठते यौवन में ही मरना था ।
जब सोये है सुख से पृथ्वी के सब प्राणी,
गहन निशा में जब न कहीं भी कोई वाणी,
मुझे शून्य पथ पर तब यों आहें भरना था ।
हाय, मुझे इस उठते यौवन में मरना था ।

चंद्रकुंवर के साहित्य का हिन्दी संसार से विशेष परिचय कराने का श्रेय समालोचकवर श्री शंभुप्रसाद बहुगुणा को जाता है । चंद्रकुंवर की अमर आत्मा को जिस प्रकार बहुगुणा जी ने समझा और परखा है वैसा किसी ने नहीं । उनकी निम्न टिप्पणी चंद्रकुँवर के व्यक्तित्व का एक संम्पूर्ण एवं सच्चा मूल्यांकन है—

"विश्व के अन्तर्गत तथा उसके ऊपर नीचे जितने जीवन व्यापार हो सकते हैं उन तक कवि की पहुंच रही है । चींटी से लेकर आकाश के एक तारे और जन्म से लेकर मृत्यु के पश्चात के लोकों के दृश्यों को भी कवि अनुभूति पथ में ले आने में सफल हुआ है । शैलियों की विविधता, शब्दों के असीम सागरों और अनुभूतियों के अथाह प्रवाहों में कवि ने अपने प्राणों की तन्मयता को एक किया है । उसी से चन्द्रकुँवर हिमवन्त के होते हुए भी, हिमवन्त भर के नहीं हैं, हिन्दी के होते हुए भी हिन्दी भर के नहीं हैं, भारत के होते हुए भी भारत भर के नहीं है, और इस जगत के होते हुए भी इसी विश्व तक सीमित नहीं रहे ।"

चन्द्रकुँवर के साहित्य ने जिस प्रकार देश काल के बंधन की सीमाओं को लांघ दिया है । उनका व्यक्तित्व भी उसी तरह देश काल की परिधि से बहुत ऊपर उठ गया है । ऐसा लगता है कि वें मरे नहीं है अपितु विश्राम हेतु दूर हिमालय में किसी एकान्त स्थान पर चले गये हैं जहाँ से अभी-अभी उन्होंने अपनी कविता 'हिम प्रदेश का एकांत' संदेश के रूप में भेजी है—

मैं किस प्रदेश में आ पहुंचा ?
हैं चारों ओर खड़े पर्वत जिनका हिम झरनों में झरता,
जिनके प्राणों को झरनों का संगीत मधुर मुखरित करता ।
जिनके नीचे सुन्दर घाटी धानों से पीली पड़ी हुई,
जिससे सुगन्धि की मृदु लहरें मारुत में उड़ती निकल रहीं ।
गिरिवन से छूटी एक नदी घाटी में गाती घूम रही,
आंखों में रवि का बिम्ब नई अधरों पर धर-धर चूम रही ।
निर्जन तट पर, फूलों से भर, पीली लतिकायें झुकी हुई,
भौरों की गूंजों से हिलती, छवि शान्त पवन में रुकी हुई ।
मैं लता भवन में आ ठहरा—कोकिल मेरे ऊपर कूकी,
फूलों से झर-झर सुरभि झरी, केसर से पीत हुई अमरी ।
केसर से दूर्वा ढकी हरी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितना एकान्त यहाँ पर है ! मैं इसी कुंज में दूर्वा पर,
लेटूंगा आज शान्त होकर, जीवन भर चल-चल अब थक कर ।
ये पद जो गिरि पर सदा चढ़े, चोटी से घाटी पर उतरे,
सुनसान पर्वतों से होकर, घनघोर जंगलों में विचरे ।
ये पद विश्राम मांगते अब, इस हरी भरी धरती में आ,
थे पद न थके जो अभी कभी वे अब न सकेंगे पग भर जा ।
मेरे अंगों में फैल रही निद्रा की स्वप्नमयी ममता,
आंखों में भरती शनैः शनैः विपिनों की धूमिल नीरवता ।
झरनों के स्वर प्राणों को हर ले जाते धीरे आज कहाँ ?
निर्जन शिखरों पर फूलों में नीरवता फैली हुई जहाँ ।
ले जाते पुष्प धरातल में बीजों के बीच मुझे जिनपर,
रक्खे न अभी आशाओं ने जीवन के रंग बिरंगे कर ।
अपने उद्गम को लौट रही अब बहना छोड़ नदी मेरी,
छोटे से अणु में डूब रही यह जीवन की पृथ्वी मेरी,
आंखों में सुख से पिघल-पिघल ओठों में स्मिति भरता-भरता,
मेरा जीवन धीरे-धीरे इस सुन्दर घाटी में मरता ।

गढ़वाल में यातायात की सुविधायें बढ़ाना और जनता की सेवा ही हमारा एक मात्र उद्देश्य है

आज गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह के अवसर पर हम भी सब को हार्दिक बधाई देते हैं

संयुक्त यातायात रोटेशन

कोटद्वार गढ़वाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम आज गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त

समारोह के अवसर पर

उत्तराखंड के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करते हैं

उत्तराखंड गंगा ट्राँसपोर्ट कम्पनी

ऋषिकेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीनगर की ऐतिहासिक पृष्ट भूमि

पौड़ीं–गढ़वाल जिले में अलकनन्दा की मनोरम उपत्यका में बसा श्रीनगर अपने प्राकृतित सौन्दर्थ, उर्वर खेतों और उष्ण जलवायु के साथ-साथ गढ़देश के मध्य में स्थित होने से युगों से यहाँ की सांस्कृतिक एवं राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। बदरीनाथ के यात्रापथ पर इस नगर की स्थापना कैसे हुई—यह अभी प्रामाणिक रूप से ज्ञात नहीं है। बौद्ध ग्रन्थ श्रीनगर नामक नगर की स्थापना का श्रेय महान मौर्य सम्राट अशोक को देते हैं। राणीहाट में गढ़वाल विश्वविद्यालय के पुरातत्व–विभाग की ओर से सम्पन्न उत्खनन कार्य से भी यह संकेत मिला है कि मौर्यकाल में श्रीनगर के पास बस्ती थी। देवी भागवत और केदारखंड (स्कन्दपुराण) नामक पौराणिक ग्रन्थों में श्रीनगर का उल्लेख मिलना भी इसकी प्राचीनता का द्योतक है। यह सम्भव है कि अपनी धर्म-विजय की परम्परा में अशोक मौर्य ने बदरीनाथ के यात्रियों की सुविधा के लिए श्रीनगर में आवास, चिकित्सा, जल आदि की व्यवस्था की हो। स्कन्दपुराण के केदारखंड में 'श्रीक्षेत्र' शब्द का प्रयोग हुआ है और उसमें कमलेश्वर, राजराजेश्वरी, किलकिलेश्वर आदि मन्दिरों का महात्म्य वर्णित है। यह ग्रन्थ अयोध्या के राजा श्री रामचन्द्र जी को कमलेश्वर की स्थापना का श्रेय देता है। महाराणी कर्णवती के हाट-लेख में 'श्रीनगर पुर' शब्द का उल्लेख यह संकेत करता है कि पुराने श्रीनगर को जब राजधानी बनाया गया और उसके चारों ओर 'पुर' (दुर्ग) का निर्माण किया गया तब उसके लिए 'श्रीनगरपुर' शब्द प्रचलित हुआ। श्रीनगर से प्राप्त कुछ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों में "शहर श्रीनगर" शब्द का प्रयोग है। आधुनिक उफुल्डा से किलकिलेश्वर तक अलकनन्दा के दोनों तटों पर यह नगर फैला था। अलकनन्दा की बाढ़ और 1803 ई० के भयंकर भूकम्प के कारण आज श्रीनगर के प्राचीन वैभव का अनुमान लगाना संभव नहीं है, फिर भी अवशिष्ट सामग्री यह संकेत करती है कि मध्यकाल में यह एक महानगर रहा होगा तभी केदारखंड के लेखक ने इसे 'श्रीक्षेत्र' कहना उचित समझा।

श्रीनगर को 'पुर' के रूप में संवारने का श्रेय अजयपाल को है। रामायण–प्रदीप के अनुसार वह कत्यूरियों से प्राप्त सुवर्ण सिंहासन को चांदपुर से श्रीनगर ले गया था। उसने आधुनिक आई० टी० आई० के पास एक भव्य प्रासाद और सुदृढ़ प्राचीर का निर्माण करवाया था। अजयपाल के पौत्र मानशाह ने अलकनन्दा के दाहिने तट पर राजराजेश्वरी का मन्दिर और 'मानपुर' नामक राजमहल और दुर्ग बनवाया। मानोदय काव्य में भरत कवि ने 'मानपुर' के वैभव का सुन्दर वर्णन किया है। महारानी कर्णवती ने राणीहाट नामक एक सुन्दर बाजार का निर्माण करवाया। पँवारनरेशों ने राजधानी के रूप में ही श्रीनगर का विकास नहीं किया अपितु उसे मध्यकालीन भारत का एक सांस्कृतिक केन्द्र भी बनाया। उन्होंने भारत के विविध भागों से विद्वानों, धार्मिक नेताओं और कलाकारों को बुलाकर श्रीनगर के समीप बसाया। श्रीनगर का 'भक्त्याणा' (भक्तों का आवास) मुहल्ला मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन का एक प्रमुख केन्द्र था। जगद्गुरू शंकराचार्य, रामानुज, वल्लभाचार्य, गोरखनाथ, तुलसीदास आदि के भक्त्याणा में आवास के प्रमाण सुरक्षित हैं। भक्त्याणा में गुरू गोरखनाथ की गुफा और उसके प्रांगण में भव्य मण्डप है। राजा महीपतिशाह द्वारा मथुरा के केशवराय मन्दिर के अनुकरण पर निर्मित केशवराय का मठ है जो श्रीनगर में कृष्णभक्ति का केन्द्र था। रघुनाथ मन्दिर के दो लेखों से ज्ञात होता है कि पृथ्वीपतिशाह ने रामभक्ति के नेता माधवदास को श्रीनगर में बसाया था। इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SRINAGAR AND ITS ENVIRONS

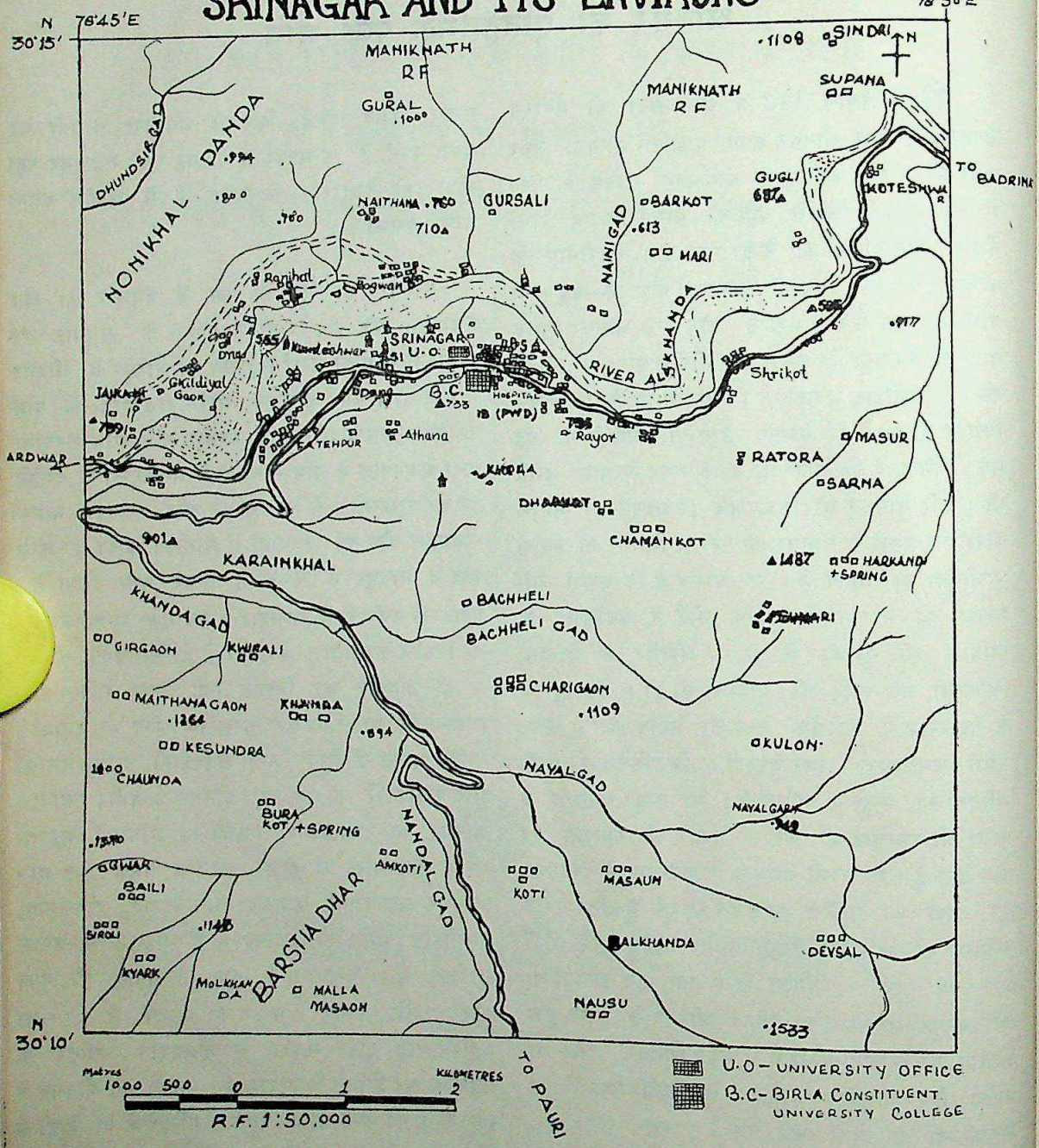

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजराजेश्वरी में शाक्त, कमलेश्वर में शैव, गोरखनाथ गुफा में नाथ-सम्प्रदाय, केशवरायमठ में कृष्णभक्ति और रघुनाथ मन्दिर में रामभक्ति के केन्द्र यह स्पष्ट करते हैं कि श्रीनगर में सभी धार्मिक मतों की शिक्षा की शासन द्वारा व्यवस्था की गई थी।

पृथ्वीपतिशाह के शासनकाल में आगरा–दिल्ली के प्रख्यात चित्रकार श्यामदास और हरिदास को श्रीनगर में बसाने से 'गढ़वाल चित्रकाल' का उद्भव और विकास शुरू हुआ। मौलाराम जैसे लब्धप्रतिष्ठित चित्रकार, कवि और चिन्तक ने चित्रकला के क्षेत्र में श्रीनगर का नाम अमर कर दिया। श्रीनगर में प्राचीन चित्रों के साथ-साथ हस्तलिखित ग्रंथों के भण्डार भी सुरक्षित हैं। स्व० रविदत्त थपल्याल और स्व० पातीराम के संग्रह में सुरक्षित ग्रंथों से ज्ञात होता है कि ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना (1815 ई०) से पूर्व श्रीनगर में एक महत्त्वपूर्ण विद्यालय और पुस्तकालय था। ज्योतिष और आयुर्वेद की कुछ पुस्तकों का संस्कृत से गढ़वाली भाषा में अनुवाद भी उस समय किया गया था। इसी संग्रह में सुरक्षित एक पंजिका से ज्ञात होता है कि श्रीनगर में उर्दू और अंग्रेजी की शिक्षा की व्यवस्था के लिए सर्वप्रथम नगर के प्रतिष्ठित लोगों की एक सभा आजोजित की गई थी और उसी के प्रयत्नों से श्रीनगर में आधुनिक शिक्षा का श्रीगणेश हुआ था।

सन 1803 में सात दिन और रातों तक श्रीनगर में भूकम्प के झटके आते रहे जिससे सारा नगर ध्वस्त हो गया। बाद में 25 अगस्त 1894 ई० की रात को गोहना ताल के अचानक टूट जाने के कारण 26 अगस्त को सारा श्रीनगर भी बह गया। सन 1896 ई० में गढ़वाल के तत्कालीन कलक्टर श्री पौ ने पुरानी बस्ती से लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर कुछ अधिक ऊँचाई पर नये श्रीनगर का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया। ये नगर चौपड़ की तरह आकृति वाला बाजार एवं चौड़ी सड़कों का नगर है। यहां अस्पताल, डाक व तार घर एवं डाक-बंगले का निर्माण भी हो चुका है। सन 1961 में बिड़ला राजकीय महाविद्यालय की स्थापना के बाद पौलीटेकनीक, आई० आई० टी०, राजकीय पर्यटन केन्द्र कार्यालय तथा विश्रामगृह एवं सार्वजनिक निर्माण विभाग के सुन्दर विश्रामगृह का भी यहां पर निर्माण किया गया है। श्रीनगर का राजकीय इन्टर कालेज गढ़वाल की बहुत पुरानी शिक्षण संस्थाओं में गिना जाता है। यहां अनेक धर्मशालायें एवं मन्दिर स्थित हैं। बद्रीनाथ, तथा केदारनाथ के यात्रा मार्ग पर स्थित होने के कारण प्रति वर्ष हजारों यात्री श्रीनगर आते हैं अथवा यहां से होकर गुजरते हैं।

श्रीनगर की स्थिति गढ़वाल के केन्द्र में नदी तट पर एक समतल एवं उपजाऊ मैदान में होने के कारण इस नगर की अनन्त समृद्धि का द्योतक है। यह युग युगों से गढ़वाल की संस्कृति का केन्द्र रहा है। गढ़वाल में अनेक नगर स्थापित हो जाने के बाद भी गढ़वाल में 'बाजार' होने का श्रेय केवल श्रीनगर को ही प्राप्त है। इसी परम्परा में जन आन्दोलन और लोक आकांक्षा के परिणाम स्वरूप श्रीनगर में गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना हुई है। इस नगर की जनसंख्या सन 1901 में मात्र 2091 थी, सन 1971 में ये 5566 हो गई लेकिन आज लगभग दस हजार व्यक्ति श्रीनगर में निवास करते हैं। श्रीनगर का मास्टरप्लान भी बन चुका है और पीने के पानी की व्यवस्था में सुधार लाने के प्रयत्न भी किये जा रहे हैं। आशा है कि सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में श्रीनगर की जो शोभा थी वह एक बार फिर इस नगर की श्रीवृद्धि करने में रतन कवि के निम्न कवित्त की सार्थकता पुन सिद्ध कर सकेगी :—

दशन मदन सोहै सुत मदन थिर,
दामिनी कदंबिनी में थिति हेम करु की।
सुकवि रतन सुरपति में सवाई जामें,
सहिवी सरूप सुकुमार सुरतरु की।
करत कुबेर कोटि कमनीय कायन के,
रुचिराज मारग में आपने सहरु की।
एक-एक मुख के अलेखे देखियत विधि,
अद्भुत सातों दीप सोभा श्री नगरु की॥

(षष्ट-उद्योत, फते प्रकाश)

● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

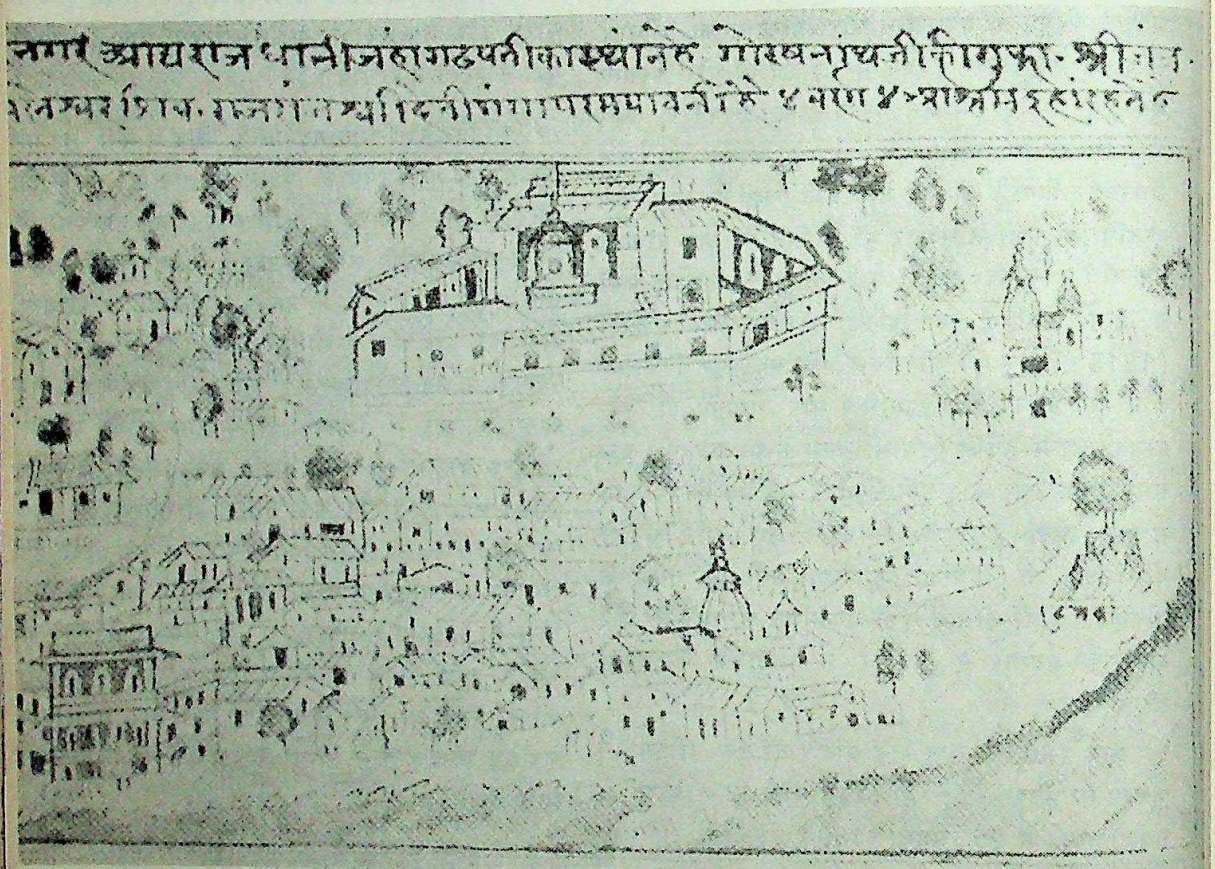

18वीं सदी के श्रीनगर शहर का चित्र जिसमें राज दरबार, गुरुगोरखनाथ मंदिर तथा अलकनन्दा नदी भी दिखलाये गये है। (चित्रकार-ज्वालाराम) सन 1803 के भूकम्प के कारण तथा बाद में बिरही की बाढ़ से सम्पूर्ण प्राचीन नगर नष्ट हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

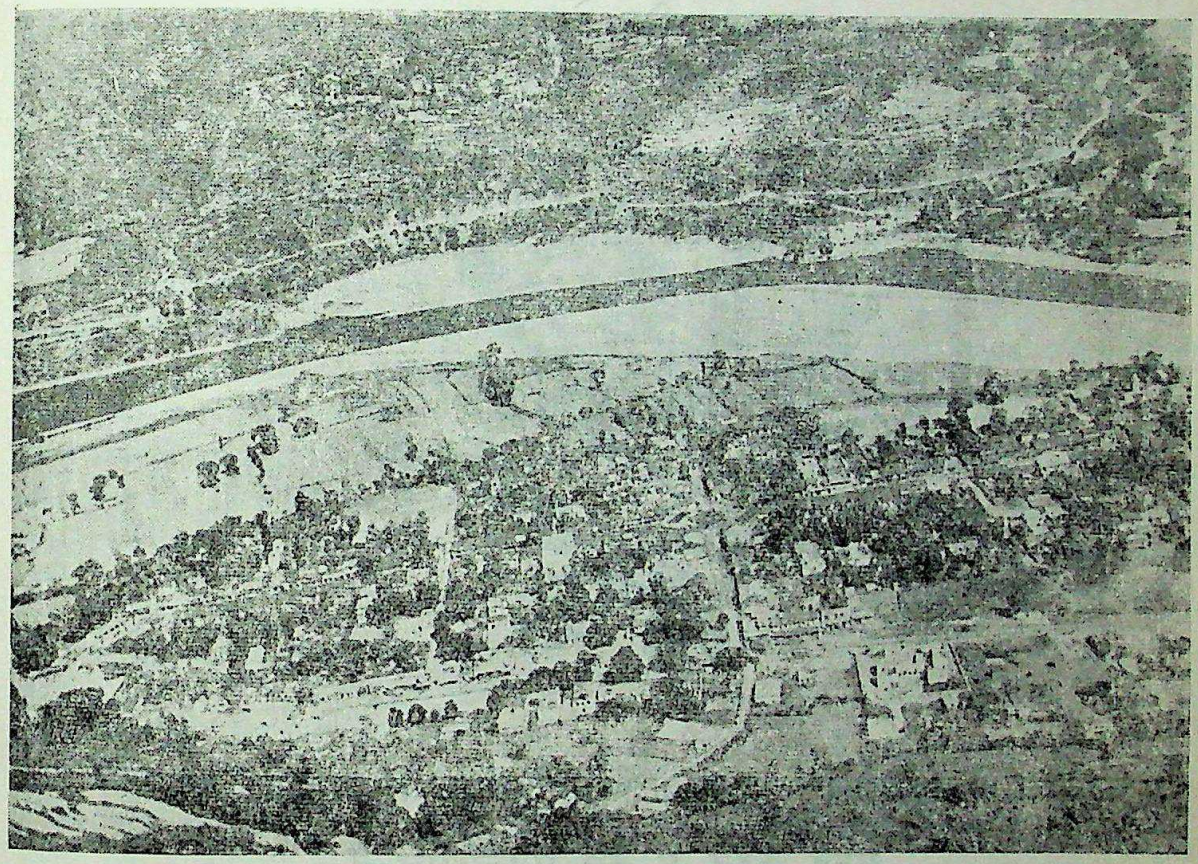

वर्तमान श्रीनगर का एक दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाल मंडल विकास निगम

राजपुर रोड, देहरादून

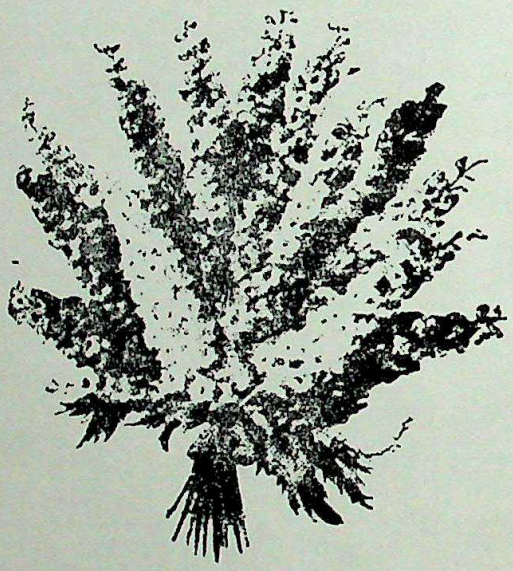

गढ़वाल के सर्वांगीण विकास के लिए आर्थिक विकास का आधार सुदृढ़ करने में हम प्रयत्नशील हैं

आज

गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह के अवसर पर हम सभी विद्वानों का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाल में शिक्षा का विकास

अतीत से ही इस क्षेत्र में जिसे उत्तराखंड, हिमवन्त तथा बहुश्रुत केदारखंड के नाम से जाना जाता था शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार का समस्त श्रेय उन ऋषि-मुनियों को है जिन्होंने यहां की अनेक पवित्र नदियों के तट पर अथवा संगमों पर आश्रम स्थापित किये थे। आर्य प्रजाति के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' घोष से यहां की प्राचीन जन जातियों यथा, कोल, किरात, दरद, तुषार, तंगण आदि के मध्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार की अनथक भावना ने इसे कालान्तर में तीर्थ भूमि ही घोषित कर दिया। फलत: तपस्वियों और वानप्रस्थियों के रूप में मैदानी अंचल से यहाँ श्रेष्ठ विद्वानों एवं राजपुरुषों का आगमन स्थायी निवास के रूप में होने लगा और ग्राम-पल्लिका तथा पुर विस्तार के साथ तत्कालीन शिक्षा के धार्मिक स्वरूप का भी यहाँ विकास होने लगा।

महाभारत काल से ही यहाँ मालिनी तट पर कण्वाश्रम, यमुना तट पर भारद्वाज आश्रम, सरस्वती एवं नवालका (नयार) तट पर व्यास आश्रम, मिल्लगंगा तट पर वशिष्ठ आश्रम, तथा अलकनन्दा तट पर बद्रिकाश्रम की अवस्थिति का उल्लेख मिलता है। भारद्वाज आश्रम ने यहाँ इतने दीक्षित स्नातक पैदा किये कि एक समय यह सम्पूर्ण क्षेत्र 'भारद्वाज–जन' ही कहलाने लगा था जहां अधिकांश कुलों का भारद्वाज गोत्र आज भी पाया जाता है।

बौद्ध एवं जैन भिक्षु तथा श्रमण भी यहां धर्म प्रचार लालसा से आये। बौद्धायन (बधाण), अहोगंग, उक्षीरध्वज, तथा मोरध्वज, उनके संघ एवं विहार केन्द्र बन कर शिक्षा देने लगे। नागनाथ पोखरी क्षेत्र में जैन श्रमणों को भी अपने मत प्रचार में सफलता मिली और एक समय यहां 'निर्ग्रन्थ तथा अंगों' का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ। शिक्षा के प्रचार प्रसार में धर्म-ध्वजा-धारियों जैसे शंकराचार्य, बल्लभाचार्य तथा गोरखनाथ का नाम भी उल्लेखनीय है जिन्होंने इस क्षेत्र की सांस्कृतिक महत्ता के कारण यहाँ आना उचित समझा तथा यहां आकर अपने आश्रम. पीठ एवं मठ स्थापित किये। ये केन्द्र धर्म की शिक्षा से ही जन कल्याण की आकाँक्षा रखते थे अत: उन दिनों धर्म एवं शिक्षा को समन्वित अनुशासन समझा जाता था।

आठवीं तथा नवीं सदी तक गढ़वाल के समस्त शिक्षा केन्द्र निन्न स्वरूपों में स्पस्ट रूप से बँट गये थे :—

1. प्रमुख तीर्थों तथा मन्दिरों से जुड़े शिक्षा केन्द्र जैसे बद्रिकाश्रम, तपोवनीय बद्रिकाश्रम, काली–मठ, अगस्त्यमुनि, वामंन स्वामी मन्दिर, वीरणेशवर (बिनसर), तथा नारायण स्वामी (पांडुकेश्वर) आदि;
2. अग्रहार ग्राम में बसे विद्वान धर्माचार्यों के संरक्षण में चल रहे विद्या केन्द्र;
3. पुर विशेष से जुड़े शिक्षा केन्द्र।

पुर विशेष से जुड़े शिक्षा केन्द्र राज्याश्रय में भी चलते थे और इन्हें धार्मिक संस्थायें भी चलाती थीं। इस युग में हर्षपुर, दीपपुरी, त्रयम्बपुर, कार्तिकेयपुर, सुभिक्षपुर, टंकनपुर तथा ब्रह्मपुर शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे। शिक्षा के पाठ्यक्रम में परम्परागत प्रणाली का प्रभाव था अत: वह वेद, व्याकरण तथा दर्शन प्रधान थी। मगर धीरे-धीरे जन आवश्यकता के अनुसार ज्योतिष, कर्मकाण्ड तथा आयुर्वेद आदि पर भी ध्यान दिया जाने लगा। मध्यकाल में अनेक गढ़पतियों के शासनकाल में शिक्षा को प्रचुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाल में सन 1952 से हम बैंकिंग सुविधायें प्रदान करते रहे है

और समाज के दुर्बल वर्ग की

सहायता में लगे हैं

गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह

के अवसर पर हम सबका हार्दिक

अभिनन्दन करते हैं

जिला सहकारी बैंक लि०

कोटद्वार गढ़वाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजाश्रय प्राप्त हुआ और समस्त विद्वान, आचार्य एवं धर्माचार्य वास्तविक अर्थों में उपाध्याय (शुल्क लेकर पढ़ाने वाले) बनकर अपने निवास में ही शिक्षा देकर द्रोणाचार्य परम्परा का निर्वाह करने लगे।

गढ़वाल राज्य (पँवार काल) में शिक्षा की इस स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आ सका। केवल उर्दू-फारसी शिक्षा को राजकीय आवश्यकता के कारण तथा राजदरबार में 'लिखवार' की निरन्तर उपलब्धि बनी रहने के कारण पूरा संरक्षण प्राप्त हुआ। अब देव पूजा विभाग के अध्यक्ष को प्राय: मन्दिरों से जुड़े विद्या केन्द्रों को देखने का कार्य सौंपा जाता था। ये परम्परा गोरखा आक्रमण तक चलती रही।

अंग्रेजी राज्य की स्थापना के बाद गढ़वाल के दो भागों ब्रिटिश गढ़वाल तथा टिहरी रियासत में शिक्षा का प्रसार ईस्ट इन्डिया कम्पनी की शिक्षा नीति के अनुरूप ही किया गया। लोगों को प्राइमरी स्तर तक मात्र शिक्षित करना ही पर्याप्त समझा जाने लगा। टिहरी राज्य में प्राचीन शिक्षा पद्धति भी यथावत चलती रही। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में श्रीनगर, कांसखेत तथा पोखड़ा में तीन हिन्बी मिडिल स्कूल तथा पोखड़ा में एक ट्रेनिंग स्कूल खोला गया ताकि गढ़वाल में प्राइमरी शिक्षा के प्रसार के लिये अध्यापक तैयार किये जा सकें। बीसवीं सदी के प्रारम्भ में सरकार ने श्रीनगर में एक अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करने वाला हाई स्कूल तथा पौड़ी में उसी तरह का मिशन स्कूल ईसाई मिशनरियों ने खोला। सन 1931 में गढ़वाल में शिक्षा की स्थिति इस प्रकार थी :—

1. मिडिल स्कूय—कांसखेत, खिर्सू, पोखड़ा, मटियाली तथा नागनाथ में ; कुल 5।
2. अपर प्राइमरी स्कूल—37।
3. लोअर प्राइमरी स्कूल—69।

टिहरी रियासत में इसी समय एक हाईस्कूल, तीन मिडिल स्कूल, दो संस्कृत विद्यालय तथा केवल कुछ दर्जन प्राथमिक विद्यालय थे।

सन 1935 के बाद सम्पूर्ण पर्वतीय क्षेत्र में प्राइमरी शिक्षा का विशेष प्रसार हुआ क्योंकि अब जिला परिषदों में जन प्रतिनिधित्व अधिक हो गया था तथा देश में एक नई राजनैतिक चेतना फैल गई थी। सन 1950 में टिहरी में 535 बेसिक पाठशालायें, 43 जूनियर हाईस्कूल तथा 4 हायरसेकेंडरी स्कूल विद्यमान थे। गढ़वाल जनपद जो तब पौड़ी तथा चमोली जिलों का सम्मिलित स्वरूप था उसमें प्राइमरी, मिडिल, हाईस्कूल तथा इन्टर कालेजों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। सन 1941 में टिहरी में 9.29% जन संख्या साक्षर थी जबकि गढ़वाल में 12.67%। सन 1971 में साक्षरता का प्रतिशत संलग्न तालिका में दिया गया है। गढ़वाल में शिक्षा के क्षेत्र में बहुत उन्नति हुई है। सन 1973 में जब गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना हुई समस्त गढ़वाल मंडल में कालेजों में 500 अध्यापक कार्यरत थे तथा कुल 8752 छात्र अध्ययन कर रहे थे।

गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना के समय इस सम्पूर्ण क्षेत्र में 3026 प्राइमरी पाठशालायें, 366 जूनियर हाईस्कूल, 138 हायरसेकेंडरी स्कूल तथा 15 डिग्री एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय थे। वर्ष 1977 में गढ़वाल संभाग में उच्च एवं अन्य शिक्षा की स्थिति का पता परिशिष्ट में दी गई तालिका से लग सकता है। आज प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्रों में गढ़वाल क्षेत्र बहुत आगे बढ़ चुका है। विश्वविद्यालय स्तर पर 11699 छात्र अनेक महाविद्यलयों में अध्ययन कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यातायात पर्यटन विकास सहकारी संघ लि०

मुनि की रेती एवं ऋषिकेश

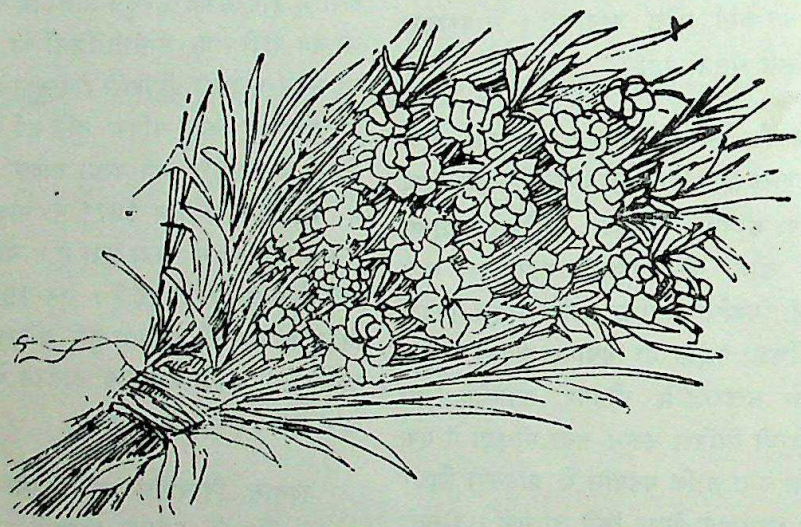

गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह के

अवसर पर

सभी को अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करते हैं

जन सेवा ही अपना एक मात्र लक्ष्य है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाल विश्वविद्यालय

सन 1973 में जब गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना हुई इसमें 14 महाविद्यालय सम्मिलित किये गए और एक नया महाविद्यालय खोलने की स्वीकृति भी शासन से प्राप्त हो गई थी। इन चौदह महाविद्यालयों में 8 आगरा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध थे तथा छः महाविद्यालय मेरठ विश्वविद्यालय से। दोनों विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में कहीं कहीं पर बड़ा विचित्र अन्तर तो था ही दोनों में अलग अलग प्रकार की परीक्षा प्रणालियाँ भी चल रहीं थीं। आगरा विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में परंपरागत प्रभाव था और उसकी परीक्षायें वर्ष में एक बार सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को आधार मानकर ली जाती थीं मगर मेरठ विश्वविद्यालय ने अपने पाठ्यक्रम को परंपरा से हटा कर उसमें नबीन खोजों एवं दिशाओं को सम्मिलित कर आकर्षक एवं काफी प्रभावशाली बना दिया था और उसमें सेमेस्टर प्रणाली से परीक्षायें होती थी 'अर्थात' छः माह का एक निश्चित पाठ्यक्रम जिस पर छः महीने में छात्रों की परीक्षा ले ली जाती थी। मेरठ विश्वविद्यालय छात्रों को किसी भी परीक्षा के परीक्षाफल को निरस्त करा कर उसमें दुबारा सुधार करने की अनुमति भी प्रदान करता था। इस प्रकार इन दोनों प्रकार के पाठ्क्रमों एवं परीक्षा प्रणालियों में सामंजस्य स्थापित कर आगे बढ़ना असंभव न सही कठिन अवश्य था। अतः मोटे तौर पर गढ़बाल विश्वविद्यालय ने मेरठ के पाठ्यक्रम और आगरा की परीक्षा प्रणाली को चुनकर एक नितांत नवीन परिवेश में अपनी स्थापना की।

गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना के पीछे स्थानीय लोगों की यह आकांक्षा थी कि इस विश्वविद्यालय को गढ़वाल क्षेत्र की गरीबी, शैक्षिक एवं आर्थिक पिछड़ेपन तथा विशिष्ट सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं को भी ध्यान में रखना होगा ताकि इस क्षेत्र का सर्वांगीण विकास हो सके और उस विकास का सारा आधार गढ़वाल विश्वविद्यालय का तकनीकी दृष्टि से सम्पन्न अध्यायक एवं छात्र समाज तैयार करे।

अपने इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए विश्वविद्यालय निरंतर प्रयत्नशील है। इसके अन्तर्गत 3 संघटक महाविद्यालय तथा 12 सम्बद्ध महाविद्यालय सम्मिलित हैं जिनका विवरण निम्नवत है:—

क्रम सं०	महाविद्यालय का नाम	स्थापना का वर्ष	वर्तमान अध्यापक सं०	वर्तमान छात्र सं०
1.	बिड़ला संघटक महाविद्यालय श्रीनगर	1961	90	845
2.	स्वामी रामतीर्थ संघटक महाविद्यालय टिहरी	1969	36	452
3.	बी० गो० रेड्डी संघटक महाविद्यालय पौड़ी	1971	31	425
4.	डी० ए० वी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय देहरादून	1946	130	3798
5.	दयानन्द बृजेन्द्र स्वरूप स्नात० महाविद्यालय देहरादून	1961	66	1098

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6,	दयानन्द महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय देहरादून	1961	7	148
7.	महादेवी कन्या पाठशाला देहरादून	1958	51	1503
8.	म्यूनिसिपल स्नातकोत्तर महाविद्यालय मसूरी	1963	21	216
9.	श्री गुरु राम राय स्नात० महाविद्यालय देहरादून	1960	34	527
10.	राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर (चमोली)	1966	45	630
11.	राजकीय स्नात० महाविद्यालय उत्तरकाशी	1969	27	374
12.	डा० पीं० द० ब० हि० राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार	1971	47	832
13.	पं ल० मो० शर्मा राजकीय स्नात० महाविद्यालय ऋषिकेश	1973	32	668
14.	राजकीय महाविद्यालय जयहरिखाल (लैंसडाउन)	1972	13	101
15.	श्री अ० प्र० बहुगुणा राजकीय महाविद्यालय अगस्त्यमुनि	1974	8	82
	योग	638		11699

इस प्रकार इस समय गढ़वाल विश्वविद्यालय में 11699 छात्र संस्थागत रूप से अध्ययनरत हैं—तथा 638 अध्यापक अध्यापन कार्य में लगे हैं। गत दो वर्षो में संस्थागत तथा व्यक्तिगत छात्र जो विश्वविद्यालय की विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित हुए उनकी संख्या क्रमशः 18500 तथा 22387 थी।

समय-समय पर मिले अनुदानों से प्राप्त विश्वविद्यालय के पास इस समय 1 करोड़ 84 लाख 45 हजार रु० की सम्पत्ति है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियम 12 (एफ) के अधीन मान्यता प्राप्त होने के लिए यह सम्पत्ति 2 करोड़ रु० की होनी चाहिए जिसमें अभी 15 लाख 55 हजार रु० बाकी हैं। अब पूर्ण आशा है कि शीघ्र ही यह कमी पूरी कर दी जायेगी और हमारे विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से मान्यता प्राप्त हो सकेगी तथा उचित वित्तीय सहायता मिल सकेगी।

विश्वविद्यालय का भवन निर्माण कार्य लगातार प्रगति पर है। यह कार्य पहिले सार्वजनिक निर्माण विभाग कर रहा था। अब उत्तर प्रदेश निर्माण निगम को नवम्बर 1978 से यह काम सौंप दिया गया है। इस समय निर्माणाधीन भवन कला—संकाय, महिला—छात्रावास और कार्मिक निवास हैं। आशा है कि आगामी शिक्षा सत्र के प्रारम्भ होने से पूर्व इनका निर्माण हो सकेगा और पिछले कई वर्षों से चली आ रही स्थानाभाव की समस्या काफी हद तक दूर हो जायेगी। भवन निर्माण के अग्रिम कार्यक्रम का उल्लेख भी अन्यत्र किया गया है।

गत वर्षों में इन सभी महाविद्यालयों में उतीर्ण छात्रों की संख्या 70-80 प्रतिशत से भी अधिक रही जिसके लिए छात्र, प्राचार्य, अध्यापक व अधिकारी सभी धन्यवाद के पात्र हैं। इस कक्षा-गत पठन-पाठन के अतिरिक्त शोधक्षेत्र के प्रोजेक्ट संचालन में भी विश्वविद्यालय ने उल्लेखनीय प्रगति की है। इस समय तक 24 छात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डी० फिल० उपाधि के लिए स्वीकृत हो चुके हैं, एक डी० लिट की उपाधि भी स्वीकृत हो चुकी है तथा दर्जनों छात्र अपने-अपने शोध कार्य में संलग्न हैं। विश्वविद्यालय के अन्तर्गत एक दर्जन से भी अधिक प्रोजेक्ट्स पर कार्य हो रहा है और अनेकों नये प्रोजेक्ट्स भी प्रस्तावित हैं। पिछले तीन वर्षों से सोशियल हैल्थ केयर प्रोजेक्ट का प्रशंसनीय कार्य भी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत चल रहा है। हिमालय शोध संस्थान पिछले दो वर्षों से हिमालय पर एक शोध पत्रिका भी निकाल रहा है। विश्व स्तर पर भी इस विश्वविद्यालय के अध्यापकों ने सम्मान पाया है तथा समय समय पर विदेशों में आमंत्रित होकर विश्व-विद्यालय का प्रतिनिधित्व किया है और उसकी गरिमा बढ़ाई हैं। देश में हुए सेमिनारों में तो अनेक अध्यापक प्रतिनिधित्व करते रहे हैं और कर रहे हैं। इस समय विश्वविद्यायय के संघटक महाविद्यालयों में कुल 141 अध्यापक 4 प्रोफेसर, 8 रीडर तथा 129 प्रवक्ता हैं। विश्वविद्यालय में अद्यावधि 27 विभाग हैं।

पुस्तकालय किसी भी विश्वविद्यालय का प्राण है और उसके स्तर का परिचायक है। तीनों संघटक महाविद्यालयों में इस समय अलग-अलग पुस्तकालय हैं, साथ ही हर विभाग अपने अपने पुस्तकालयों को पुष्ट कर रहा है। इनकी कुल पुस्तक संख्खा इस समय 20 हजार से अधिक है जिनका मूल्य लगभग 10 लाख रुपये से भी अधिक है। वर्तमान निर्माण कार्य की पूर्तिके बाद वाचनालय व पुस्तकालय भवन निर्माण को प्राथमिकता दी जायेगी ताकि पुस्तकालय न केवल व्यवस्थित हो सके बल्कि भविष्य में होने वाली पुस्तकों की संख्या बृद्धि की भी समुचित व्यवस्था हो और पुस्तकालय अपनी वास्तविक भूमिका निभा सके। श्री मुकन्दी लाल जी, बार-एट-लौ ने अपनी बहुमूल्य संग्रहीत पुस्तकों को विश्वविद्यालय को उपहार के रूप में देने का बचन दिया है। गढ़वाल क्षेत्र में कई दुर्लभ पुस्तकों एवं हस्त लिखित ग्रंथों के बहुमूल्य संग्रह हैं जिन्हे प्राप्त करने के लिए भी प्रयत्न किये जा रहे हैं।

इस वर्ष के प्रारम्भ में भारतीय सेवा परीक्षाओं के लिए विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था प्रारम्भ कर दी गई है। इस समय 28 छात्र इस प्राशिक्षण में भाग ले रहे हैं और 11 छात्रों ने आगामी जून के महीने में होने वाली परीक्षाओं के लिए सशुल्क आवेदन पत्र भेज दिये हैं।

एक सेवा योजन कार्यालय भी छात्रों की सुगमता के लिए विश्वविद्यालय के श्रीनगर परिसर में खोल दिया गया है। इसके द्वारा छात्रों को समय समय पर भिन्न-भिन्न विभागों की रिक्तियों के विज्ञापन की सूचना दी जाती है तथा उन्हें उचित रोजगार प्राप्त करने में उचित सहायता उपलब्ध कराने की पूरी पूरी व्यवस्था की गई हैं।

आकाशवाणी नजीबाबाद के सौजन्य से 'तरुण संगम' के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के कार्यों एवं उसके सांस्कृतिक परिवेश के उत्कृष्ट नमूनों का प्रसारण प्रति महीने तीसरे सप्ताह के शुक्रवार को किया जाता है। इसमें सभी संघटक एवं सम्बद्ध महा विद्यालय अपनी-अपनी रुचि के अनुसार कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं।

गढ़वाल विश्वविद्यालय में इस समय दो प्रोफेसर तीन रीडर तथा 24 प्रवक्ताओं के पद शासन द्वारा स्वीकृत हैं मगर उन पर अभी चुनाव होना शेष है। शासन से जिन अतिरिक्त पदों की मांग की गई उनका व्यौरा निम्नवत है :—

प्रोफेसर—5

रीडर—15

प्रवक्ता—59

विश्वविद्यालय में इस समय 350 छात्र विभिन्न विषयों पर शोध कार्य के लिए पंजीकृत हैं और वे विश्वविद्यालय तथा सम्बद्ध महाविद्यालयों के विद्वान प्राध्यापकों के निर्देशन में कार्य कर रहे हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विभिन्न शिक्षण अनुभागों के लिए कुल 14 स्कीमें या प्रोजेक्ट स्वीकृत हैं जो पूर्णतः आयोग द्वारा अनुदानित हैं। इनके अन्तर्गत 22 छात्रों को शोध-छात्र-वृत्ति प्रदान की गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाल की पवित्र देव-भूमि के पुण्य तीर्थों में प्रति वर्ष लाखों धर्म प्राण यात्री दर्शनार्थ आते हैं जिनकी यथा संभव सहायता ही हमारा एक मात्र लक्ष्य है—

आज

गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह के अवसर पर हम इस विश्वविद्यालय की सर्वांगीण उन्नति की मंगल कामना करते हैं

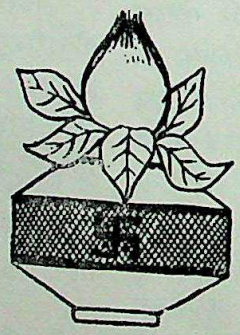

श्री बद्रीनाथ केदारनाथ मंदिर समिति

बद्रीनाथ, चमोली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयोग द्वारा 5 जूनियर रिसर्च फेलोशिय भी विश्वविद्यालय को प्रदत्त हैं जो संस्कृत, हिन्दी, भूगोल, मनोविज्ञान तथा इतिहास विषयों में एक-एक आबंटित हैं। इस फेलोशिप के अन्तर्गत प्रत्येक छात्र को रु० 400/- प्रतिमाह छात्रवृत्ति तथा रु० 1500/- वार्षिक विविध व्यय के रूप में स्वीकृत किया गया है।

विश्वविद्यालय में अब तक जो निर्माण कार्य हुआ है उसका विवरण निम्नवत है :—

सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा विश्वविद्यालय के भवनों के निर्माण कार्य में शिथिलता होने के कारण राजकीय निर्माण निगम से कार्य कराने का निर्णय नवम्बर 1978 से लिया गया हैं और इस दिशा में अब अच्छी प्रगति है। इस समय राजकीय निर्माण निगम द्वारा कला संकाय भवन, महिला छात्रावास, तथा लिपिक वर्गीय कर्मचारियों के लिए 16 आवासों का निर्माण कार्य हो रहा है जिसकी अनुमानित लागत क्रमशः 30 लाख, 7.83 लाख तथा 9 69 लाख रुपये हैं। आशा की जाती है कि इन भवनों का निर्माण कार्य 31 जुलाई 1979 तक पूरा हो जायेगा। रुड़की विश्वविद्यालय से इस संदर्भ में जो अनुबंध हुआ था उसे अब निरस्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय की प्राथमिक आवश्यकता भवनों का निर्माण कार्य है। चूंकि आवश्कतायें बहुत सी हैं और शासन से वांछित धनराशि की स्वीकृति पाये बिना कार्य प्रारम्भ नहीं किया जा सकता और युगपद् बहुत से निर्माण कार्य यहां किये भी नहीं जा सकते, इस लिये आगामी 2 वर्षों में भवन निर्माण का कार्य तीन निम्नलिखित चरणों में कराने का विचार किया जा रहा है।

वर्ष 1878-79

1. ग्रन्थालय, पुस्तकालय 2. औडोटोरियम 3. अतिथि गृह (30 कमरों का 30 अतिथियों के लिये) 4. औषाधालय 5. प्रशासनिक भवन, 6. कुलपति सचिवालय 7. केफेटेरिया 8. कुलपति आवास।

वर्ष 1980-81

1. अधिकारियों के आवास गृहः कुलसचिव, वित्ताधिकारी, उप कुलसचिव, सहायक कुल सचिव तथा जन सम्पर्क अधिकारी आदि के लिये 2. विज्ञान संकाय भवन 3. वाणिज्य संकाय भवन 4. शिक्षा संकाय भवन 5. कला एवं संगीत भवन 6. ओपेरा एयर थियेटर भवन आदि 7. छात्रावास (पुरुष और महिलाओं के लिये) 8. छात्रसंघ भवन 9. शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के आवास 10. जिमनेजियम 11. स्विमिंग पूल 12. प्रोफेसरों के आवास 13. रीडर्स आवास, 14. प्रवक्ताओं के आवास 15, परीक्षा हाल आदि।

वर्ष 1981-82

1. छात्र कल्याण कार्यालय 2. सेवायोजन कार्यालय 3. नियन्ता कार्यालय 4. बैंक एवं पोस्ट आफिस भवन 5. बिजली सब स्टेशन 6. वाटर वर्क्स 7· टेलीफोन एक्सचेंज 8. बच्चों का नर्सरी स्कूल 9 वनस्पति विज्ञान विभाग का ग्रीन तथा ग्लास हाउस 19. हाबी सेन्टर आदि।

विश्वविद्यायय द्वारा भूमि क्रय की स्थिति

परिसर	रकबा (क्षेत्रफल)	भूगतान की राशि
1. श्रीनगर	47.21 एकड़	रु० 7,34,503=00
2. चौरास	66.ध4 एकड़	रु० 9,05,076=00
3. नौनीखाल (कीर्ति नगर)	2.34 एकड़	रु० 0,29,785=00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौरास और नौनीखाल वाली भूमि का उपयोग अभी सड़कों और पानी की व्यवस्था न होने से नहीं हो पा रहा है। चौरास की भूमि का पूरा उपयोग तब ही संभव होगा जब अलकनन्दा पर गाड़ी का पुल और किल्किलेश्वर से वहां तक सड़क बन सके। नौनीखाल में भी सड़क बनाने की कठिनाई है।

भविष्य मे भूमि क्रय की योजनायें

श्रीनगर के आस-पास जो भूमि समतल और उपयुक्त थी उसका प्रयोग भवनों के निर्माण में हो गया है, अथवा हो रहा है। अब जो कुछ कहीं उपलब्ध है उसका उपयोग सुलभ करने के लिए सड़कों को बनाने की आवश्यकता है। सड़कों को बनाने में जितना धन लगेगा उससे पर्याप्त भूमि भी निर्माणोचित नहीं मिल पायेगी और उस धनराशि से कहीं कम धन में परिसर की पार्श्ववर्ती भूमि क्रय की जा सकती है विश्वविद्यालय के विस्तार के साथ-साथ निर्माण की आवश्यकतायें भी बढ़ेगी। अस्तु उपयुक्त भूमि का क्रय करना अपरिहार्य हो जाता है। कुछ आवश्यकतायें ऐसी हैं जो तात्कालिक महत्व की है और उनकी पूर्ति के बिना विश्वविद्यालय के सामान्य विकास में बाधा पड़ रही हैं। ऐसी आवश्यकतायें उदाहरण के लिये निम्नलिखित है :—

1· छात्रों के लिए क्रीड़ा स्थल का अभाव होने के कारण खेल के मैदान के लिए श्रीनगर में ही भूमि क्रय करने का भी विचार किया जा रहा है। इस अभाव में छात्रों के विकास में बहुत बड़ी क्षति हो रही है।

2· श्रीनगर मैं 30 कमरों का सुसज्जित 30 अभ्यागतों के यिए अतिथि गृह,

3· कुलपति का आवास,

4· चौरास एवं नौनीखाल की भूमि का सदुपयोग करने के लिए क्रमश;

किल्लिलेश्वर से कैम्पस तक की भूमि के लिये सड़क का बनाया जाना नितान्त आवश्यक है। सड़क निर्माण हेतु सर्वेक्षण कार्य भी सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा करवाया गया है। श्रीनगर—श्री कोट के बीच चौरास को जोड़ने वाले झूले पुल को गाड़ी का पुल बनाना और पुल से चौरास की भूमि तक सड़क का बनाया जाना अति आवश्यक है।

5. नौनीखाल की भूमि का उपयोग करने के लिए सड़क का बनाया जाना भी अति आवश्यक है।

दि इंस्टिट्यूट आफ हिमालयन स्टडीज एण्ड रीजनल डेवलपमेंट

पर्वतीय क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थिति, पर्यावरण एवं खनिज सम्पदा, क्षेत्रीय संसाधन, कृषि, बागवानी, पशुपालन, पर्यटन, उद्योग तथा विभिन्न साँस्कृतिक धाराओं का सम्यक् अध्ययन, सर्वेक्षण और उपयोग आदि को बौद्धिक स्तर प्रदान करने के लिए गढ़वाल विश्वविद्यालय में 'दि इंस्टिट्यूट आफ हिमालयन, स्टडीज एण्ड रीजनल डेवलपमेंट की स्थापना की गई है जिसके निम्न उद्देश्य निर्धारित हैं—

1. पर्वतीय क्षेत्र की नृ-शक्ति, आवश्यकता, वन और जल सहित प्राकृतिक और खनिज संसाधनों का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करना।

2. पर्वतीय क्षेत्र की आर्थिक, सामाजिक, नृशास्त्रीय और सांस्कृतिक समस्याओं का अध्ययन कर हैमवती परिस्थितिकी और पर्यावरण में स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों को तैयार करना।

3. द्विवर्गीय शोध का संगठन करना—
   (क) परामर्शमूलक शोध
   (ख) समस्यामूलक शोध

4. राष्ट्रीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में लोक संस्कृति के अध्ययन को संगठित करना।

5. पर्वतीय विकास के सम्बन्धित अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6. क्षेत्र के सुदूर अचलों में सामाजिक कार्यों का गठन।
7. क्षेत्रीय व्यवस्था में परिस्थितिकी के अध्ययन को विकासित करना।

इस इंस्टिट्यूट के अन्तर्गत 1978 में देहरादून में एक सेमीनार का आयोजन किया गया। इंस्टिट्यूट से "हिमालय" नाम की शोध-पत्रिका भी प्रकाशित की जाती है।

1 जून 1977 में रीडर के पद पर नियुक्ति से संस्थान अस्तित्व में आया। कीर्तिनगर के सामने नौनीखाल नामक स्थान पर इस संस्थान के लिए विश्वविद्यालय ने 2½ एकड़ भूमि खरीद ली है और कीर्त्तिनगर टाऊन एरिया कमेटी ने 20 एकड़ भूमि देने का आश्वासन दिया है। श्री स्वामी राम ने 25,000 रु० तथा तीस हजार रु० मूल्य की पुस्तकें संस्थान के पुस्तकालय के लिये दान की है।

विश्वविद्यालय में खेल-कूद

वर्ष 1974 में गढ़वाल विश्वविद्यालय में खेलों के स्तर में विकास एवं छात्रों की खेलों के प्रति अभिरुचि बढ़ाने के उद्देश्य से एक विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद की स्थापना की गई। अन्तर्महाविद्यालय प्रतियोगितायें आयोजित करने से छात्रों के बीच प्रतिस्पर्द्धा की वृद्धि हुई और गढ़वाल विश्वविद्यालय की टीमों ने अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया। यह यढ़वाल क्षेत्र के छात्र-छात्राओं के लिए एक नितान्त नवीन अनुभव था।

वर्ष 1975-76 में गढ़वाल विश्वविद्यालय महिला टेबल टेनिस टीम ने उत्तर क्षेत्रीय अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान और अखिल भारतीय प्रतियोगिता मे दूसरा स्थान प्राप्त किया।

वर्ष 1977-78 में क्रीड़ा परिषद के प्रयास से विश्वविद्यालय में एक क्रीड़ा अनुभाग की स्थापना की गई जिसके सुचारु रूप से संचालन के लिए एक क्रीड़ा अधिकारी नियुक्त किये गये। इस वर्ष 17 अन्तर्महाविद्यालय प्रतियोगितायें आयोजित की गईं तथा 12 खेलों में गढ़वाल विश्वविद्यालय ने अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में भाग लिया। विश्वद्यालय ने इनमें से 7 खेलों के लिए पूर्व प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित किये। गढ़वाल विश्वविद्यालय की पुरुष बालीबाल टीम जम्मू में आयोजित अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता के तीसरे चक्र तक पहुंचने में सफल हो गई थी। इसी प्रकार महिला बास्केट बाल तथा महिला बैडमिन्टन टीमों ने भी तीसरे चक्र तक पहुंच कर दर्शकों की प्रशंसा प्राप्त की। पुरुषों के बैड मिन्टन, टेबल टेनिस तथा ऐथलेटिक्स का प्रदर्शन भी सराहनीय रहा।

वर्तमान सत्र 1978-79 के विलम्ब से प्रारंभ होने के कारण सभी अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में गढ़वाल विश्वविद्यालय की टीमें भाग नहीं ले सकी। मगर विश्वविद्यालय ने अपनी अन्तर्महाविद्यालय प्रतियोगिताओं का स्तर ऊँचा उठाने का प्रयत्न किया। पिछले वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष की प्रतियोगिताओं में अधिक महाविद्यालयों ने भाग लिया। कुछ खेलों के लिए प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित किये गये। गढ़वाल विश्वविद्यालय की केवल 10 टीमों ने इस वर्ष अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इनमें महिला बास्केट बाल, फुट बाल टीम तथा टेनिस टीमों का प्रदर्शन बहुत प्रशंसनीय रहा।

गढ़वाल विश्वविद्यालय ने प्रथम बार उत्तर क्षेत्रीय अन्तर्विश्वविद्यालय महिला बास्केट बाल प्रतियोगिता आयोजित की। इस प्रतियोगिता में 15 विश्वविद्यालय की टीमों ने भाग लिया। पंजाब विश्वविद्यालय को प्रथम तथा गुरु नानक देव विश्वविद्यालय को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

इस विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं की खेलके प्रति बहुत अधिक रुचि है। कौशल, कार्यक्षमता एवं शारीरिक दृष्टि से गढ़वाल के युवक एवं युवतियां काफी सबल हैं। यदि उन्हें पयप्ति सुविधायें तथा उचित मार्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्देशन प्राप्त हो तो वे भारत के किसी भी क्षेत्र के युवक युवतियों के समक्ष प्रतिस्पर्द्धापूर्ण प्रदर्शन मे पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

एन० सी० सी०

गढ़वाल विश्वविद्यालय के अन्तर्गत विभिन्न संघटक एवं संबद्ध महाविद्यालयों में एन० सी० सी० प्रशिक्षण की सुविधायें उपलब्ध हैं। इन यूनिटों का प्रधान ग्रुप कार्यालय देहरादून में स्थित है। नियंत्रण की सुविधा के लिए कई स्थानों पर यूनिट प्रधान कार्यालय स्थापित किये गए हैं। गोपेश्वर, उत्तरकाशी तथा पौड़ी में 3 इन्डिपेन्डेन्ट कम्पनी हेडक्वार्टर हैं जिनके बटालियन प्रधान कार्यालय देहरादून तथा हरिद्वार में हैं। छात्राओं की यूनिट केवल देहरादून में स्थित है। एन० सी० सी० के पुनर्गठन के फलस्वरूप पहिले की अपेक्षा कुछ यूनिटें कम की गई हैं तथा उनमें भी कम्पनी संख्या घटा दी गई है। महाविद्यालयों में उनकी छात्र-संख्या, अन्य सुविधायें एवं माँग के आधार पर जो सब-यूनिटें पार्ट-टाइम एन० सी० सी० अधिकारी के आधीन स्थापित हैं वे कम्पनी अथवा प्लाटून स्तर पर हैं।

एन० सी० सी० के सन्दर्भ में शिक्षामंत्री की अध्यक्षता में प्रान्त के समस्त कुलपतियों की बैठक में हुए निर्णयों तथा उपसमितियों और सलाहकार समितियों की संस्तुति के बाद आशा की जाती है कि नवीन सत्र से इसका प्रत्येक विश्वविद्यालय में पुनर्गठन होगा एवं प्रत्येक महाविद्यालय में सब-यूनिटों की स्थापना होगी। गढ़वाल विश्वविद्यालय की योजना है कि विश्वविद्यालय में बटालियन हेडक्वार्टर की स्थापना होनी चाहिए और किसी भी महाविद्यालय में अप्रशिक्षित एन० सी० सी० अधिकारी नहीं रहना चाहिए।

राष्ट्रीय सेवा योजना (एन० एस० एस०)

विश्वविद्यालय के प्रत्येक महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की एक इकाई है। 1978-79 में साधारण क्रियाकलापों के लिए बाईस सौ तथा विशेष शिविर योजना के लिए ग्यारह सौ छात्र संख्या निर्धारित की गई और साधारण कार्यों के लिए 81909 रूपये और 66000 रूपये विशेष शिवर योजना के लिए स्वीकृत किए गए। इस सत्र के तेरह विशेष शिवरों में सात सौ छात्रों और लगभग एक सौ छात्राओं ने भाग लिया। राष्ट्रीय सेवा योजना की उपयोगिता तथा छात्रों में उसकी लोक प्रियता को देखते हुए सत्र 1979-80 के लिए साधारण कार्यों की सदस्य संख्या अठाईस सौ तथा विशेष शिविरों की सदस्य संख्या चौदह सौ निर्धारित की गई है।

1978-79 में सभी इकाईयों का कार्य संतोषजनक रहा लेकिन डी० वी० एस० कालेज देहरादून, एम० के० पी० कालेज देहरादून, बिड़ला संघटक कालेज श्रीनगर, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर और उत्तरकाशी की इकाइयों का कार्य विशेष रूप से प्रशंसायोग्य रहा। विशेष शिविरों में ग्राम्य मार्गों का निर्माण, वृक्षारोपण, सड़क और क्रीड़ास्थलों की मरम्मत, नहरों की मरम्मत, परिसर की सफाई, औषधियों का संकलन और दान, राष्ट्रीय लघु बचत योजना के खाते खुलवाना तथा उत्तरकाशी के बाढ़ पीड़ितों के लिए धन एकत्र करना आदि कार्यों का सफलता से संचालन किया गया। गोपेश्वर महाविद्यालय की एन० एस० एस० इकाई ने प्रौढ़ शिक्षा पर एक गोष्ठी आयोजित की। डी० ए० वी० कालेज देहरादून की इकाई ने "जनसंख्या वृद्धि का सामाजिक और आर्थिक पहलू" एव "जनसंख्या वृद्धि का जीवनस्तर पर प्रभाव" शीर्षकों के अन्तर्गत वादविवाद और निबन्ध प्रतियोगितायें आयोजित की तथा अक्तूबर 1978 में "राष्ट्रीय परिवार कल्याण पखवाड़ा" मनाया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्य का मूल्यांकन और भविष्य के लिए कार्यक्रम तय करने हेतु विश्वविद्यालय ने एन० एस० एस० योजना अधिकारियों की एक बैठक आयोजित की जिसमें कुलपति तथा सहायक योजना परामर्शदाता सहित 30 सदस्यों ने भाग लिया। कुलपति ने इस बात पर बल दिया कि विशेष शिविरों में सम्पन्न कार्य स्थानीय जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए तथा एन० एस० एस० के कार्यों में स्थानीय नेतृत्व को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघटक महाविद्यालय

श्रीनगर, पौड़ी और टिहरी में गढ़वाल की जनता को उच्चशिक्षा की पर्याप्त सुविधा प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय का परिसर स्थापित किया गया है। गढ़वाल विश्वविद्यालय की घोषणा अप्रैल 1973 में हुई किन्तु प्रशासनिक रूप से 23 अगस्त 1977 को वर्तमान संघटक महाविद्यालयों को पूर्णत: गढ़वाल वि० वि० को सौंपा गया। इस बीच मिली-जुली व्यवस्था चलती रही। ये तीनों महाविद्यालय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हैं और शैक्षिक क्रियाकलापों के साथ-साथ प्रशासनिक रूप से सीधे विश्वविद्यालय से जुड़े हैं।

1. बिड़ला संघटक महाविद्यालय, श्रीनगर—इस महाविद्यालय की स्थापना सन 1969 में हुई और तब से गढ़वाल विश्वविद्यालय का हस्तान्तरित होने तक यह महाविद्यालय विकास के अनेक सोपानों से गुजरा है। बिड़ला परिवार ने दो लाख रुपया देकर इसके भवन का निर्माण कराया। सन 1969 में केवल 20 विद्यार्थियों से प्रारम्भ कर आज इसमें 845 विद्यार्थी विभिन्न विषयों का अध्ययन कर रहे हैं और शिक्षकों की संख्या 6 से 90 तक पहुंच चुकी है। स्थापना के समय स्नातक स्तर पर केवल पाँच विषयों को पढ़ाने की व्यवस्था थी और आज यह संख्या स्नातक तथा स्नातकोत्तर विषयों में बढ़कर 15 तक पहुंच गई है।

आज इस महाविद्यालय में लगभग सभी विषयों में उच्चस्तरीय शोधकार्य हो रहा है, विशेषत: पुरातत्त्व विभाग तथा वनस्पति विभाग उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं।

इस समय महाविद्यालय में चार संकाय हैं:—

1. विज्ञान संकाय—इस संकाय के अन्तर्गत वर्तमानत: भौतिकी, रसायन, गणित, वनस्पति, जन्तुविज्ञान, वानिकी, भूगर्भ, मनोविज्ञान तथा नृतत्व विज्ञानों के विभाग हैं।

2. कला संकाय—इसमें हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास एवं पुरातत्व, राजनीति, अर्थशास्त्र, भूगोल, समाजशास्त्र और पर्यटन विभाग हैं।

3. वाणिज्य संकाय

4. शिक्षा संकाय

विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद सभी विभागों में अध्यापकों और शोध क्षात्रों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्वविभाग

गढ़वाल के उपेक्षित पुरातत्व और सांस्कृतिक केन्द्रों के अध्ययन हेतु 1976 में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व विभाग की स्थापना हुई। इस विभाग से जहाँ 1978 में 10 छात्रों ने स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की, वहीं साथ-ही साथ 1976 में 'ग्राम सर्वेक्षण परियोजना' के अन्तर्गत गढ़वाल के सभी महाविद्यालयों के छात्रों द्वारा ग्रीष्मावकाश में सर्वेक्षण करवाया।

विभाग की ओर से पहला उत्खनन कार्य श्रीनगर के समीप अलकनन्दा के दाहिने तट पर स्थित राजराजेश्वरी मन्दिर (राणीहाट) के प्रांगण में किया गया जहाँ 2500 ई० पू० की एक बस्ती का पता चला। उस समय लोग मिट्टी के बने मकानों में रहते थे और सुन्दर मृद्भाण्डों का प्रयोग करते थे। राणीहाट संस्कृति के द्वितीय और तृतीय काल में ईंटों द्वारा भवनों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

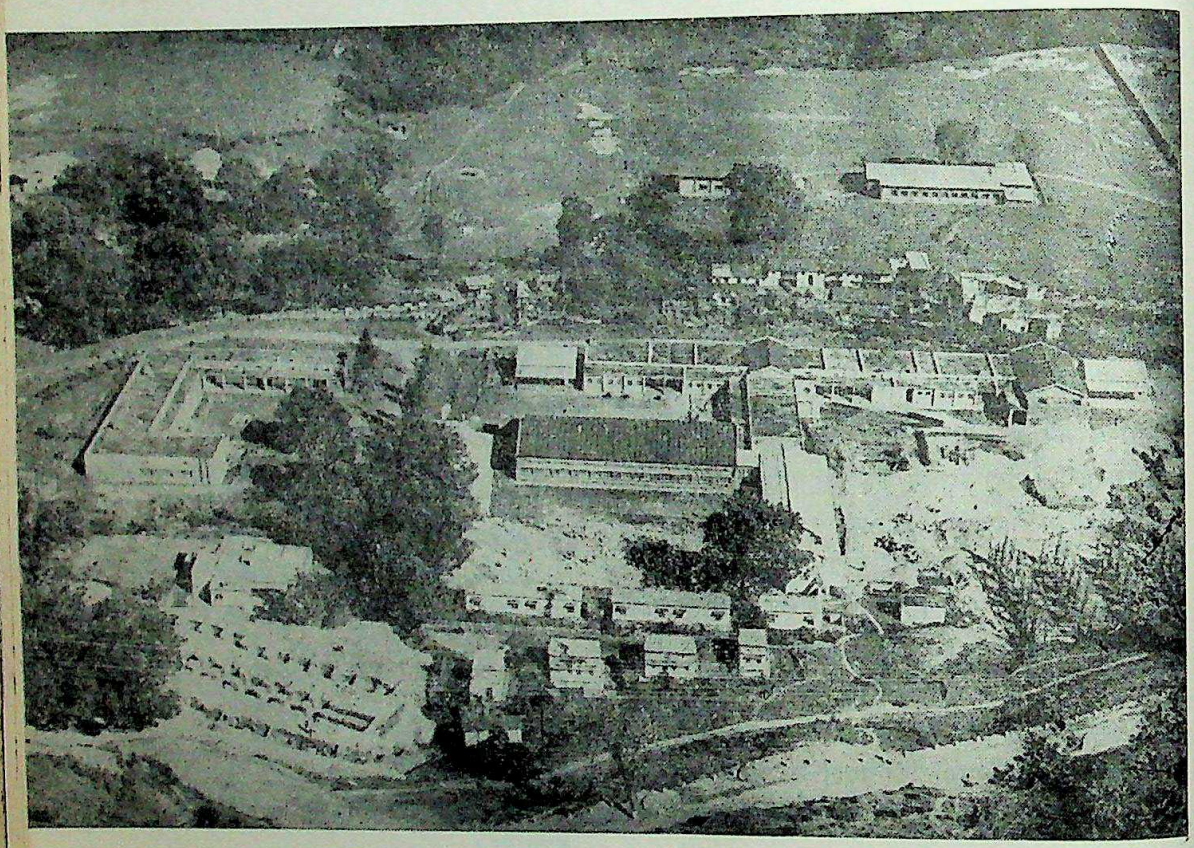

बिड़ला संघटक महाविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्माण किया गया। यहां से प्राप्त ईंटों का आकार गंगा-घाटी में हस्तिनापुर तथा अन्य स्थलों के समरूप था। इस काल में लोगों ने लोहे के अनेक हथियारों का निर्माण कर जीवनयापन किया। वे लोग माँसाहारी थे तथा शिकार के अतिरिक्त मछली पर भी निर्वाह करते थे। इन कालों के उपरान्त राणीहाट के निवासियों ने पत्थर के मकान बनाये। ईंटों का प्रयोग वे बिलकुल छोड़ चुके थे। राणीहाट की सभ्यता में बीच में एक व्यवधान आया जब कि ईसा की दूसरी शती के उपरान्त इस स्थान को लगभग 600 वर्षों तक किन्हीं कारणों से लोगों ने छोड़ दिया। राणीहाट के सांस्कृतिक इतिहास को ईसापूर्व छटी शती से लेकर लगभग ग्यारहवीं शती तक रख सकते हैं। आठवीं शती के पश्चात यहां अनेक मन्दिरों तथा मूर्त्तियों का निर्माण हुआ और यह स्थान शैव तथा शक्ति का महत्वपूर्ण केन्द्र बना।

विभाग द्वारा कोटद्वार से 13 कि० मी० दक्षिण की ओर कोटद्वार-नजीबाबाद मार्ग पर अवस्थित मोरध्वज नामक स्थान का उत्खनन 1978 के 28 दिसम्बर से प्रारम्भ किया गया। उत्खनन फरवरी 24 तक अनवरत रूप से चलता रहा। यहां भी संस्कृति का उदय ईसापूर्व 5वीं शती में हुआ था। उस समय मिट्टी से बनी दीवार और फर्श वाले मकान फूस की छत से ढके होते थे। कालान्तर में भीषण अग्निकांड व पास में बहती हुई नदी की बाढ़ से इस सभ्यता का अन्त हुआ। इस काल के लोगों ने उत्तरी काले ओपदार बर्तन प्रयुक्त किये। साथ ही सुन्दर पतले धूसर मृद्भांड तथा पतले लाल रंग के बर्तन भी प्रयोग में लाये गये। धूसर मृद्भांड इतने उत्कृष्ट हैं कि लगता है कि इसे ईसापूर्व की एक सहस्त्र वर्ष के चित्रित धूसर मृदभांडों के अन्तर्गत रखा जाये किन्तु इनमें चित्र न होने से इन्हें इस वर्ष के परिणामों के अनुसार ऐतिहासिक काल से ही सम्बद्ध किया जा सकता है।

मोरध्वज से मौर्यकालीन आकार की ईटें, शुंगकालीन एक मठ के अवशेष, कुषाणकालीन एक स्वर्णमुद्रा, बुद्ध की 8 से० मी० ज्ञानमुद्रा में बैठी तथा दो सेवकों द्वारा सुश्रुषा करते हुए मृण्मूर्त्ति, कृष्ण की 33 सेन्टीमीटर केशीवध करती हुई मृण्मूर्तिपट्टिका, माता-शिशु की मृण्मूर्त्ति आदि विशेष उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हैं।

विभाग ने 9, 10, 11 मार्च 1977 को देहरादून में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता के अन्तर्गत "गढ़वाल क्षेत्र की सांस्कृतिक सम्पदा—एक परिप्रेक्ष्य" शीर्षक से संगोष्ठी आयोजित की जिसमें भारत के 30 गणमान्य विद्वान भाग लेने आये। इस अवसर पर राणीहाट से उत्खनित सामग्री की एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

विभाग को उच्च शिक्षा अनुदान आयोग ने पुनः एक संगोष्ठी के लिए अनुदान स्वीकृत किया है जिसके अन्तर्गत बद्रीनाथ तथा जोशीमठ के मध्य स्थित हिमनद का अध्ययन कर यह पता लगाया जायेगा कि किस प्रकार आदिमानव तथा उसके अवशेषों को भूत्तात्विक परिवर्तनों तथा प्रत्यावर्त्तनों से गुजरना पड़ा। संगोष्ठी (वर्कशॉप) अक्तूबर में बद्रीनाथ में आयोजित की जायेगी।

विभाग को महानिदेशक पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली के द्वारा ग्राम सर्वेक्षण परियोजना के अन्तर्गत उत्तरकाशी तथा पौड़ी जनपदों के बृहत् सर्वेक्षण हेतु साढ़े पाँच सौ रुपये की दो छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गई हैं।

उत्तर प्रदेश सांस्कृतिक विभाग ने पुरातत्व अनुभाग के माध्यम से इस विभाग को पंचवर्षीय योजना के लिये एक 5 लाख रु० की पुरातत्विक सर्वेक्षण व उत्खनन परियोजना स्वीकृत की है। इसी विभाग द्वारा इस विश्वविद्यालय में संग्रहालय हेतु 4 लाख रुपये की एक अन्य परियोजना स्वीकृत की गई है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा भी संग्रहालय निर्माण एवं उपकरण हेतु 35,000 रुपये का अनुदान प्राप्त हो चुका है।

इस विभाग द्वारा अहमदाबाद के फिजिकल रिसर्च लैब के साथ शोध परियोजनाओं पर प्रारम्भिक कार्य आरंभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

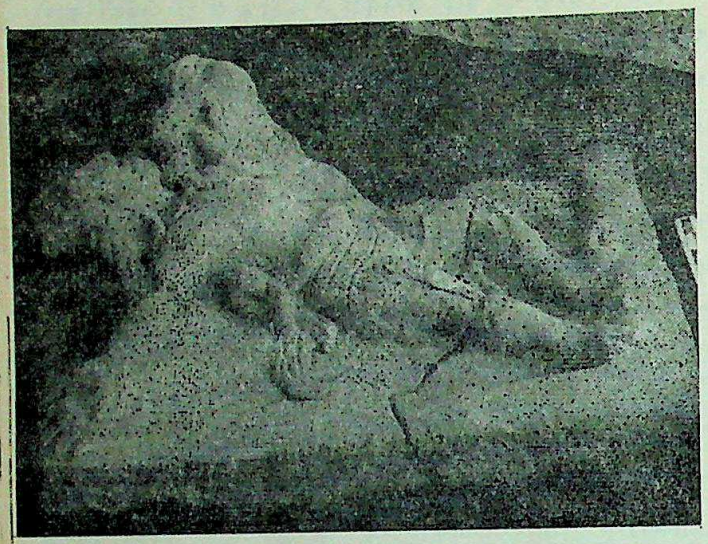

मोरध्वज से प्राप्त केशीवध करते हुए कृष्ण की मूर्ति (पहली शताब्दी)

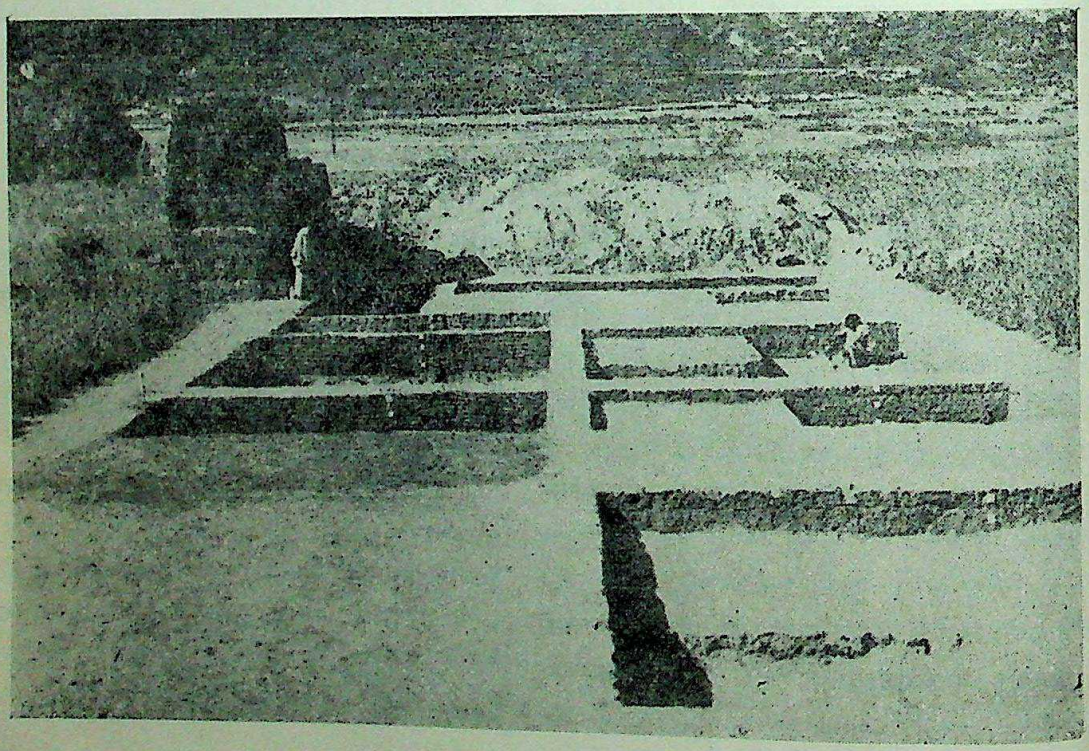

राणीहाट उत्खनन का सामान्य दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो चुका है। विभाग के एक शोध-छात्र को इस संस्थान द्वारा समुन्नत वैज्ञानिक तकनीकों पर अध्ययन एवं शोध करने हेतु विजिटिंग साइन्टिस्ट के रुप में नियुक्त किया गया है।

विभाग में एक रीडर तथा 4 प्रवक्ता कार्यरत हैं। रीडर डा० के.पी. नौटियाल को उत्तर प्रदेश सरकार ने अपने संग्रहालय सलाहकार समिति का सदस्य भी नियुक्त किया है।

पर्यटन विभाग—अध्यापन के रूप में पर्यटन विषय भारत में सर्वथा नया है। गढ़वाल विश्वविद्यालय में पर्यटन का प्रारंभ दिल्ली विश्वविद्यालय के बाद दूसरे नम्बर पर हुआ। इसका प्रारम्भ 1975-76 में स्नातक कक्षाओं के रूप में हुआ। व्यवसाय प्रधान विषय होने के कारण इसमें प्रवेश के लिए बहुत अधिक संख्या में छात्र आते हैं। उनकी लिखित और मौखिक परीक्षा के बाद ही 20 छात्र प्रवेश पाते हैं। 1977-78 में स्नातकोत्तर पर्यटन डिप्लोमा प्रारम्भ हुआ जिसकी अवधि एक वर्ष की है। गढ़वाल मंडल विकास निगम ने अपने पर्यटन प्रभाग में पद रिक्त होने पर पर्यटन के स्नातकों को ही स्थान देना निश्चित कर लिया है।

हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा-विभाग—इस विभाग में जुलाई 1976 मे रीडर एव अध्यक्ष की नियुक्ति हुई। विभाग के चार शोध-छात्रों ने डी० फिल० की उपाधि के लिए शोध-प्रबन्ध तैयार कर लिए हैं और नौ शोध-छात्र कार्यरत हैं। विभाग में एक ध्वनि प्रयोगशाला का निर्माण किया जा रहा है जिसमें आधुनिक वैज्ञानिक प्रणाली से हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं एवं बोलियों का अध्ययन हो सकेगा।

राजशास्त्र विभाग—राजशास्त्र विभाग में एक रीडर तथा तीन प्रवक्ता हैं। रीडर तथा बिभागाध्यक्ष ने बंगलौर (1977) तथा पटियाला (1978) में भारतीय राजशास्त्र सम्मेलन में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किये। इस विभाग में अनेक शोध-छात्र गढ़वाल के प्रशासन और राजनीति पर शोध कर रहे हैं।

समाजशास्त्र—गढ़वाल विश्वविद्यालय की ओर से 1978 में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की गई। इस विभाग में दो प्रवक्ता हैं।

अंग्रेजी विभाग—इस विभाग में एक प्रोफेसर तथा चार प्रवक्ता हैं। प्रोफेसर के निर्देशन में छः शोध-छात्र डी० फिल० की उपाधि के लिए अपने शोध-प्रबन्ध तैयार कर रहे हैं। 23-25 दिसम्बर, 1977 में विभाग में विश्वबिद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से आंग्ल-शिक्षकों की एक कर्मशाला आयोजित की गई।

वानिकी—गढ़वाल क्षेत्र में 80% भूमि पर वन हैं और 14% भूमि पर कृषि होती है। यहाँ के 80% निवासी कृषि पर निर्भर करते हैं और केवल 1% से भी कम लोग वनों से अपनी आजीविका चलाते हैं। पर्वतीय वनों के उपयोग और महत्व की संभावनाओं का औद्योगिक वानिकी के अन्तर्गत विशेष अध्ययन हेतु 8-12-76 को गढ़वाल विश्वविद्यालय में वानिकी विभाग खोला गया और बी० एस० सी० स्तर पर 11 छात्रों ने प्रवेश लिया। उत्तरप्रदेश वनविभाग के प्रशिक्षित अधिकारी इस समय प्रवक्ता पद पर नियुक्त किए गये हैं।

रसायन विभाग—इस विभाग में एक प्रोफेसर तथा छः प्रवक्ता हैं। प्रोफेसर के अन्तर्गत सी० एस० आई० आर० की पाँच शोध योजनायें चल रही हैं। विभाग में शोध छात्रों की संख्या छः है। विभाग के सदस्यों ने अभी तक पाँच शोध-पत्र प्रकाशिय किए हैं और प्रोफेसर ने अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भी अपना शोध-पत्र प्रस्तुत किया है।

जन्तुविज्ञान विभाग—1976 में विभाग में रीडर तथा विभागाध्यक्ष का पद सृजित हुआ। 1978 में प्रोफेसर का पद सृजित हुआ और इस समय विभाग में एक प्रोफेसर, एक रीडर तथा छः प्रवक्ता हैं। विभाग में शोध छात्रों की संख्या 12 है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

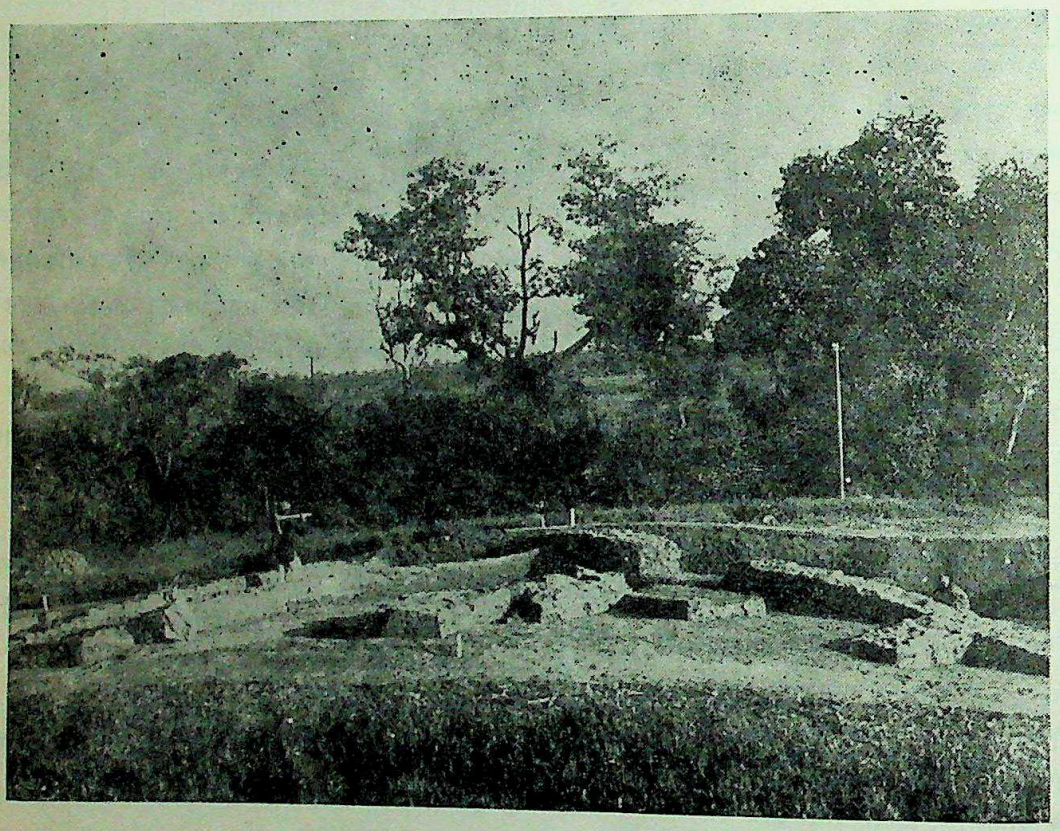

मोरध्वज से प्राप्त कुषाण कालीन भवनों के अवशेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गणित विभाग—विभाग में चार प्रवक्ता हैं और चारों शोधकार्य कर रहे हैं।

नृशास्त्र विभाग—यह विभाग 1976 में खोला गया। विभाग में एक प्रयोगशाला और संग्रहालय की स्थापना की गई है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता के अन्तर्गत 29-30 सितम्बर, 1978 को श्रीनगर में एक संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें देश के विविध विश्वविद्यालयों के 35 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस विभाग के प्रवक्ता ने हैदराबाद, दिल्ली, चण्डीगढ़ आदि की संगोष्ठियों में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। विभाग की ओर से गढ़वाल में दो सर्वेक्षण-योजनायें चालू की गई हैं।

वनस्पति विभाग—इस विभाग में 19 शोधछात्र तथा छः शिक्षक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद की विविध योजनाओं के अन्तर्गत शोधकार्य कर रहे हैं। प्रोफेसर तथा रीडर-दोनों पद विभाग में सृजित हैं।

वाणिज्य संकाय—गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना के पश्चात वाणिज्य विभाग में अध्यापन कार्य शुरू हुआ। इस विभाग में शिक्षकों की सख्या 4 है और चारों शोध-कार्य में संलग्न हैं।

भूगोल विभाग—1978 में भूगोल में स्नातकोत्तर कक्षायें प्रारम्भ हुई। इस विभाग में तीन प्रवक्ता कार्यरत हैं।

अर्थशास्त्र विभाग में तीन प्रवक्ता कार्यरत है जो शोध कार्य में भी लगे हैं। परिषद एवं प्लानिंग फोरम के अन्तर्गत निबन्ध एवं वाद-विवाद प्रतियोगितायें भी आयोजित की जाती हैं। प्रवक्ताओं द्वारा विभिन्न पत्रिकाओं में आर्थिक समस्याओं पर सामयिक लेख भी यदा कदा प्रकाशित होते रहते है।

महाविद्यालय में संस्कृत विषय में भी स्नातकोत्तर-कक्षाओं तक शिक्षा की समुचित व्यवस्था है।

2. बी० गोपाल रेड्डी स्नातकोत्तर संघटक महाविद्यालय, पौड़ी-गढवाल

श्रीनगर से 27 किलो मीटर पर जिले तथा गढ़वाल मंडल के मुख्यालय पौड़ी में गढ़वाल विश्वविद्यालय का दूसरा संघटक महाविद्यालय—'डा० बी० गोपाल रेड्डी स्नातकोत्तर संघटक महाविद्यालय पौड़ी' अवस्थित है।

इस महाविश्वविद्यालय की स्थापना उत्तर प्रदेश शासन द्वारा जुलाई 1971 में की गई और सन 1972 में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल डा० बी० गोपाल रेड्डी के नाम पर इस महाविद्यालय का नामकरण किया गया। 1971 में कला-संकाय में आठ विषयों में स्नातक स्तर की कक्षायें प्रारम्भ हुई। विकास क्रम के प्रथम चरण में शासन द्वारा 1972 में विज्ञान संकाय के पाँच विषयों में स्नातक स्तर पर अध्ययन की व्यवस्था की गई तथा 1974 में कलासंकाय के अन्तर्गत हिन्दी, भूगोल और अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर कक्षायें शुरू हुई। 23 अगस्त, 1977 को उत्तर प्रदेश शासन से गढ़वाल विश्वविद्यालय को हस्तान्तरित होने के पश्चात विधिसंकाय में स्नातक स्तर तक एवं संस्कृत, इतिहास, राजनीतिशास्त्र और गणित विषयों में स्नातकोत्तर कक्षायें प्रारम्भ हुई। 1978 में रसायन विज्ञान एवं अंग्रेजी में स्नातकोत्तर कक्षायें शुरु की गई हैं। 1971 में यह महाविद्यालय 65 छात्र संख्या से प्रारम्भ हुआ था और आज इसमें 425 विद्यार्थी अध्ययनरत है तथा 31 अध्यापक कार्यरत है।

इस महाविद्यालय के पास अभी अपना स्थायी भवन एवं छात्रावास नहीं है।

3. स्वामी रामतीर्थ संघटक महाविद्यालय, टिहरी

भागीरथी और भिलंगना के संगम पर स्थित टिहरी नगर में 1969 में उत्तर प्रदेश शासन ने स्वामी रामतीर्थ के नाम से महाविद्यालय की स्थापना की। यह स्थान स्वामी रामतीर्थ की तपोभूमि रहा है और इसी स्थान पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वामी रामतीर्थ ने जलसमाधि भी ली थी। गढ़वाल विश्वविद्यालय की घोषणा के साथ इस महाविद्यालय को ी संघटक इकाई बना दिया गया। 68 विद्यार्थियों और 3 शिक्षकों से प्रारम्भ होने वाली इस संस्था में आज 152 छात्र, 36 अध्यापक तथा पाँच संकाय हैं।

1. विज्ञान संकाय—इसके अन्तर्गत गणित, भौतिक, रसायन, वनस्पति और जन्तुविज्ञान विभाग हैं।
2. कला संकाय—इसके अन्तर्गत हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा समाजशास्त्र के विभाग हैं।
3. वाणिज्य संकाय
4. शिक्षा संकाय
5. विधि संकाय

टिहरी में 1975 में विधि कक्षायें एल० एल० बी० स्तर तक प्रारम्भ हुई। 1978 में सैमेस्टर प्रणाली से जुलाई में छटे (अन्तिम) सत्र की परीक्षायें हुई। इस बार सितम्बर 1978 से वार्षिक परीक्षा प्रणाली प्रारम्भ की गई है। विभाग में दो स्थाई प्रवक्ता तथा एक अंशकालीन प्रवक्ता नियुक्त हैं और छात्र-संख्या 100 है।

टिहरी में शिक्षासंकाय की स्थापना 1973 में की गई। विभाग में सात प्रवक्ता हैं और 105 छात्राध्यापक प्रशिक्षण ले रहे हैं।

टिहरी में भूगोल, गणित, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, समाजशास्त्र आदि विभागों में स्नातकोत्तर कक्षायें हैं।

———

गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह के अवसर पर हार्दिक शुभ कामनायें—

चन्द्रा ट्रेडर्स

जीवनीमाई मार्ग, ऋषिकेश

सभी प्रकार के रसायनों प्रयोगशाला उपकरणों एवं फर्नीचर के अधिकृत एवं विश्वसनीय विक्रेता

दूरभाष—517

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बद्ध महाविद्यालय

अपने जन्म के समय गढ़वाल विश्वविद्यालय को सम्बद्ध महाविद्यालयों के रूप में दो विश्वविद्यालयों की परम्परा मिली : एक आगरा विश्वविद्यालय और दूसरा मेरठ विश्वविद्यालय। आगरा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध अधिकांशत : गढ़वाल के पर्वतीय क्षेत्रों में फैले राजकीय महाविद्यालय थे और मेरठ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध देहरादून जिले के संस्थागत महाविद्यालय। वर्तमान में सम्बद्ध महाविद्यालयों का क्रम निम्नवत् है।

(क) संस्थागत महाविद्यालय :—

1. डी० ए० वी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून
2. दयानन्द बृजेन्द्र स्वरुप महाविद्यालय, देहरादून
3. दयानन्द महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, देहरादून
4. महादेवी कन्या पाठशाला, देहरादून
5. म्युनिसिपल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मंसूरी
6. श्रीगुरु राम राय महाविद्यालय, देहरादून

(ख) राजकीय महाविद्यालय—

1. राजकीय महाविद्यालय, गोपेश्वर (चमोली)
2. श्री अ० प्र० बहुगुणा राजकीय महाविद्यालय, अगस्त्यमुनि (चमोली)
3. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उत्तरकाशी
4. राजकीय महाविद्यालय जयहरीखाल, लैंसडाउन
5. डा० पी० द० ब० राजकीय महाविद्यालय, कोटद्वार
6. पं. ललित मोहन शर्मा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ऋषिकेश (देहरादून)

डी० ए० वी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून

एक ओर हिमालय की शैल श्रंखलाओं से, दूसरी ओर शिवालिक की पर्वत-श्रेणियों से समाच्छादित, सघन वन-कुंजों, लता निकुंजों, साभिमान वक्षस्थल ताने द्रुमदल से सुशोभित, बहुरंगी फूलों से खचित, मखमलिया हरीतिमा की कालीनें बिछाये, निर्झरियों से दिग्ध्वनित, विविध पक्षियों से कलकूजित उत्तरभारत में एक मरकत घाटी है जिसे हम कहते हैं दून घाटी या देहरादून। इसी रम्य नगर में उदारचेता स्वर्गीय पूर्ण सिंह नेगी की त्याग—तपस्या की प्रतीक एक शिशु संस्था ने 1904 ई० में जन्म लिया, जिसने अनवरत विकसित होकर 1922 में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का कलेवर ग्रहण किया। 1946 में माध्यमिक विद्यालय उपाधि महाविद्यालय बना। देखते ही देखते अपने अनवरत विकास से यह डी० ए० वी० पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, देहरादून के नाम से प्रदेश तथा उत्तर भारत के शीर्षस्थ कालेजों में गिना जाने लगा।

स्नातक महाविद्यालय बनने के समय से ही यह आगरा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध रहा, किन्तु जब 1967 में मेरठ विश्वविद्यालय की स्थापना हुई उस समय से लेकर 1973 तक यह महाविद्यालय उक्त वि० वि० का एक गरिमामय अंग बनकर रहा। 1973 में जब हिमालय की एक सुहावनी गोद श्रीनगर (गढ़वाल) में गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, डी० ए० वी० कालेज देहरादून उसका गुण, गरिमा और मात्रा आदि सभी दृष्टियों से सबसे बड़ा घटक बना हुआ है।

डी० ए० वी० कालेज ने राष्ट्र और समाज के प्रति समर्पण, त्याग तथा बलिदान की चेतना प्रदान की जिसके जगमगाते उदाहरण 1962 ई० में चीन के साथ युद्ध करते हुए बलिदान होनेवाले महान शहीद कैप्टन महेश्वरी उनियाल तथा 1965 में राष्ट्र की अखंडता एवं सुरक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन विभाग ठेकेदार संघ

कोटद्वार गढ़वाल

के

फोन नं० 66 समस्त सदस्यगण र० नं० 131

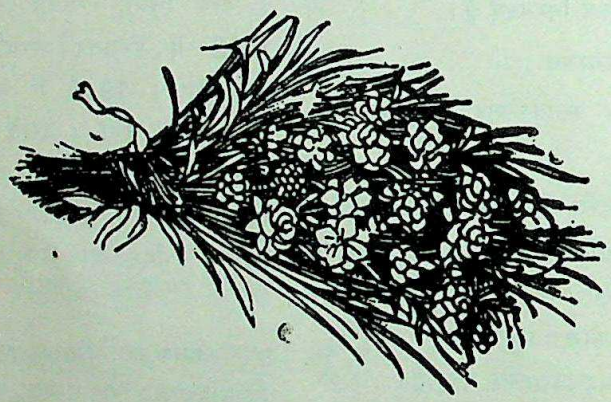

गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह के अवसर पर गढ़वाल मण्डल के समस्त प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों का अभिनन्दन करते हैं तथा विश्वविद्यालय की सर्वोन्मुखी उन्नति की कामना करते हैं

आर्यदत्त पोखरियाल
अध्यक्ष

चण्डी प्रसाद कुकरेती
मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हुए पाकिस्तान की सेना को परास्त करते हुए भारत माता की गोद में सो जाने वाले कैप्टन रघुनंदन सेठी ही नहीं, बल्कि अनगिनत दीवानों की एक परंपरा है। राष्ट्रीय, सामाजिक, राजनीतिक तथा नेतृत्व चेतना के सन्दर्भ में भी डी० ए० वी० कालेज के उल्लेखनीय कीर्तिमान हैं। भू० पू० केन्द्रीय राज्य शिक्षा मंत्री तथा कानपुर विश्वविद्यालय के भूत पूर्व कुलपति श्री भक्त दर्शन, लोकप्रिय नेता तथा वर्तमान केन्द्रीय पेट्रोलियम एवं रसायन मंत्री श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा तथा उत्तर प्रदेश के युवा शिक्षा मंत्री डॉ० शिवानन्द नौटियाल का नाम इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। विख्यात पर्वतारोही स्व० नन्दू जुयाल इसी महाविद्यालय की एक विभूति थे।

इस महाविद्यालय की कला साधना ने विद्वानों तथा कलाविदों को अपनी ओर खींचा। यहां की चित्रकला प्रदर्शनियों ने स्व० पुरुषोत्तम दास टंडन, के० एम० मुंशी, सी० वी० महाजन, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, बाबू श्री प्रकाश प्रभृति मनीषियों द्वारा समय-समय पर प्रशंसा अर्जित की है।

छात्र-संख्या

वर्ष	संख्या
1974-75	4089
1975-76	3488
1976-77	3930
1977-78	3933
1978-76	3798

शोध छात्रों की संख्या 99 है तथा कार्यरत अध्यापकों की संख्या 130 है। गढ़वाल विश्वविद्यालय की योग्यता सूची में प्रति वर्ष डी० ए० वी० महाविद्यालय देहरादून के छात्रों का महत्वपूर्ण प्रतिनिधित्व रहता है। वर्ष 1978-79 में 62 छात्र योग्यता सूची में सम्मिलित थे। कई परीक्षाओं में तो प्रथम पांच स्थान इसी महाविद्यालय के छात्रों को प्राप्त हुए। परीक्षा फल की दृष्टि से इस महाविद्यालय ने हमेशा ही कीर्तिमान स्थापित किये हैं। खेल-कूद तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी इस महाविद्यालय का ऊँचा नाम है।

दयानन्द बृजेन्द्र स्वरूप महाविद्यालय, देहरादून

इस महाविद्यालय की स्थापना आर्य समाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम पर तथा दयानन्द शिक्षण संस्थान, कानपुर के भूतपूर्व कर्मठ एवं यशस्वी प्रधान माननीय डा० बृजेन्द्र स्वरूप जी की स्मृति में, उक्त संस्थान के वर्तमान प्रधान श्री वीरेन्द्र स्वरूप की प्रेरणा से तथा भूतपूर्व प्राचार्य श्री माताबक्स के प्रयास से जुलाई 1961 में हुई। स्थापना के समय भूगर्भ विज्ञान, रसायन, गणित, भूगोल, सैन्य विज्ञान एवं अर्थशास्त्र विषयों में स्नातक कक्षायें खोली गई। दूसरे वर्ष भौतिक विज्ञान की कक्षा भी शुरू हुई। 1965 में भूगर्भ और भूगोल में स्नातकोत्तर स्तर पर कक्षायें प्रारम्भ हुई। 1966 में स्नातक स्तर पर हिन्दी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, वनस्पति विज्ञान एवं जन्तुविज्ञान तथा स्नातकोत्तर स्तर पर अर्थशास्त्र की कक्षायें खोली गई। 1969 में गणित, भौतिकी और रसायन में स्नातकोत्तर कक्षायें प्रारम्भ हुई।

यह महाविद्यालय हाकी, क्रिकेट, टेबिल टेनिस, वालीबाल, बास्केटबाल, आदि की अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में कई वर्ष विजेता रहा है। इस वर्ष वालीबाल और टेबिल टेनिस में विजेता रहा है। इस वर्ष 20 छात्रों का चयन विश्वविद्यालय टीम में किया गया हैं। यहां के छात्र श्री भारत भूषण दत्ता ने 1978 में राष्ट्रीय खेलों में साइकिलिंग में राज्य का प्रतिनिधित्व किया। इस महाविद्यालय में 31 छात्र शोध कर रहें हैं।

इस महाविद्यालय को राज्य सरकार द्वारा दो बार दक्षता अनुदास प्राप्त हुआ है। 1977-78 का परीक्षा फल इस प्रकार है—

कक्षा	परीक्षा में सम्मिलत छात्रों की सं०	उतीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशत
बी०ए०	46	42	91.3%
बी०एस-सी०	249	215	86.3%
एम०ए०	58	55	95%
एम०एस-सी०	32	31	97%

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दयानन्द महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, देहरादून

देहरादून में स्थित दयानन्द महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय महिलाओं के शैक्षणिक प्रशिक्षण के लिए अपनी तरह का अकेला महाविद्यालय है। इसकी स्थापना 1961 में की गई और 1968 में यह महाविद्यालय राजकीय अनुदान प्राप्त महाविद्यालयों की श्रेणी में आया। प्रारम्भ में 83 छात्राओं से प्रारम्भ कर आज इस महाविद्यालय में 148 छात्रायें प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना के दिन से छात्राओं की संख्या का विवरण निम्नवत् हैं—

कक्षा	वर्ष	छात्राओं की संख्या	परीक्षा फल उत्तीर्ण प्रतिशत
बी०एड०	1974-75	98	98.9 %
	1976-76	119	94%
	1976-77	122	96%
	1977-78	98	99%
	1978-70	148	—

1976 की परीक्षा में चार छात्राओं ने विश्वविद्यालय की योग्यता सूची में प्रथम, तृतीय, चतुर्थ और षष्ठ स्थान तथा 1977 की परीक्षा में योग्यता सूची में तृतीय और अष्टम स्थान प्राप्त किया। 1978 की परीक्षा में योग्यता सूची में चार छात्राओं ने प्रथम, तृतीय, अष्ट एवं नवन स्थान प्राप्त किये।

1974-75 में मेरठ वि० वि० द्वारा आयोजित वादविवाद प्रतियोगिता में 'चल उपहार' के साथ ही प्रथमा पुरस्कार कु० रोहणी शर्मा (हिन्दी) तथा द्वितीय पुरस्कार कु० रूबी गुसाईं (अंग्रेजी) ने अर्जित किया। कुमायूं वि० वि० द्वारा आयोजित लेख प्रतियोगिता में कु० मनजीत कौर मक्कड़ को द्वितीय पुरस्कार स्वरूप विजयोपहार (शील्ड) सुलभ हुआ।

1976-77 में कु० सैम्पटन डोलमा को महिलाओं के पंच खेल में विशेष प्रदर्शन के कारण विश्वविद्यालयी टीम में चुना गया।

महादेवी कन्या पाठशाला, देहरादून

इस महाविद्यालय की स्थापना 4 जुलाई 1958 को देहरादून की प्रसिद्ध समाजसुधारिका श्रीमती महादेवी जी ने की। उन्होंने अपनी 10 एकड़ जमीन विद्यालय को प्रदान की। स्वयं उन्होंने 6 छात्राओं से इस महाविद्यालय का शुभारम्भ किया। अतः उन्हीं के नाम पर इस महाविद्यालय का नामकरण हुआ है। 1962 में स्नातकोत्तर कक्षायें प्रारम्भ हुई।

वर्तमान शिक्षण सुविधा निम्नवत् है—

बी० ए०—ड्राइंग-पेंटिंग, अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, हिन्दी, इतिहास, संगीत, गृहविज्ञान, राजनीतिशास्त्र, मनोविज्ञान, संस्कृत, समाजशास्त्र, गणित।

बी०एस-सी०—वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, जन्तुविज्ञान।

एम०ए०—हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र समाजशास्त्र। गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना के समय से छात्राओं की संख्या का क्रम निम्नवत् है।

वर्ष	बी० ए०	बी० एस० सी०	एम० ए०	कुलयोग
1974-75	921	171	249	1341
1975-76	965	140	260	1363
1976-77	1000	106	277	1383
1977-78	1062	129	312	1503

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

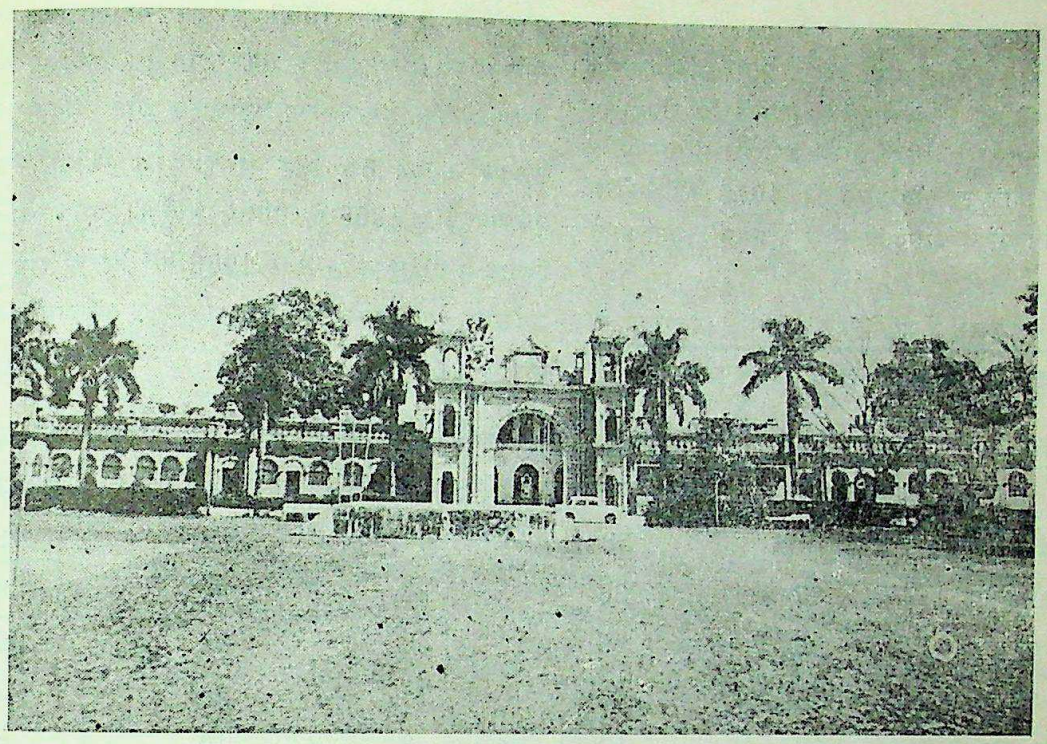

डी० ए० वी० महाविद्यालन देहरादून

श्री गुरु राम राय महाविद्यालय देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महादेवी कन्या पाठशाला में एन० एस० एस० 1975 में प्रारम्भ किया गया और 200 छात्रायें उसमें सम्मिलित की गईं। कु० सन्तोष रावत ने विश्वविद्यालय और राज्य स्तर पर क्रीड़ा और खेलों में सम्मान प्राप्त किया। गढ़वाल विश्वविद्यालय की 1978 की परीक्षा में तीन छात्राओं ने योग्यता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

म्युनिसिपल पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, ममूरी (देहरादून)

प्रसिद्ध शैलानी नगरी ममूरी में नगरपालिका के अनुदान से 8 अगस्त 1963 को इस महाविद्यालय की स्थापना हुई। स्थापना के समय अंग्रेजी, हिन्दी, राजशास्त्र, संस्कृत, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और इतिहास में स्नातक कक्षायें 66 छात्र और 8 प्राध्यापकों के साथ प्रारम्भ हुई। 1965 में गणित, भौतिकी तथा रसायन विज्ञान में बी०एस-सी० तथा 1966 में हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, और राजशास्त्र में स्नातकोत्तर कक्षाओं का शुभारम्भ हुआ।

गढ़वाल वि० वि० की स्थापना के दिन से छात्र–संख्या का विवरण निम्नवत् है—

कक्षा	वर्ष 1975	1976	1977	1978	1979
एम० ए० प्रथम	70	58	44	29	41
एम० ए० द्वितीय	37	38	30	26	16
बी० ए० प्रथम	93	96	80	90	69
बी० ए० द्वितीय	82	58	58	56	64
बी० एस० सी० द्वितीय	12	10	8	10	8
बी एस० सी० प्रथम	12	14	11	12	20

'हिमा' नाम से महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका प्रकाशित होती है। हिन्दी, अर्थशास्त्र में शोध में कई छात्र संलग्न हैं। महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने वादविवाद प्रतियोगिताओं में विजयोपहार प्राप्त किये। खेलकूद में छात्रों ने विश्वविद्यालय टीम का नेतृत्व-हांकी, क्रिकेट एवं फुटबाल में किया। छात्राओं ने वर्ष 1977 में वालीवाल चैम्पियनशिप जीती एवं विश्वविद्यालय की वालीवाल तथा बास्केटबाल टीम का प्रतिनिधित्व किया। मसूरी शरदोत्सव में महाविद्यालय के छात्रछात्राओं द्वारा प्रस्तुत किए गए रंगारंग कार्यक्रम विशेष रूप से सराहे गए।

श्रीगुरू रामराय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून

प्रतिभावान किन्तु अपर्याप्त आर्थिक साधनों के कारण अपने अध्ययन को सुविकसित करने में असमर्थ विधार्थियों की आवश्यकता को अनुभव करते हुए श्री महन्त इन्द्रेश चरणदास जी महाराज द्वारा उच्चतर शिक्षा संस्थान के रूप में इस कालेज की स्थापना 1960 में गणित, रसायनशास्त्र तथा भौतिकी विषयों में बी०एस-सी० कक्षा के साथ की गई। 1965 में गणित तथा रसायन शास्त्र में एम०एस-सी० तथा जीवविज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा भूगर्भ वित्रान वैकल्पिक बिषयों के साथ बी०एस-सी० कक्षायें प्रारम्भ की गई। 1966 में भौतिकी में एम०एस-सी० तथा हिन्दी, अंग्रेजी, राजशास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और इतिहास विषयों को लेकर बी०ए० कक्षायें प्रारम्भ हुई। इस क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा प्राप्ति के मार्ग में अर्थाभाव बाधक न बने, इस उद्देश्य से श्री महन्त जी महाराज अपनी उदारता स्वरूप, सभी विद्यार्थियों की शिक्षा शुल्क दरबार श्रीगुरू रामराय जी महाराज से देते हैं। कालेज शान्तभव्य पर्यावरण में स्थित है, इसके अतिरिक्त सुसज्जित प्रयोगशालायें, समृद्ध पुस्तकालय और विस्तृत क्रीड़ा क्षेत्र विद्यालय के आकर्षण बिन्दु हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गत चार वर्षों की छात्र-संख्या

वर्ष	बी०ए०	बी०एस०सी०	एम०एस०सी	योग
1976	243	140	61	444
1977	258	145	91	494
1978	270	145	81	496
1979	264	181	82	527

महाविद्यालय में सभी विभागों में प्राध्यापकों तथा शोध-छात्रों ने शोधकार्य सम्पन्न किया है और कई छात्रों ने वि०वि० की योग्यता-सूची में स्थान प्राप्त किया है। इस वर्ष महाविद्यालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पाँच लाख पैंतीस हजार रु० पुस्तकालय भवन, कार्यशाला, उपकरण, पत्र-पत्रिका, पुस्तकें आदि के अनुदान में प्राप्त हुए हैं।

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोपेश्वर (चमोली)

रुद्रनाथ के उत्तुंग शिखर से अलकनन्दा की ओर सिमटते तप्पड़ पर स्थित चमोली जनपद के मुख्यालय गोपेश्वर में सीमान्त की जनता में उच्चशिक्षा के प्रसार के लिए जुलाई 1966 में एक राजकीय महाविद्यालय की स्थापना हुई। स्थापना के समय रसायन भौतिकी और गणित में स्नातक स्तर में कक्षाये शुरू हुई। 1971 में हिन्दी, भूगोल, अर्थशास्त्र, संस्कृत, समाजशास्त्र राजशास्त्र, इतिहास, शिक्षाशास्त्र तथा बी० एड० की कक्षायें प्रारम्भ हुई। 1975 में इस महाविद्यालय का उच्चीकरण हुआ। फलस्वरूप वनस्पति विज्ञान, रसायन, भूगोल, अर्थशास्त्र तथा गणित में स्नातकोत्तर कक्षाओं का शुभारम्भ हुआ। 1977 में स्नातक स्तर पर वाणिज्य सैन्यविज्ञान, भूगर्भशास्त्र आदि की कक्षायें प्रारम्भ हुई।

प्रारम्भ में यह महाविद्यालय अस्थायी टिनशेड़ों में चलाता रहा लेकिन 1977 में 34 लाख रुपये की लागत से एक विशाल और आकर्षक दुमंजिला भवन बनकर तैयार हो जाने से महाविद्यालय को स्थायी परिवेश मिल गया।

विश्वविद्यालय की विविध टीमों में यहां के छात्रों का चयन हुआ और क्रीड़ा एवं खेलकूद-दोनों में छात्रों ने विशेष स्थान प्राप्त किए। राष्ट्रीय सेवा योजना, एन० सी० सी० और साँस्कृतिक कार्यों में छात्र अभिरूचि लेते हैं। यहां का छात्र अपने परिवेश के प्रति जागरूक है और इसी उद्देश्य से 4-8-78 को महाविद्यालय के 26 छात्रों ने "डाल्योंका दगड्या" नामक संस्था की स्थापना की है जिसके निम्न उद्देश्य हैं 1 वृक्ष और पर्यावरण की सुरक्षा 2. जलागम क्षेत्रों तथा वृक्षहीन पहाड़ियों में सघन वनीकरण का कार्य करना 3. बुग्यालों में लुप्त हो रहे हिमालयी पौधों की सुरक्षा। गोपेश्वर नगर में साहित्य सर्जना का वातावरण तैयार करने के लिए "वैचारिकी" नामक एक साहित्य संस्था का भी छात्रों ने गठन किया है जिसकी पाक्षिक गोष्ठियों में अभिनव साहित्य प्रस्तुत किया जाता है।

महाविद्यालय में पिछले कुछ बर्षों में छात्र संख्या इस प्रकार थी :—

वर्ष	छात्र संख्या
1974-75	330
1975-76	357
1976-77	440
1977-78	557
1978-89	630

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा परिणाम

वर्ष तथा परीक्षाफल प्रतिशत में

कक्षा	174-75	1975-76	1976-77	1977-78
बी० ए० प्रथमवर्ष	81.7	81	92.2	80
बी० ए० द्वितीय वर्ष	88.6	94	91.1	86
बी० एस० सी० प्रथम वर्ष	77.7	77	75.	67
बी० एस० सी० द्वितीय	89.4	90	92.1	68
बी० एड०	90	97	98	92
एम० ए० प्रथम वर्ष				
भूगोल	—	100	100	89
अर्थशास्त्र	—	62.5	93	100
राजनीति	—	100	100	100
हिन्दी	—	—	—	100
एम० ए० द्वितीय वर्ष				
भूगोल	—	—	100	100
अर्थ शास्त्र	—	—	100	100
राजनीति	—	—	67	100
एम० एस० सी प्रथम वर्ष				
रसायन	—	100	73	75
वनस्पति	—	90	56	89
गणित	—	—	—	666
जन्तु	—	—	—	77.7
एम० एस० सी द्वितीय बर्ष				
रसायन	—	—	100	85.5
वनस्पति	—	—	100	100

श्री अ०प्र० बहुगुणा राजकीय महाविद्यालय अगस्त्यमुनि (चमोली)

सीमान्त जनपद चमोली की केदार घाटी में मुनिवर अगस्त्य की पावन तपस्थली एवं पुण्यसलिला मन्दाकिनी के सुरम्य तट पर अवस्थित इस राजकीय महाविद्यालय की स्थापना 23 अक्तूबर 1974 को हुई। इस पर्वतीय अंचल के प्रख्यात स्वतन्त्रता सेनानी श्री अनुसूया प्रसाद बहुगुणा के सुयश को स्थायित्व प्रदान करने के लिए शासन द्वारा उनके नाम पर महाविद्यालय का नामकरण किया गया। भवन के अभाव में शिक्षण कार्य सम्प्रति बाबा काली कमली पँचायत क्षेत्र की धर्मशाला में सम्पादित हो रहा है। यहां संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, राजशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं इतिहास में स्नातक स्तर तक कक्षायें हैं।

छात्रसंख्या और परीक्षाफल का विवरण निम्नवत् है—

सत्र	कक्षा	छात्र-संख्या	परीक्षाफल
1975	बी० ए० प्रथम	9	87 5%
1976	बी० ए० (प्र०)	30	82.7%
	,, ,, द्वि०	7	50%
1977	,, ,, प्र०	25	76%
	द्वि०	21	81%
1978	,, प्र०	41	85%
	,, द्वि०	24	100%
1979	,, प्र०	42	—
	द्वि०	40	—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उत्तरकाशी

यह महाविद्यालय जुलाई 1969 में गणित, भौतिक विज्ञान विषयों के साथ बी०एस०सी कक्षायें प्रारम्भ करने के साथ खोला गया था। उस वर्ष छात्र संख्या केवल दस थी। वर्ष 1970-71 में वनस्पति एवं जन्तु विज्ञान विषय भी खोले जाने पर छात्र संख्या 48 हो गई। वर्ष 1972-73 में सात कला विषयों हिन्दी, अंग्रेजी, भूगोल, संस्कृत, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र एव इतिहास मे स्नातक कक्षायें प्रारम्भ कर दी गईं और इस प्रकार 175 छात्रों ने महाविद्यालय में प्रवेश ले लिया। वर्ष 1975-76 में हिन्दी, राजनीति, अर्थशास्त्र, वनस्पति विज्ञान तथा रसायन विज्ञान विषयों में स्नातकोत्तर कक्षायें खोल दिये जाने से छात्र संख्या 229 हो गई। आज इस महाविद्यालय में 27 अध्यापक हैं तथा छात्रों की संख्या 374 है।

महाविद्यालय में विभागीय परिषदों के अतिरिक्त नाट्य परिषद का गठन भी किया गया है। राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम भी सुचारु रूप से किये जाते हैं। महाविद्यालय में 'हिम-सुमन' नामक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया जाता है।

महाविद्यालय में छात्र संख्या में वृद्धि इस प्रकार होती रही :—

वर्ष	छात्र	छात्रायें	योग
1974-75	179	42	221
1975-76	194	44	238
1976-77	194	33	227
1977-78	294	78	372
1978-79	296	77	374

राजकीय महाविद्यालय जयहरीखाल

गढ़वाल के रमणीय प्रकृति क्रोड में नगाधिराज से सायं-प्रातः साक्षात्कार सा करता हुआ यह पुराना शिक्षा केन्द्र है—जयहरीखाल। यह उपनगर लैंसडाउन छावनी से 5 कि.मी. दूर पौड़ी मार्ग पर बसा है। सन 1924 में यहां राजकीय हाईस्कूल खुल गया था जो 1947 में इण्टर कालेज के रूप में पदोन्नत हुआ। सैनिकों के बच्चों और आश्रितों को विशेष सुविधा प्रदान करने के लिए 15 अगस्त 1972 को इस महाविद्यालय की स्थापना हुई. प्रारम्भ में भौतिकी, रसायन, जन्तुविज्ञान, वनस्पति विज्ञान और गणित में स्नातक कक्षायें 9 छात्रों से प्रारम्भ हुई। 1975 में भूगोल, अंग्रेजी, संस्कृत, अर्थशास्त्र और हिन्दी में स्नातक कक्षायें खोली गई।

1977-78 का परीक्षाफल निम्नवत् है

1. बी०ए० प्रथम वर्ष	96%
2. बी०ए० द्वितीय वर्ष	96%
3. बी०एस-सी० प्रथम वर्ष	75%
4. बी०एस-सी० द्वितीय वर्ष	100%

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत 1978-79 सत्र में 100 गड्ढों के निर्माण के अतिरिक्त छात्रों ने 7 किलो मीटर ग्राम मार्गों का निर्माण किया और पुराने मार्गों का जीर्णोद्धार किया।

डा० पी० द० ब० हि० राजकीय महाविद्यालय कोटद्वार (गढ़वाल)

भाबर की जनता को उच्चशिक्षा की सुविधा प्रदान करने के लिए 1971 में कोटद्वार में राजकीय महाविद्यालय की स्थापना की गई। गढ़वाल के प्रख्यात हिन्दी विद्वान एवं साहित्यकार डा० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल की पुण्य स्मृति में इस महाविद्यालय का नामकरण किया गया है। 1971 में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास, भूगोल, राजशास्त्र तथा अर्थ शास्त्र में स्नातक स्तर पर कक्षायें प्रारंम्भ हुई। वर्ष 1972 में गणित, भौतिकी, रसायन, जन्तुविज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान की कक्षायें खुली। 1974 में भूगोल, हिन्दी, अर्थशास्त्र, जन्तुविज्ञान, रसायन आदि में स्नातकोत्तर कक्षाओं का शुभारम्भ हुआ। 1975 में स्नातक स्तर पर वाणिज्य संकाय शुरू हुआ।

इस महाविद्यालय के लिए स्थाई भवन निर्माण योजना के अन्तर्गत 12 व्याख्यान कक्षों, 4 विज्ञान प्रयोगशालाओं, प्रशासनिक भवन आदि का निर्माण कार्य प्रगति पर है। यह निर्माण कार्य शासन द्वारा 47,00000 रु० के स्वीकृत भवन निर्माण अनुदान से सा०नि०वि० द्वारा किया जा रहा है। 20 एकड़ अतिरिक्त भूमि वनविभाग से हस्तान्तरित कराने हेतु कार्यवाही चल रही है जिसमें छात्रावास, स्टाफ-क्वार्टर्स तथा क्रीड़ा-प्रांगण का निर्माण कराने की योजना है।

1978-79 अन्तर्महाविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता में महाविद्यालय टीम विजयी रही। महाविद्यालय के 17 छात्र गढ़वाल वि०वि० की विविध टीमों के लिए चुने गए और श्रीहीरासिंह नेगी एम०एस-सी० उत्तरार्ध (रसायन) को विश्वविद्यालय की वालीवाल टीम का कप्तान नियुक्त किया गया।

महाविद्यालय के 17 प्राध्यापक शोधकार्य संलग्न हैं तथा शोधछात्रों की संख्या 22 है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाविद्यालय की छात्रसंख्या

वर्ष	छात्र	छात्रायें	योग
1976-77	504	179	683
1977-78	528	165	693
1978-79	655	177	832

पं० ललित मोहन शर्मा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ऋषिकेश (देहरादून)

इस महाविद्यालय की स्थापना उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 1973 में की गई। महाविद्यालय की स्थापना हेतु 49.02 एकड़ भूमि पं० ललितमोहन शर्मा चैरिटेबिल ट्रस्ट द्वारा दान स्वरूप प्रदान की गई थी। शुरू में केवल विज्ञान संकाय के पांच विषयों—भौतिकी, रसायन, गणित, जन्तुविज्ञान और वनस्पति विज्ञान से ही शिक्षण कार्य प्रारम्भ हुआ। 1975 में स्नातक स्तरों पर कला एवं वाणिज्य संकाय में शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया गया। 1977 में अर्थशास्त्र, वाणिज्य, रसायन एवं वनस्पति विज्ञान में स्नातकोत्तर कक्षाओं के साथ महाविद्यालय का उच्चीकरण हुआ।

सत्र 1978–79 की छात्र संख्या निम्नवत् है—

बी०एस-स०	159
बी०ए०	179
बी०काम०	192
एम०एस-सी०	50
एम०ए०	34
एम०काम०	54

1977 में गढ़वाल वि०वि० की बी० एम-सी० की परीक्षा में इस महाविद्यासय की छात्रा कु० पूनम अग्रवाल ने सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

1978-79 में दो छात्र विश्वविद्यालय की क्रिकेट टीम हेतु चुने गये।

———

गढ़वाल में सहकारिता का विकास हो आर्थिक क्रान्ति लाने में समर्थ हो सकता है

गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह के अवसर पर हम सभी विद्वानों का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं और अपना संकल्प दुहराते हैं

डी. सी. डी. एफ.

कोटद्वार गढ़वाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GARHWAL MANDAL

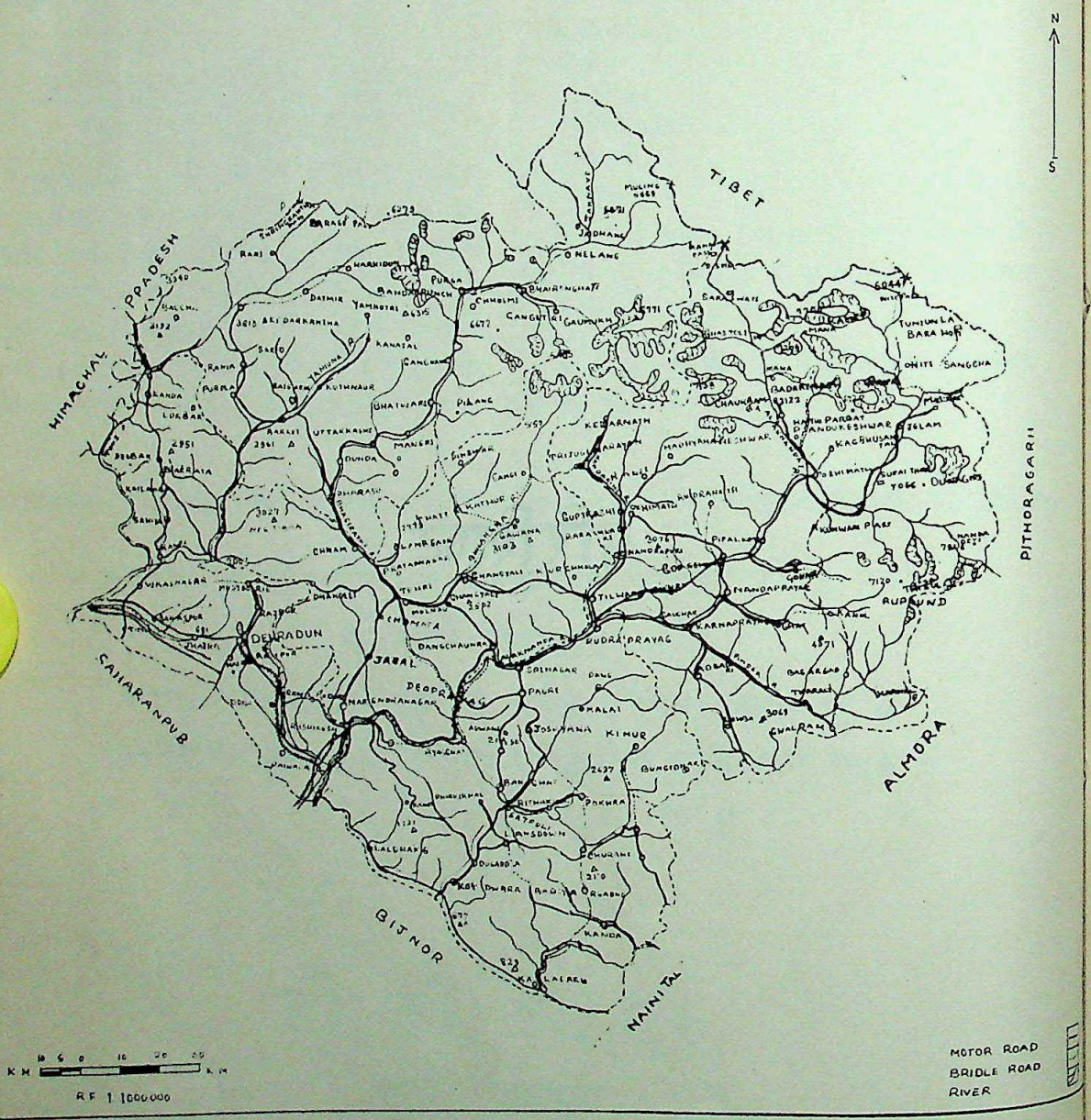

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका-1

गढ़वाल मंडल

क्षेत्रफल एवं जनसंख्या

जनपद	क्षेत्रफल वर्ग कि० मी०	जनसंख्या 1971 जनगणना	पर्वतीय क्षेत्र में जनसंख्या का प्रतिशत	कुल क्षेत्रफल का प्रतिशत	जनसंख्या का घनत्व व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. 1971
1. उत्तरकाशी	8016	147805	3.9	15.7	18
2. चमोली	9125	292571	7.6	17.9	32
3. टिहरी गढ़वाल	4421	397385	10.4	8.6	90
4. गढ़वाल (पौड़ी)	5440	553028	14.5	10.6	102
5. देहरादून	3088	577306	15.1	6.0	187
योग गढ़वाल मंडल	30,090	19,68.095	51.5	58.8	55
योग कुमायू मंडल	21,032	18,53,865	48.5	41.2	88
योग पर्वतीय क्षेत्र	51,122	38,21,960	100.0	100.0	75

*Census of India 1971 Series 21—U.P. Part II-A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका-2

गढ़वाल मंडल

जनसंख्या वृद्धि 1901—1971

वर्ष	कुल जनसंख्या	दशमिक वृद्धि	दशमिक वृद्धि प्रतिशत में
1901	8,75,935	—	—
1911	9,85,173	+ 1,09,238	+ 12.44
1921	10,15,662	+ 30,489	+ 3.2
1931	11,13,509	+ 97,847	+ 9.64
1941	12 65,502	+ 1,51,993	+ 13.64
1951	14,13,677	+ 1,48,175	+ 11.69
1961	16,35,050	+ 2,21,373	+ 15.62
1971	19,68,095	+ 3,33,045	+ 20.36

*Census of India 1971 Series 21—U.P. Part II-A

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका-3

गढ़वाल मंडल

ग्राम एवं नगर

जनपद	आवाद गांवों की संख्या	गैर आवाद गांवों की संख्या	नगरों की संख्या	नगरों की जनसंख्या	ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशत में	नगरीय जनसंख्या प्रतिशत में
1. उत्तरकाशी	672	11	1	6020	95.93	4.07
2. चमोली	1488	161	3	12,206	95.83	4.17
3. टिहरी गढ़वाल	1958	87	4	10,523	97.35	2.65
4. गढ़वाल (पौड़ी)	3236	342	6	34,847	93,70	6.30
5. देहरादून	767	22	9	2,71,777	52.92	47.08
योग	8121	623	23	3,35,373	83.0	17.0

*Census of India 1971 Series 21—U.P. Part II-A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका-4

गढ़वाल मंडल नगरीय जनसंख्या

	नगर	1901	1951	1961	1971
1.	देहरादून	30,995	144216	156341	2,03,464
	(अ) देहरादून एम०बी०	30,995	116404	129764	1,69,827
	(ब) देहरादून कैंट	—	27812	26577	33,637
2.	मसूरी	4741	7133	9849	18,038
3.	ऋषिकेश	2319	7495	10925	17,646
4.	कोटद्वार	1029	4648	8148	11,457
5.	पौड़ी	—	5250	7484	8,878
6.	विकास नगर	—	—	3120	7,066
7.	उत्तरकाशी	—	1205	2677	6,020
8.	टिहरी	—	2856	4508	5,480
9.	नरेन्द्रनगर	—	1288	1632	2390
10.	देवप्रयाग	—	1040	1456	1527
11.	लैंसडाउन	3943	4419	6381	6670
12.	श्रीनगर	2091	2385	3031	5566
13.	दोगड्डा	—	1241	1919	1696
14.	बाह बाजार (देवप्रयाग)	—	—	535	580
15.	चकराता	1250	1283	3194	6105
16.	क्लीमेंट टाउन	—	7720	7793	11890
17.	चमोली-गोपेश्वर	—	—	—	6354
18.	जोशीमठ	—	—	—	5852
19.	रायपुर	—	—	8344	5209
20.	मुनि की रेती	—	523	932	1126
21.	लन्डौर कैन्ट (मसूरी)	1720	1417	1389	2351
22.	बद्रीनाथ	गैर आबाद Snow bound area.			

Source :—Census of India 1971 Series 21—U.P. Part II-A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका-5

गढ़वाल मंडल

बोया गया क्षेत्र तथा सिंचित क्षेत्र

1975-76

जनपद	भौगोलिक क्षेत्रफल (हेक्टर म)	शुद्ध बोया गया क्षेत्र (हेक्टर में)	शुद्ध सिंचित क्षेत्र (हेक्टर में)	शुद्ध सिंचित क्षेत्र का शुद्ध बोये गये क्षेत्र में प्रतिशत
1. उत्तरकाशी	7,81,598	30,011	4369	14.6
2. चमोली	9,12,500	41,311	1646	4.0
3. टिहरी गढ़वाल	4,52,764	73,004	10,194	14.9
4. गढ़वाल (पौड़ी)	6,84,490	90418	8128	9.0
5. देहरादून	2,66,101	55,688	17209	39.9

स्रोत :—कृषि निदेशालय—पर्वतीय क्षेत्र का विकास

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका-6

गढ़वाल मंडल

औसत वार्षिक वर्षा

स्थान	ऊचाई मीटर में	वर्षा से० मी० में
1. देहरादून	682	212
2. कोटद्वार	396	180
3. देवप्रयाग	457	70
4. श्रीनगर	550	93
5. राजपुर	975	298
6. नरेन्द्र नगर	1080	318
7. टिहरी	778	80
8. कर्ण प्रयाग	884	136
9. नन्द प्रयाग	960	113
10. घाट	1360	126
11. जोशीमठ	1875	120
12. मसूरी	2042	259
13. लैंसडाउन	1800	·211

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका-7

गढ़वाल मंडल की संभावित जलशक्ति

(000, किलोवाट में)

नदी का जल क्षेत्र	अनुमानित जल शक्ति
1. यमुना-टोंस जल क्षेत्र	1000
2. भागीरथी जल क्षेत्र	3000
3. अलकनन्दा जल क्षेत्र	6000

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तालिका-8

गढ़वाल मंडल कुछ विशिष्ट आंकड़े

जनपद	तहसील संख्या तथा नाम	विकास खन्ड संख्या	औसत वार्षिकवर्षा से०मी० 1975-76	औसत तापमान वार्षिक न्यूनतम 0°c	औसत तापमान वार्षिक अधिकतम 0°c	साक्षरता 1971 ग्रामीण %	साक्षरता 1971 नगरीय %	प्राइमरी स्कूल संख्या	जूनियर स्कूल संख्या	हायर सेकण्डरी संख्या	प्रारम्भिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	महाविद्यालय संख्या
1. देहरादून	2 चकराता देहरादून	4	215.56	1.3	40.9	27.20	52.35	541	69	51	3	7
2. गढ़वाल (पौड़ी)	2 पौड़ी लैंसडाउन	14	101.57	अप्राप्त	अप्राप्त	32.0	59.8	1791	142	86	3	4
3. टिहरी गढ़वाल	3 देवप्रयाग टिहरी प्रतापनगर	10	187.8	40°फा०	105°फा०	18.00	63.00	642	113	20	2	01
4. उत्तरकाशी	4 भटवाड़ी डुन्डा राजगढ़ी पुरोला	4	169.5	1°c से 4°c	29°c से 40°c	20.3	63.2	333	43	16	2	01
5. चमोली	4. जोशीमठ चमोली ऊखीमठ कर्ण प्रयाग	9	96.1	(—) 15.1°c जोशीमठ	34.2 जोशीमठ	27.5	56.0	593	91	53	2	2

स्रोत :—सांख्यिकीय पत्रिका जनपद—देहरादून, गढ़वाल, टिहरीगढ़वाल, उत्तरकाशी तथा चमोली 1977

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका—9

गढ़वाल मण्डल प्रमुख नामांकित पर्वत शिखरों की ऊंचाई मीटर में

शेष अनामाँकित शिखर—65

	पर्वत शिखर	ऊंचाई मीटर में		पर्वत शिखर	ऊंचाई मीटर में
1.	नन्दा देवी	7817	27.	सतोपन्थ	7075
2.	कामेट	7756	28.	सुमेरू पर्वत	6350
3.	नन्दा देवी पूर्व	7434	29.	कीर्ति स्तम्भ	6285
4.	माना पर्वत	7273	30.	केदार नाथ	6940
5.	त्रिसूल	7120	31.	भृगु पन्थ पर्वत	6772
6.	दूनागिरि	7066	32.	सुदर्शन पर्वत	6507
7.	दूनागिरि पूर्वी	6489	33.	वासुकी पर्वत	6792
8.	कालंका चोटी	6931	34.	भागीरथीं पर्वत	6556
9.	नन्दा घुन्टी	6309	35.	चौखम्बा (बद्रीनाथ) I	7138
10.	रौन्थी	6063	36.	,, II	7068
11.	नन्दाकोट	6861	37.	,, III	6974
12.	चाँग बांग	6864	38.	,, IV	6853
13.	ऋषिकोट	6200	39.	भागीरथी पर्वत I	6856
14.	हनुमान पर्वत	6070	40	,, II	6454
15.	देव स्थान I	6490	41.	,, III	6512
16.	देव स्थान II	6465	42.	बन्दर पुंछ	6315
17.	हाथी पर्वत	6727	43.	श्री कंठ	6133
18.	गौरी पर्वत	6590	44.	बालकुन पर्वत	6108
19.	नीलकंठ	6596	45.	ज्यौंली	6632
20.	द्रुप्ता	6482	46.	जोगिन समूह I	6465
21.	भारत खण्ड	6578	47	,, II	6116
62.	खरचा खन्ड	6632	48.	,, III	6343
23.	गंगोत्री समूह I	6672	49.	नर पर्वत	5831
24.	गंगोत्री समूह II	6590	50.	नारायण पर्वत	5965
25.	गंगोत्री समूह III	6571	51.	शिवलिंग	6543
26.	चन्द्रा पर्वत	6728			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तालिका—10

गढ़वाल मंडल में साक्षरता

जनसंख्या	1971 जनसंख्या (000 व्यक्ति)			1971 साक्षर जनसंख्या (000 में)			प्रतिशत...	प्रतिशत...	1971	1961	
	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	साक्षर पुरुष सं० का कुल पुरुष सं० से	साक्षर स्त्री सं० का कुल स्त्रीं सं० से	साक्षर जनसंख्या का %	साक्षर जनसंख्या का %	साक्षरता वृद्धि कीं दर 1961 के ऊपर
1. उत्तर काशी	79	71	150	30	3	33	37.39	4.89	22.03	15.6	41.2
2. चमोली	143	154	297	70	14	84	48.64	9.00	28.13	21.3	32.1
3. टिहरी गढ़वाल	181	217	399	67	9	76	36.69	4.34	19.05	16.0	19.1
4. गढ़वाल (पौड़ी)	248	292	540	124	46	170	50 02	15 84	31.53	20.9	50.9
5. देहरादून	330	253	583	177	86	262	53.64	33.85	45.06	38.6	16.7

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका—11

नगरीकरण एवं श्रमिक जनसंख्या 1971

जनपद	कुल जनसंख्या 1971	ग्रामीण	नगरीय	नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत	कुल काम करने वाले (000 व्यक्ति में) काश्तकार	खेतिहर मजदूर	अन्य सेवाएं एवं कार्य	कुल कर्मकर जनसंख्या	कुल कर्मकर जनसंख्या का %
1. उत्तरकाशी	150	144	6	4.07	81	1	13	95	63.60
2. चमोली	297	285	12	4.17	150	1	22	172	57.85
3. टिहरी गढ़वाल	399	388	11	2.65	188	1	17	206	51.62
4. गढ़वाल (पौड़ी)	540	505	35	6.30	198	4	42	244	45.15
5. देहरादून	583	315	268	47.08	58	16	131	205	35.25

*Statistical Hand book of Himalayan Region—Population & Plans Vol.—I May 1972 Himalaya Seva Sangh, Rajghat, New Delhi.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गढ़वाल मंडल में खनिज प्राप्ति के प्रमुख स्थान तालिका सं० 12

क्रम सं०	खनिज का नाम	टिहरी	उत्तरकाशी	पौड़ी गढ़वाल	चमोली	देहरादून
1.	ताँबा	कपरोली-डागर असोनी पेटी, लोवा गाँव	बगोरी (टिहरी की पेटी का प्रसार भटवारी	क्वीत, डोबरी	—	—
2.	लोहा	—	—	भरनाऊँ	लोहबा	—
3,	जिप्सम	महीपुर-चिल पाल्दी घाटी, धौल सोत तथा आम सोत क्षेत्र	—	लक्ष्मण, झूला का निकटतम क्षेत्र	—	बल्दी नदी घाटी
4.	आणविक खनिज	—	—	—	लोखरी, पोखरी धनपुर क्षेत्र	—
5.	डौलोमाइट	चिल पाल्दी घाटी, सौंग घाटी, शिवपुरी क्षेत्र	—	—	—	बल्दी तथा विंदाल नदी घाटियाँ, घोरन पहाड़ियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम सं०	खनिज का नाम	टिहरी	उत्तरकाशी	पौड़ी गढ़वाल	चमोली	देहरादून
6.	लाइमस्टोन	डुब्रा तथा घुड़साल गाँव क्षेत्र	—	—	—	मंडारसू तथा काँड़ी क्षेत्र, बिनोग, क्लाउड एन्ड, हाथी पाँव, भट्टा, सहस-धारा क्षेत्र
7.	मैग्नेसाइट	—	—	—	तोरोती, ह्वीना, पिंडर तथा कैल गंगा घाटियाँ, मन्दाकिनी घाटी में कन्धारा-जलाई पेटी	—
8.	शीशा	—	पिन्डकी	—	धनपुर के पास ग्वाड़	—
9.	बेराइटस	—	—	—	—	माल देवता के दक्षिण पूर्व से ऋषिकेष तक
10.	मार्बल	—	—	—	—	बिनोग, क्लाउड एन्ड, हाथी पाँव, भट्टा तथा सहसधारा क्षेत्र
11.	फासफोराइट	—	—	—	—	मालदेवता, मसराना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका-13

गढ़वाल विश्वविद्यालय के अधिकारियों की सूची

तालिका 13 अ—1. विश्वविद्यालय के सभी कुलपतियों के नाम एवं कार्यकाल

1.	श्री बी०डी० भट्ट	1 दिसम्बर 1974 से 30 नवम्बर, 1977 तक
2.	श्रीमती सुशीला डोभाल	1-12-77 से 30-11-78 तक
3.	श्री उमाचरण घिल्ड्याल	1-12-77 से अब तक

तालिका 13 ब—2. विश्वविद्यालय के सभी कुलसचिवों के नाम एवं कार्यकाल

1.	मेजर एस०पी० वर्मा	14 अप्रैल 74 से जून 76 तक
2.	श्री चन्द्र भान	14 जुलाई 76 से 14 अक्टूबर 77 तक
3.	श्री आर०पी० अम्बष्ट	15 अक्तूबर 1977 से 24 अक्तूबर 1977 तक
4.	श्री राम सूरत	25 अक्तूबर 1977 से 30 नवम्बर 1977 तक
5.	श्री आर०पी० अम्बट	3 दिसम्बर 1978 से 1 अप्रैल 1979 तक
6.	श्री पी०एल० छावड़ा	2 अप्रैल 1979 से अब तक

तालिका 13 स—3. विश्वविद्यालय के अन्य सभी अधिकारियों की सूची

1.	श्री एम०पी० नम्बूरी	वित्त अधिकारी
2.	श्री आर०पी० अम्बष्ट	उप कुलसचिव
3.	श्री बी०डी० शर्मा	सहायक कुलसचिव
4.	श्री आर०के० कपूर	सहायक कुलसचिव
5.	श्री त्रिलोचन सिंह	सहायक कुलसचिव

तालिका 13 द—4. विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता (डीन)

1.	डा० ठाकुर गुरु प्रसाद	कला
2.	डा० आइ० पी० वार्ष्णेय	विज्ञान
3.	डा० एन० एस० कपरवान	शिक्षा
4.	श्री आर० पी० डोभाल	विधि
5.	डा० एस० सी० सक्सेना	वाणिज्य

तालिका 13 य—5. विश्वविद्यालय के प्रोफेसर

1,	डा० ठाकुर गुरू प्रसाद	अंग्रेजी
2.	डा० आइ० पी० वार्ष्णेय	रसायन
3.	डा० जी० एस० मालवीय	वनस्पति
4.	डा० जी० एन० चट्टोराज	जन्तुविज्ञान

तालिका 13 फ—6. विश्वविद्यालय के रीडर

1.	डा० के० पी० नौटियाल	इतिहास एवं। पुरातत्व
2.	ब० वी० एस० राजपूत	भौतिकी
3.	डा० हरिराज सिंह	जन्तु विज्ञान
4.	डा० एन० के० शर्मा	हिन्दी
5.	डा० सी० पी० बड़थ्वाल	राजनीति
6.	डा० एन० एस० कपरवान	शिक्षा
7.	डा० टी० बी सिंह	हिमालयन इन्स्टीट्यूट
8.	डा० ए० एन० पुरोहित	वनस्पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका—14

महाविद्यालयों की प्राचार्य-सूचि

महाविद्यालय का नाम	प्रधानाचार्य का नाम	कार्यकाल
1. बिड़ला संघटक महाविद्यालय श्रीनगर	1. डा० एम० एम० बोकाड़िया	जुलाई 61 से 5-6-62
	2. डा० एस० पी० मित्तल	6-6-63 से 18-8-67
	3. डा० बदरी नारायण श्रीवास्तव	19-8-67 से 3-9-71
	4. डा० ब्रजवासी लाल	25-9-71 से 30-6-73
	5. डा० पुत्तूलाल शुक्ल	17-7-73 से 4-2-74
	6. डा० घनश्यामदास श्रीवास्तव	5-2-74 से 30-6-73
	वर्तमान में प्रधानाचार्य का पद समाप्त कर दिया गया है।	
2. बी० गो० रेड्डी संघटक महाविद्यालय पौड़ी	1. डा० बदरीनारायण श्रीवास्तव	सूचना अप्राप्य
	2. प्रो० बी० के० अग्रवाल —	,,
	3. प्रो० शंकर बहादुर श्रीवास्तव —	,,
	4. रिक्त —	,,
3. स्वामी रामतीर्थ संघटक महा० टिहरी	1. डा० कपिल देव उपाध्याय —	सूचना अप्राप्य
	2. प्रो० विजय शंकर शुक्ल —	,,
	3. प्रो० ज्योति स्वरूप गुप्ता —	,,
	4. रिक्त —	,,
4. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर	1. डा० काशी प्रसाद वर्मा	1966 से 28 दिसम्बर 1972
	2. प्रो० श्याम बहादुर कुदासी	29 दिसम्बर 72 से 19 फरवरी 9173
	3. श्री ज्योति स्वरूप गुप्ता	20 फरवरी 1973 से जुलाई 74
	4. प्रो० श्याम बहादुर कुदासी	अगस्त 1974 से 25 सितम्बर 1975
	5. डा० के०एन० जोशी	27 सितम्बर 75 से 12 अगस्त 1977
	6. डा० कपिल देव द्विवेदी	13 अगस्त 1977 से 30 जून 1978
	7. प्रो० सुरेश चन्द्र शर्मा	1 जुलाई 1978 से 14-12-78
	8. डा० रमेश चन्द्र नैथानी	15-12-78 से अब तक
5. श्री अ० प्र० बहुगुणा राजकीय महाविद्यालय अगस्त्यमुनि (चमोली)	1. प्रो० हरीशचन्द्र वर्मा	23 अक्तूबर 74 से 4 सितम्बर 1975
	2. प्रो० निरंकार स्वरूप श्रीवास्तव	17 सितम्बर 75 से 8 दिसम्बर 76
	3. प्रो० राजकुमार कोहली	11 दिसम्बर 76 से 28 जनवरी 78
	4. डा० अभय चन्द्र भट्टाचार्य	8 मार्च 78 से 31 दिसम्बर 78
	5. डा० रामशिरोमणि होरिल	1-1-79 से अद्यावधि
6. पं० ल०मो०श० राजकीय स्नातकोत्तर महा०, ऋषिकेश (देहरादून)	1. प्रो० हरीशचन्द्र वर्मा	जुलाई 1973 से अक्तूबर 1974
	2. डा० रमेश चन्द्र नैथानी	अक्तूबर 1974 से सितम्बर 1977
	3. डा० असित कुमार सिन्हा	सितम्बर 1977 से अद्यावधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7. श्री गुरु रामराय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून	1. प्रो० ओम नारायण तनखा	अक्तूबर 1960 से 30 जून 61
	2. प्रो० राय परमात्मा प्रसाद माथुर	जुलाई 1961 से जून 69
	3. डा० के०एस० सिन्हा	20 जनवरी 1973 से 19 जनवरी 74
	4. डा० आर०सी० गुप्ता	24 जनवरी 1975 से 31 मार्च 75
	5. डा० सुरेन्द्र शर्मा	5 नवम्बर 1976 से वर्तमान तक
8. दयानन्द ब्रजेन्द्र स्वरूप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून	1. डा० माताबक्स श्रीवास्तव	1961 से 30 जून 1973
	2. डा० टी० सिंह	1 जुलाई 1973 से 30 जून 1977
	3. डा० आर०एम० सिंह	1 जुलाई 1977 से अद्यावधि
9. महादेवी कन्या पाठशाला, देहरादून	1. श्रीमती सुशीला डोभाल	1958 से 30 नवम्बर 1977
	2. डा० (श्रीमती) शशि प्रभा शास्त्री	दिसम्बर 1977 से 30-11-78
	3. श्रीमती सुशीला डोभाल	दिसम्बर 1978 से अद्यावधि
10 दयानन्द महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, देहरादून	1. श्रीमती शारदारानी त्रिवेदी	10-7-1961 से 30-9-75
	2. कु० विमला वर्मा	1-10-75 से अद्यावधि
11. म्युनिसपल पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, मसूरी	1. डा० नित्यानन्द शर्मा	8 अगस्क 1963 से अक्तूबर 66
	2. प्रो० सत्य प्रसाद थपलियाल	अक्तूबर 1963 से जून 1973
	3. प्रो० प्रकाश नारायण मिश्र	जुलाई 1973 से अगस्त 1974
	4. डा० चण्डी प्रसाद जोशी	अगस्त 1974 से अबतक
12. राजकीय महाविद्याल जयहरीखाल (लैंसडाउन)	1. डा० हरिशंकर श्रीवास्तव	जुलाई 1972 से जून 1977 तक
	2. डा० रमेश चन्द्र नैथानी	सितम्बर 1977 से दिसम्बर 1978 तक
	3. डा० दिवाकरनाथ अग्रवाल	जनवरी 1978 से अधावधि
13. राजकीय महाविद्यालय कोटद्वार (गढ़वाल)	1. प्रो० हरिशचन्द्र वर्मा	15-7-71 से 5-8-72
	2. प्रो० उदयपालसिंह छोंकर	5-8-72 से 7-10-72
	3. प्रो० अनुग्रह शंकर द्विवेदी	10-10-72 से 23-12-72
	4. प्रो० निरंकार स्वरूप श्रीवास्तव	13-12-72 से 21-7-83
	5. डा० रमेश चन्द्र नैथानी	21-7-73 से 16-10-74
	6. प्रो० बुद्धि प्रकाश चतुर्वेदी	26-11-74 से 30-6-77
	7. प्रो० शंकर बहादुर श्रीवास्तव	6-8-77 से अब तक
4. डी० ए० वी स्नात. महा देहरादून वर्तमान प्रधानाचार्य	डा० एन० एस० वर्मा	पूर्व सूचना अप्राप्य
5. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय उत्तरकाशी	1. डा० आर० एन० एस० चौहान	सूचना अप्राप्य
	2. ड० भूपनारायण श्रीवास्तव	
	3. डा० आर० एन० एस चौहान	
	4. वर्तमान में पदरिक्त है	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Printed at : Capital Press, 8, Naiwala, Karol Bagh, New Delhi-110005. Phone : 561000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar